फरीदाबाद

मजदूर समाचार

पुस्तिका तीन

जुलाई 2020

जनवरी 2017 से दिसम्बर 2017

सम्भव है
कुछ प्रस्थान बिन्दु मिलें।

सहयोग : पाँच–दस–बीस रुपये।

जनवरी 2017

दम वाले दम के प्रसार से शुरू करें

हम 300 जने हैं। आप हमारे लिये क्या कर सकते हो ? आप मजदूरों की क्या सहायता करते हो?

300 क्या एक फैक्ट्री से हो ?

हाँ। और कुछ हम में से आपसे आ कर मिलेंगे। पहले यह बताओ आप हमारे लिये क्या कर सकते हो ?

आप तीन सौ साथी मिल कर यह हम से क्यों पूछ रहे हैं कि हम आपके लिये क्या कर सकते हैं ? तीन सौ लोग आपस में बातचीत में हैं। तो फिर, अपने बीच में कुछ कमी पाते हैं क्या?

कमी ? कमी की बात कहाँ से आई ? हम आपस में तरह -तरह से मैनेजमेन्ट को टैन्शन में रखते हैं। हा-हा ! मैनेजमेन्ट हमें थकाने में लगी रहती है और हम उनको टैन्शन में रखते हैं।

यह तो बहुत थोड़े शब्दों में आपने थकान और टैन्शन के टकराव की सुन्दर फोटो खींची है।

इसलिये हम ने सोचा है कि आपसे पूछें कि आप हमारी क्या मदद कर सकते हैं ?

आप कह रहे हो कि किसी कमी की पूर्ति के लिये नहीं आ रहे हो। और आप कार्यस्थल की सटीक तस्वीर भी खींच रहे हो। तो, मदद किस चीज की?

मतलब ? मजदूरों की कोई सहायता ही नहीं करे?!

सहायता की बात तो तब आती है न जब अपने से नहीं कर पा रहे हों। मैं पूछ रहा हूँ कि आप क्या नहीं कर पा रहे हो ?

हा–हा ! अब आप हमें गुस्सा दिला रहे हो ।यह सोचिये कि हम तीन सौ लोगों की खुशी की बात कर रहे हैं। इन 300 के साथ जुड़े हुये परिवारों और दोस्तों की खुशी की बात कर रहे हैं।

आप कुछ अटपटी बातें कर रहे हो पर यह खुशी का सवाल तो है इन्टैरैस्टिंग। खुशी को अगर मापदण्ड के तौर पर लाया जाये तो बहुत सारी चीजें अजीब और बेढँगी लगेंगी। वर्तमान को भविष्य के लिये दाँव पर लगाने की प्रवृति पर सवाल आयेंगे। खुशी के साथ-साथ और कौन से कारणों के लिये आप सहायता डिमाण्ड कर रहे हैं?

कारण ? डर होता है निकाले जाने का। फिर होता है बाउन्सरों की गुण्डागर्दी का। फिर होता है पुलिस द्वारा परेशान करने का। मदद करने वाला हमें इन सब से राहत दिलाये। उसकी जान-पहचान हो प्रशासन में। उसमें दम हो सरकार से प्रशासन पर दबाव डलवाने का।

और फिर तारीख पर तारीख। आश्वासन पर आश्वासन। थकावट पर थकावट। मदद करने वालों के पास जाने पर कोई और परिणाम निकलता क्या सुना है आपने ?

सुनने में तो नहीं आया है। लेकिन हमारे लिये शायद बात अलग रहे। हम तीन सौ का दम अलग है।

इस दम से किसी और को क्यों मजबूत कर रहे हो? इसी दम से शुरू करो और खुशी से हजारों में फैला दो।

कैसे फैलायें ? टाइम कम होता है। थकावट रहती है। लोग सुनते नहीं हैं। लोग आते नहीं हैं।

इस जटिलता को हम कमी से नहीं शुरू करें। बल्कि, शुरुआती जो आपका ''हम तीन सौ हैं'' के दम और गर्व से आरम्भ करें तो तीन-सात-पन्द्रह हजार के बीच इस दम का प्रसार होगा।

यह हम भी मानते हैं और जानते भी हैं क्योंकि हम तीन सौ बने ही ऐसे हैं। और हम तीन सौ के साथ बहुत लोग जुड़े हुये हैं। इसकी तस्वीर नहीं मिलती और शब्द नहीं मिलते। फैक्ट्री के अन्दर पहचान है। फैक्ट्री के बाहर सम्बन्ध हैं। आप हमें यहाँ मदद कर सकते हो?

यह सवाल मदद की भाषा (कोई कर देगा, कोई करवा देगा) और तरीकों (बोल देंगे, बात कर ली है, मिल लिये हैं) के बाहर है। यह दम और दम के प्रसार की बात है।

बात तो एक तरीके से ठीक ही कह रहे हो। इसमें सुन्दरता है कि दम वाले दम के प्रसार से शुरू करें।

प्रश्न–उत्तर

★ मैं कौन हूँ ?

मैं सात अरब का एक अंश हूँ।

★ मेरे पूर्वज कौन हैं ?

सात अरब के पूर्वज मेरे पूर्वज हैं।

★ मेरे वारिस कौन होंगे ?

आशावान हूँ कि सात अरब के वारिस मेरे वारिस होंगे।

★ क्या यह सात अरब सब एक जैसे हैं ?

नहीं। सात अरब में कई सामाजिक समूह हैं जैसे किसान, दस्तकार, दुकानदार, मैनेजमेन्ट, मजदूर।

★ तो फिर, मजदूरों पर ही ध्यान केन्द्रित क्यों ?

इन दो सौ वर्षों में मजदूरों का ही वह सामाजिक समूह है जो एक छोटे-से क्षेत्र में उत्पन्न हो कर पूरी पृथ्वी पर उपस्थित हो गया है। जबकि, किसानी-दस्तकारी की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या तीव्र से तीव्रतर हुई है।

★ क्या ज्यादा सँख्या में हैं इसलिये मजदूर महत्वपूर्ण हैं?

नहीं। विश्व में ज्यादा सँख्या में तो मजदूर इन पच्चीस-तीस वर्ष में हुये हैं। उत्पादन में मजदूरों द्वारा दस्तकारों की जगह लेना आरम्भ होने के समय से ही मजदूरों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पैदा हो गई थी। दो सौ वर्ष से संसार में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया की धुरी बना है।

★ तो फिर, मजदूरों पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण क्या हैं?

मजदूरों में दो महत्वपूर्ण बातें संग-संग रहती हैं। एक है मजदूरों का बेचारे, असहाय, दमन, शोषण के शिकार होना। दूसरी है मजदूरों का होना ही उन्हें हर प्रकार की उँच-नीच, भेदभाव, दमन, शोषण से जूझने में ले जाता है। मजदूरों का बेचारगी वाला पहलू भलेमाणसों की दया भावना को उभारता है और काइयाँ लोगों को आसान शिकार की तरह आकर्षित करता है। जबकि, मजदूरों का होना ही उन्हें जो है उसका विरोध करने के संग-संग नये सम्बन्धों को बनाने, नित नई रचनाओं के प्रयासों में लगाता है। सार है : कोई मजदूर हो ही क्यों ? और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन के स्थान पर क्या ? विशेषकर फैक्ट्री मजदूर सामूहिक तौर पर समाधान की प्रक्रिया में रहते हैं।

★ आज स्थितियाँ कैसी हैं ?

मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन की सामान्य प्रक्रिया ही पृथ्वी पर जीवन को दाँव पर लगा रही है। और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन विश्वव्यापी बनने के संग अधिकाधिक नाकारा हो गया है तथा अधिकाधिक लड़खड़ा रहा है। मजदूर, वैश्विक मजदूर, ग्लोबल वेज वरकर कब्र खोद चुके हैं और दफनाने की प्रक्रिया में होने के संग-संग नई रचना की भूमिका में हैं।

बांग्लादेश में मजदूर गतिविधियाँ

दिसम्बर 2016 में मजदूरों के खिलाफ युद्ध के दौरान के कानून बांग्लादेश सरकार ने लागू किये। राजधानी ढाका के आशूलिया औद्योगिक क्षेत्र में 12 दिसम्बर को विन्डी एपरेल्स फैक्ट्री के वरकर फैक्ट्री गये ही नहीं। गारमेन्ट फैक्ट्रियों के पीक सीजन में, महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम के समय में मजदूरों की अनुपस्थिति से बौखलाई मैनेजमेन्ट ने 121 वरकरों को नौकरी से निकाला। और, इन्डस्ट्रीयल एरिया की कई फैक्ट्रियों के दसियों हजार मजदूर फैक्ट्रियों में काम करने नहीं पहुँचे। डरी-घबराई अस्सी गारमेन्ट कम्पनियों की मैनेजमेन्टों ने 20 दिसम्बर को फैक्ट्रियों पर ताले लगा दिये। दो लाख मजदूर सड़कों पर। उत्पादन के संग-संग सड़कें भी थम गई। युद्ध की स्थिति। मजदूरों और मैनेजमेन्टों के बीच युद्ध में बांग्लादेश सरकार ने मजदूरों के खिलाफ युद्ध के दौरान के कानून लागू किये। आशूलिया औद्योगिक क्षेत्र में पुलिस के संग सेना। पुलिस अधिकारी के अनुसार 27 दिसम्बर से फैक्ट्रियों में उत्पादन पुनः आरम्भ हो गया।

गारमेन्ट कम्पनियों की एसोसियेशन , यूनियनें , बांग्लादेश सरकार, वालमार्ट-गैप-ज़ारा-एच एण्ड एम जैसे बायर, विश्लेषक , अर्थशास्त्री , विद्वान बहुत चिन्तित हैं।

मजदूरों के बारे में गारमेन्ट कम्पनियों की एसोसियेशन का प्रेजीडेन्ट, ''यूनियनों के जरिये ओनर्स एसोसियेशन अथवा

सरकार को प्रस्ताव प्रस्तुत करने की बजाय वे काम से अनुपस्थित क्यों हुये ?''

मजदूरों की इन गतिविधियों को किन्हीं यूनियनों ने आयोजित नहीं किया था । बल्कि, यूनियनों की शिकायत है कि माँगों को स्पष्ट किये बगैर काम से अनुपस्थित होता गलत है । मजदूरों को नाथने के लिये इधर गारमेन्ट यूनियनों ने वेतन में तीन गुणा वृद्धि का माँग-पत्र सरकार और कम्पनियों की एसोसियेशन को दिया है ।

बांग्लादेश सरकार में श्रम मन्त्री ने कहा है कि सरकार को मजदूरों की उत्तेजना के कारणों की जानकारी नहीं है । वरकरों ने अधिकारियों के सम्मुख कोई माँगें नहीं रखी । ऐसे में समझ में नहीं आ रहा कि समाधान कैसे किया जाये । यह सब शुरू कैसे हुआ और फैला कैसे इसके बारे में मालुम नहीं है । खुफिया पुलिस को इसका पता करने में लगाया है ।

सिलेसिलाये वस्त्रों का उत्पादन बांग्लादेश में बहुत तीव्रता से बढ रहा है । गारमेन्ट प्रोडक्शन में विश्व में चीन के बाद बांग्लादेश आज दूसरे स्थान पर आ गया है । चालीस लाख वरकर गारमेन्ट फैक्ट्रियों में कार्यरत हैं और इनमें तीन चौथाई महिला मजदूर हैं ।

इस सन्दर्भ में मार्च 2014 के मजदूर समाचार में : *''बांग्लादेश की गारमेन्ट फैक्ट्रियों में मजदूरों द्वारा अचानक कई फैक्ट्रियों में एक साथ काम बन्द करना नियमित-सा बन गया है । काफी बड़े पैमाने पर मजदूरों के बीच तालमेल रहते हैं और कई दिन तक कई फैक्ट्रियों में उत्पादन बन्द रहता है । कोई नेता नहीं होता । कोई यूनियन नहीं होती । समझौता वार्ताओं के लिये सामने कोई नहीं होता । किससे बात करें ? ..... मजदूरों को नाथने के लिये अमरीका सरकार की संसद ने सलाह दी : यूनियनें स्थापित करो । अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ) ने सुझाव दिया : यूनियनों को प्रोत्साहित करो । बांग्लादेश सरकार ने कहा : यूनियनें बनाओ । विश्व की बड़ी यूनियनों ने बांग्लादेश में यूनियनों से हाथ मिलाया है । गारमेन्ट मजदूरों के बीच 2012 में दो यूनियन रजिस्टर्ड थी जबकि अब* [2014–आरम्भ में] *61 यूनियनें पंजीकृत हैं । .....''* और, दिसम्बर 2016 में मजदूर छुट्टे हैं । कम्पनियों-यूनियनों-बायरों-सरकारों के लिये मजदूर अबूझ पहेली हैं ।

मजदूरों ने किन्हीं माँगों पर सहमति नहीं बनाई थी । कोई प्लान नहीं था । वरकरों ने कोई मीटिंगें नहीं की थी । अलग-अलग फैक्ट्रियों में कार्यरत मजदूर भारी सँख्या में एकत्र हुये थे । वरकरों के इन कदमों के पीछे कोई पूर्व-स्थापित एकता नहीं थी । यह मजदूरों का होना था, the workers' very being, जो इन गतिविधियों को आधार है । वरकरों के बीच अनेकानेक प्रकार के जोड़ों की भूमिका सहायक वाली । और यह बांग्लादेश की विशेषता नहीं है । दुनिया-भर में वरकरों, वैश्विक मजदूरों, ग्लोबल वेज वरकरों की ऐसी गतिविधियों ने आज को अत्यन्त जीवन्त बना दिया है ।

सामूहिक कदम

डिगानिया मेडिकल (251 व 275 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में दिसम्बर-आरम्भ में एक टेम्परेरी वरकर बीमारी से उठ कर ए-शिफ्ट में ड्युटी के लिये गया तब उसे गेट पर रोक दिया । ए-शिफ्ट में कार्यरत टेम्परेरी वरकरों ने काम बन्द कर दिया । पाँच मिनट में ही एच आर वाले पहुँच गये । काम बन्द हुये 15 मिनट हुये थे कि रोके वरकर को ड्युटी पर ले लिया और आगे से ऐसा नहीं करने का आश्वासन दिया, छुट्टी पास किया करेंगे । चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600 वरकर और 400 परमानेन्ट मजदूर काम करते हैं । परमानेन्ट वरकरों की दो यूनियन हैं जो आपस में भिड़ती रहती हैं और परमानेन्ट लोग टेम्परेरी वरकरों से कोई मतलब नहीं रखते । दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की । टेम्परेरी वरकरों को कहने को ओवर टाइम डबल रेट से है पर 5887 रुपये तनखा पर, 58 रुपये 60 पैसे प्रति घण्टा । टेम्परेरी की बेसिक तनखा 5887 रुपये पर ई एस आई तथा पी एफ 8071 पर काटते हैं । पे-स्लिप में एच आर ए , वाशिंग अलाउन्स आदि जोड़ कर 8071 रुपये बनाते हैं । और, टेम्परेरी की पे-स्लिप में ओवर टाइम के 10-12 घण्टे ही दिखाते हैं । परमानेन्ट मजदूरों की तनखा भी ज्यादा नहीं है, 10-12-14,000 रुपये और बेसिक 7600 जिस पर ओवर टाइम देते हैं । टेम्परेरी वरकरों को बोनस नहीं देते ।

जे एल ऑटोपार्ट्स (14 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में 7 जनवरी को सुबह मजदूर गेट पर एकत्र हुये । आठ बजे शिफ्ट आरम्भ होती है और वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये । तीन जिप्सी में पुलिस आई । मजदूरों ने बताया कि हरियाणा सरकार द्वारा अकुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन, 8070 रुपये की बजाय कम्पनी 5100 रुपये तनखा देती है । पुलिस फैक्ट्री के अन्दर गई । डेढ घण्टे बाद बाहर आ कर पुलिस वाले बोले कि मैनेजमेन्ट कह रही है कि तनखा नहीं बढायेंगे, काम करना है तो अन्दर जाओ, नहीं तो यहाँ से जाओ, फैक्ट्री गेट पर भीड़ मत करो । फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा और यामाहा दुपहियों के हिस्से-पुर्जे 500 मजदूर बनाते थे, दिसम्बर-आरम्भ से सुबह 8 से रात 8½ की एक शिफ्ट में काम होता है ।

ग्रोवरसन्स एपरेल्स (135 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर

स्थित) फैक्ट्री में 21 दिसम्बर को सुबह 9 बजे शिफ्ट आरम्भ हुई तब 400 मजदूरों ने काम शुरू नहीं किया। तनखा के लिये वरकरों से सवाल-जवाब में जनरल मैनेजर ने हाथ जोड़ लिये। काम बहुत है पर वरकर बैठे रहे और 4 बजे कम्पनी ने छुट्टी कर दी। फिर 22 दिसम्बर को भी 9 बजे हाजिरी लगने के बाद काम शुरू नहीं किया। ऊपर की मंजिल पर महिला वरकरों से जनरल मैनेजर की बहस पर सब मजदूर नीचे आ गये, नीचे वाले उनके साथ हो गये। गेट पर ताला लगा कर मजदूरों को रोका। भर्ती करने वाली मैडम बोली : ''पैसे आयेंगे तो सब को देंगे। बैंक खाते खुलने पर देंगे। कम्पनी की इनसल्ट मत करो, हँगामा मत करो। हम काम करने को नहीं कह रहे। अपनी-अपनी जगह जा कर बैठो।'' करीब 12 बजे कम्पनी की मैडम आई और ऊपर तथा नीचे वरकरों से अलग-अलग मिली। जनरल मैनेजर : ''पैसे हैं ही नहीं, दें कहाँ से?'' मजदूर : ''आपके पास तीन-चार कम्पनी हैं। कुछ तो ले कर आती।'' मैडम : ''बैंक से पैसे नहीं निकल रहे। एक जनवरी से पूरा करेंगे। कल कुछ के खातों में पैसे भेजेंगे।'' फिर चार बजे मैनेजमेन्ट ने छुट्टी की। टेलरों ने 23 को काम शुरू कर दिया पर अन्य मजदूरों ने 23 और 24 को काम नहीं किया, फैक्ट्री में बैठे रहे। मैनेजमेन्ट ने दोनों दिन 6½ बजे छुट्टी की और 24 दिसम्बर को बोली कि जिनके खाते खुल गये हैं उनमें सोमवार से पैसे भेजेंगे। सोमवार, 26 दिसम्बर को काम आरम्भ। कह रहे हैं कि ठेकेदार हटा दिये हैं, सब बन्दे कम्पनी की तरफ से कर दिये हैं, ग्रेड देंगे, जनवरी से सब पर ई एस आई तथा पी एफ लागू होंगे।

सामान्य है यह

क्यू एच टालब्रोस (51 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित) फैक्ट्री में 150 डिप्लोमा ट्रेनी इंजीनियर को एक साल के लिये फिक्स तनखा पर रखते हैं , नवम्बर 2016 तक 8400 रुपये थी और दिसम्बर से 9000 है। डिप्लोमा वालों की ई एस आई तथा पी एफ नहीं हैं और यह मशीनें चलाते हैं – एक्सीडेन्ट होने पर निकाल देते हैं। ऐसे ही 20-25 बी टेक ट्रेनी 10,000 रुपये में हैं। दोनों के 300 रुपये भोजन ,चाय, कपड़ा, साबुन के हर महीने काटते हैं। फैक्ट्री में आई टी आई को नहीं रखते। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600 वरकरों को हैल्पर ग्रेड और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। ओवर टाइम 30-32 रुपये प्रति घण्टा और 3½ घण्टे का प्रतिदिन। घर से लौटते हैं तब टेम्परेरी वरकरों के ई एस आई तथा पी एफ नम्बर बदल देते हैं – फण्ड के पैसे मिल जाते हैं।

हरसोरिया हैल्थकेयर (110-111 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित) फैक्ट्री में 250 परमानेन्ट मजदूर और चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1000 वरकर 11-11 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सब को दुगुनी दर से परन्तु परमानेन्ट को दी जाती पे-स्लिप में ओवर टाइम दिखाते नहीं हैं। तनखा हर महीने देरी से, नवम्बर के पैसे टेम्परेरी वरकरों को 25 दिसम्बर को अवैध घोषित किये जा चुके नोटों में दिये गये और संग-संग 1000-2000 रुपये एडवान्स भी दिये। परमानेन्ट की तनखा बैंक खातों में जाती है पर मैनेजमेन्ट 25 दिसम्बर को बोली कि अवैध घोषित नोटों में नवम्बर की तनखा ले लो और साथ ही एक-दो महीने की तनखा एडवान्स भी ले लो। सब परमानेन्ट वरकरों ने मना कर दिया हालाँकि यह 250 दो यूनियनों में बँटे हैं। टेम्परेरी वरकरों को कम्पनी तनखा के साथ ओवर टाइम के पैसे देती है क्योंकि उन पर भरोसा नहीं है, छोड़ जायेंगे। जबकि, परमानेन्ट मजदूरों को अक्टूबर तथा नवम्बर के ओवर टाइम के पैसे दिसम्बर-अन्त तक नहीं दिये हैं – हालाँकि परमानेन्ट की तनखा 14000 रुपये ही है पर मैनेजमेन्ट अनुसार ''जायेंगे कहाँ?''

टेढापन

भारती एग्जिम (बी-303 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित) फैक्ट्री में कार्यरत 100 मजदूरों से 15,200 रुपये तनखा पर हस्ताक्षर करवाते हैं। बैंक से वरकर के फोन पर मैसेज आता है 14,934 रुपये का – ई एस आई के 266 रुपये काट कर , पी एफ नहीं है। हर वरकर से ब्लैंक चेक पर साइन करवाते हैं और डायरेक्टर खुद बैंक से पैसे निकाल कर लाता है। ड्युटी सुबह 9½ से रात 9 की है और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मजदूर को 15-15 दिन पर 6200 रुपये देते हैं ओवर टाइम जोड़ कर (8 घण्टे के 340 रुपये अनुसार)।

एस पी एल (48 सैक्टर-6 , फरीदाबाद स्थित) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट , महीने के तीसों दिन। जाँच के लिये आई एक मैडम को बताया कि ओवर टाइम रोज 4 घण्टे होता है और पैसे सिंगल रेट से देते हैं तो उन्होंने टाइम ऑफिस वालों को बुला लिया। वे बोले कि नहीं मैडम, इसे पता नहीं है। रजिस्टर लाये और बोले कि देखिये 8 घण्टे ड्युटी है और 2 घण्टे ओवर टाइम। अगले दिन , 18 दिसम्बर को सुबह 9 बजे मजदूरों को एकत्र कर टाइम ऑफिस वाले बोले कि कोई पूछे तो कहना कि ड्युटी सुबह 8 से साँय 4 तक है और फिर दो घण्टे ओवर टाइम होता है जिसका भुगतान डबल रेट से है।

मैक्सशॉप (10 व 27 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री. .. नवम्बर के ओवर टाइम के पैसे 3 दिसम्बर को अवैध नोटों में

फरवरी 2017

दैनिक उत्सव से ही हल निकलेगा

बहुत खूब। दम के दम पर बिना किसी और एक को दमदार बनाये। विस्तार।

दमदारों का उत्सव का समय है अब। तथागत की एक बात याद दिलाई एक पाठक ने। एक व्यक्ति ने तथागत से पूछाः ''आनन्द-उत्सव करने का बेहतरीन दिन कौन सा है?'' तथागत ने प्यार से कहाः '' मौत से एक दिन पहले।'' व्यक्तिः ''मौत का तो कोई वक्त नहीं!'' तथागत ने मुस्कुराते हुये कहा, '' तो जिन्दगी का हर दिन आखरी समझो और उत्सव करो।''

बहुत खूब। उत्सव को अगर जीवन का सार रखें तो बहुत सारे कारण डगमगा जायेंगे।

किस चीज के कारण ?

बहुत खूब। जैसे कि जॉब-जॉब-जॉब का जप करने से जीवन का अर्थ निकलेगा। जैसे कि आज पिसो-घिसो तो कल-परसों-तरसों इमारत बन जायेगी।

जीवन एक उत्सव है इसका विस्तार कैसे करें, यह दिमाग में घूमता रहता है। अपने आसपास इतनी भिन्नता-विभिन्नता देखता हूँ कि आश्चर्य चकित रहता हूँ।

बहुत खूब। पक्षियों की चोंच को ही ले लो। हर पक्षी की चोंच अलग। शहद लेने वालों की अलग, फल खाने वालों की अलग, सतह से उठाने वालों की अलग, तराशने वालों की अलग, छान कर खाने वालों की अलग।

अद्‌भुत ! मेरे चाचा और उनके साथियों ने अपने दम से, अपनी फैक्ट्री की बातें, अपने बीच घुटन में न रख कर, जब गत्तों पर लिख कर सौ सड़कों पर हजारों से की, तो इउनको धुँधले पन से दूर एक अद्‌भुत विविधता दिखी।

बहुत खूब। बन्धु एक सवाल है। यह विविधता हम खो क्यों देते हैं ? और, भिन्नता-विविधता से डरते क्यों हैं ?

अरे, बोरे में बन्द भी कर देते हैं ! मुझे इतना तो समझ आता है कि कभी एक शब्द से एक रूप मिलता है। जैसे कापसहेड़ा में हम लोग किरायेदार हैं। लेकिन इस शब्द से, इस पहचान से हम हजारों जो रह रहे हैं वो एक-दूसरे के साथ निकटता महसूस नहीं करते।

बहुत खूब। पर वही साथी फैक्ट्री के अन्दर एक-दूसरे से निकटता महसूस करते हैं। इतनी घनिष्टता जो भारी दबाव लिये है। लेकिन यह दबाव अपने से दूसरे कार्यस्थल तक जाने में ढीला हो जाता है। शायद घनिष्टता नहीं रहती। मेरे अनुभव में यह सबसे बड़ा सवाल है।

मेरे चाचा के साथ बातचीत में यह बात बार-बार आती है। उनका दावा है कि जो नई पीढी के वरकर इतनी फैक्ट्रियों में घूम लेते हैं, वे शायद इस सवाल से, इस समस्या से अलग ढँग से जूझेंगे। मेरे चाचा को लगता है कि इस सवाल का हल उनके अनुभव में नहीं मिला।

निकलता है। उसको क्या बोलते हैं ?

नाम ढूँढ रहा हूँ दोस्त। नाम ढूँढ रहा हूँ। एक बार नाम मिल जाये तो सब की हवा टाइट हो जायेगी। वो नाम ही नहीं मिल रहा। अनुभव में है, वर्णन में है, अहसास में है, धारा में है, प्रवाह में है, प्रतिध्वनियों में है, क्रियाओं की लहरों में है।

तेरी यह खोज और तेरा सुरूर मुझे उत्तेजित करता है।

बोलने के हजारों तरीके

– पलवल साइड से रोज ई एम यू ट्रेनों से फरीदाबाद ड्युटी करने आते लोगों से बातचीत में आमतौर पर पता ही नहीं चलता कि वे सीधी बात कर रहे हैं ; घुमा के बात कर रहे हैं ; मजाक कर रहे हैं ; गम्भीर हैं ; खिल्ली उड़ा रहे हैं ; या फिर ऐंवें ही बोल रहे हैं ।

– एक फैक्ट्री मजदूर : '' हम ने उस दिन कोई मीटिंग नहीं की थी । आपस में बातचीत नहीं की थी । बुला-बुला कर कहने का नहीं किया था । सब अपने में थे, शान्त थे । अपने आप ही सब में 12½ से पहले ही हाथ धोने की बात आई ।''

दो छोर हैं : मुँह से बोलना और मुँह से नहीं बोलना । मुँह से बोले को समझना ही बहुत कठिन है । और , जो मुँह से नहीं बोला है उसे समझना तो रिसर्च करने वालों के भी बस के बाहर है । इसलिये मजदूरों के लीडर बनने को आतुर लोग और मजदूरों से रोज रूबरू मैनेजमेन्टें बेहाल हैं ।

'' हाँ जी की नौकरी और नाँ जी का घर '' से बात बहुत आगे बढ गई है । मण्डी के समुद्र में कम्पनियाँ कागज की नाव होती हैं । और, अनिश्चितता ही निश्चित है की बढती अभिव्यक्ति का दौर है यह । आई एम टी मानेसर स्थित ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर*** फैक्ट्री में दिसम्बर 2016 में सप्ताह-भर के मेन्टेनैन्स शट डाउन से पहले, 21 से 24 दिसम्बर के दौरान प्रोडक्शन कार्य करते उन 500 से ज्यादा टेम्परेरी वरकरों को नौकरी से निकाल दिया गया जिन्हें काम करते एक वर्ष पूरा नहीं हुआ था ।

''ईमानदार नेता – बेईमान नेता'' के जमाने को बीते सौ साल से ऊपर हो गये हैं । ''नेता खाते हैं ; खायें ; पर आटे में नमक के बराबर खायें '' की बातें भी चालीसेक वर्ष पुरानी हो गई हैं । '' लीडर ईमानदार रहता है तो मारा जायेगा और बेईमान बन जायेगा तो बेच खाने की कोशिश करेगा'' का समय है यह । अब फैक्ट्री-दर-फैक्ट्री मजदूरों का यह सामान्य अनुभव है । ऐसे में गाँव-देहात से आ कर फैक्ट्री में लगे नये लोग ही कहते हैं, ''हमारी फैक्ट्री में कोई बोलती ही नहीं, कोई बोलता ही नहीं ।'' बहुत जल्दी ही यह साफ हो जाता है कि साहब को मुँह से बोलना मतलब चलती ट्रेन के आगे खड़े हो जाना । नादान कभी-कभी मैनेजमेन्ट को मैनेज करना सिखाने लग जाते हैं । जबकि, मजदूरों द्वारा कब्जे ढीले करने, कब्जे हटाने वाले इस वक्त में भी मैनेजमेन्टों को मैनेज करना सिखाने की भूमिका लीडर लोगों की ही है । इसलिये ऊँच-नीच, मण्डी-मार्केट, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा की बढती लड़खड़ाहट ने हर रंग-रूप के प्रतिनिधियों-नुमाइन्दों-लीडरों-नेताओं को असंगत बना दिया है, नाकारा बना दिया है । अब फैक्ट्री मजदूर जब अकेले-दुकेले में साहबों और नेताओं से बात करते हैं तब आमतौर पर दो शब्द ही प्रयोग करते हैं, ''हाँ जी'' , ''नाँ जी'' ।

टुकड़ों में (अंग्रेजी में शब्द है fragments में) बातों और कदमों ने फैक्ट्रियों में दो पैसे वाले खबरचियों को मैनेजमेन्टों के लिये फालतू के बनाया । सी सी टी वी कैमरों और रिकार्डरों को फैक्ट्रियों में मजदूरों के हँसी-मजाकों ने बेमतलब के बना दिया है । मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में जुलाई 2012 में और उद्योग विहार, गुड़गाँव में फरवरी 2015 में मजदूरों की गतिविधियों ने विद्वानों के बीच सी सी टी वी कैमरों-रिकार्डरों की फिजूलखर्ची पर बहसों को जन्म दिया । और, बांग्लादेश में इधर दिसम्बर 2016 में तो गारमेन्ट वरकरों तथा कम्पनियों के बीच युद्ध में सरकार को मजदूरों के खिलाफ युद्ध दौरान के कानून लागू करने पड़े हैं ।

हजारों-लाखों में उत्पादन को कम्पनियों द्वारा रिजैक्ट के तौर पर वापस मँगवाना जो हो रहा है वह फैक्ट्री मजदूरों के ऐंवें ही बाँये हाथ के खेल हैं । मैनेजमेन्टों का तकनीकी समाधान : रोबोट-रोबोट-रोबोट तो मैनेजमेन्टों की खाट खड़ी होने की मुँह बोलती तस्वीर है ।

हँसी-हँसी में नई रचनाओं का समय है यह । बोलने के हजारों तरीकों में से कुछ को छोड़ने का भी वक्त है यह । रोना-धोना तो छोड़ना बनता ही है । यह-वह संकट और उनके इस-उस तकनीकी समाधान पर गूढ-गम्भीर अध्ययन-चिन्तन मजाक हैं और इन्हें मजाक के तौर पर लेना ही बनता है ।

नोएडा सैक्टर-63 स्थित ***ओरियन्ट क्राफ्ट*** फैक्ट्री में तीन हजार से ज्यादा मजदूर काम करते हैं । बातें 1 अक्टूबर 2016 की हैं । सुबह दस बजे वरकरों और मैनेजमेन्ट के बीच गर्मागर्मी हुई । पुलिस को फोन । पी सी आर आई । मजदूरों की भीड़ देख कर पी सी आर लौट गई । कई थानों की पुलिस बुलाई गई । भारी सँख्या में पुलिस के पहुँचने से पहले ओरियन्ट क्राफ्ट फैक्ट्री के अन्दर तथा बाहर हिंसा हुई । ओरियन्ट क्राफ्ट के जनरल मैनेजर स्तर तक के अफसर पिटे । दर्जन-भर वाहन क्षतिग्रस्त हुये । बगल की फैक्ट्री के भी शीशे टूटे ।

मार्च 2017

इधर से उधर तक, उधर से इधर तक

हमारे यहाँ प्रोडक्शन के चक्कर में मैनेजमेन्ट सैन्सर हटा देती है।

यह तो बेहूदा हरकत है यार। यह तो क्रूरता है।

पावर प्रैसों पर हाथ कटने काफी कम हो गये थे। सैन्सर रोक लेते थे मशीन को। प्रोडक्शन के चक्कर में हाथ फिर कटने लगे हैं।

यह सैन्सर हटाने वाली बात काफी व्यापक है। प्रोडक्शन प्रैशर आया और यह हटा देते हैं।

बोलो तो बोलते हैं कि ध्यान से काम करो। इस क्रूर बुद्धिवालों को खूब समझ है कि मशीन की रफ्तार के सामने ध्यान कम पड़ता है।

यार , यह क्रूर बुद्धि बहुत व्यापक है। जीवन के उत्सव में बड़ी बाधक है।

यह तो तू ठीक कह रहा है। शायद जो रोना-धोना के रूप में हमारे सामने आता है वह इस क्रूर बुद्धि को दर्शाता है। लेकिन, यह शायद समझ नहीं पाता क्रूर बुद्धि के चालन-प्रचालन के तरीकों को।

आप तीनों को सुनते हुये मुझे लगा कि यह जो बुद्धि का एक रूप है इसको हम दैनिक देखते हैं लेकिन उसे हम जल्दी ही बातचीत में मूर्त, ठोस रूप दे देते हैं और व्यक्ति-विशेष के खण्डन में सीमित हो जाते हैं।

मूर्त रूप से आप क्या कहना चाहती हो ?

साधारण है। यह मैंनेजर खराब है, वह सुपरवाइजर क्रूर है , वह जनरल मैनेजर बदतमीज है आदि-आदि जोड़ते रहो।

यह तो आम रोना-धोना है। जीवन के उल्लास पर दबाव डालता है।

मुझे तो यह लगता है कि क्रूर बुद्धि से हमें अचम्भा होता है। एक समानता जो हम मान कर चलते हैं जीवन की, बुद्धि की, करूणा की , आनन्द की, रचना की क्षमता की उस पर यह बार-बार चोट करती है।

आप जो कह रही हो उससे मैं जो समझ रहा हूँ वह यह है कि रोना-धोना तो सतह पर है।

हाँ, यह ठीक कह रही हैं। सतह पे जो है उसकी निकटता से उसमें कई बार गुम हो जाते हैं।

सतह के नीचे बुद्धियों की टकराव है।

हाँ , इस टकराव को हम सब महसूस करते हैं जब चलते-फिरते ग्रुपों में क्रूर बुद्धि से कैसे जूझा जाये इस पर बात होती है।

मतलब ?

देख, अकेले-दुकेले जब बात करते हैं तब रोने-धोने और क्रूर बुद्धि के मूर्त रूपों से निकलने में टाइम लगता है। लेकिन 5-6,7-8 जुट जाते हैं तब बातचीत मूर्त रूप को छोड़ देती है और क्रूर बुद्धि को लगाम लगाने , विफल करने , परास्त करने के तौर-तरीके एक-दूसरे को बताते हैं और कुछ अनुभवों से सचेत व प्रेरित करते हैं।

वाह ! यह संवाद तो रोज हो रहे हैं।

मैडम, संवादों को याद कैसे रखें ? यह संवाद तो चारों तरफ हैं और आपकी बात से मुझे यह समझ आ रहा है कि इन संवादों में बुद्धियों की टक्कर है , एक मन्थन है। लेकिन यह संवाद क्षणिक भी हैं , अस्थाई हैं , बहुआयामी हैं।

तो आप मुझ से याद रखने के तरीके पूछ रहे हो? मेरी समझ जो बनी है वो यह है कि हम याद रखने के तरीकों में न उलझें। संवादों की अवधि, समय, मात्रा , तीव्रता का बढना और बारम्बार होना, लगातार होना से ये इधर से उधर फैलते हैं।

फिर उधर से इधर भी आयेंगे। इस में होने का आनन्द क्रूर बुद्धि के भार को गिराता है।

शरीर कहाँ समाप्त होता है और दुनिया कहाँ आरम्भ होती है के बचपन के रहस्य में आनन्द फिर से लें।

बहुत खूब।

कई बातें कईयों में बातचीतों में

दिल्ली में ओखला औद्योगिक क्षेत्र हो , चाहे गुड़गाँव में उद्योग विहार , या आई एम टी मानेसर , या फिर फरीदाबाद हो , बातचीत में कई फैक्ट्रियों के मजदूर शामिल हो जाते हैं और अनेक प्रकार की बातें होती हैं। लेकिन मजदूर समाचार में हम आमतौर पर फैक्ट्री-विशेष के आधार पर विवरण देते रहे हैं। ओखला में फरवरी 2013 और उद्योग विहार में फरवरी 2015 में हुई व्यापक बातचीत की झलक हम अवश्य दे पाये थे।

अकेले-दुकेले में भी, रोने-धोने में भी बातें जारी रहने पर कई तरह की चर्चा और कई जगह के उदाहरण बातों में आते हैं। व्यापकता प्रत्येक में है। एकमेव और एकमय के इस दौर में , in this era of unique and together , सात अरब मनुष्य तो प्रस्थान-बिन्दू हैं। पृथ्वी पर और अन्तरिक्ष में जीव तथा निर्जीव के तौर पर परिभाषित सब एक-दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हैं। प्रत्येक का अस्तित्व दाव पर लग जाना एक बात है। अधिक महत्वपूर्ण है उत्सव , मनुष्य जीवन में आनन्द।

कईयों के बातचीत में शामिल होने पर जो खुशी, प्रसन्नता , आनन्द और जानकारियाँ एवं प्रेरणायें मिलती हैं उन्हें हम यहाँ प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं।

28 फरवरी को उद्योग विहार, गुड़गाँव में:

नवशिखा पोलीपैक (194 फेज-1) मजदूर न्यूनतम वेतन और तनखा टाइम पर कह कर सब ठीक है कह रहा था तो कुछ वरकर ''तनखा नहीं बढवाते'' का उलाहना देते निकल रहे थे जब ***जय स्विच*** (407 फेज-3) के मजदूर बात करने लगे। जय स्विच फैक्ट्री में 27 फरवरी को साँय 4 बजे कोई अधिकारी पहुँचा तब हैल्परों को छिपा दिया और स्टाफवाले ऑपरेटरों से अनुरोध करने लगे: कहना 8 घण्टे की ड्युटी है ; बोलना 2 से 10 बजे की शिफ्ट में हैं। जबकि 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं , ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और नकद देते हैं , हैल्परों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम तनखा। बहुत डरती है मैनेजमेन्ट ! ***मेम्ब्रेन इण्डिया*** (265 फेज-1 और 347 फेज-2) वरकर बातचीत में शामिल हुआ और बोला कि पानी शुद्ध करने की मशीनें बनाने वाले मजदूर महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम करते हैं। और हैल्परों की तो ई एस आई नहीं , पी एफ नहीं , तनखा हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम, 6500 रुपये। ***कैलाश रिबन*** (403 फेज-3) मजदूर बोल पड़े कि फैक्ट्री में पीने का पानी साफ करने की मशीन डेढ महीने से खराब है और.... ***एस आई एस सेक्युरिटी*** (मुख्यालय पटना) गार्ड ने कहा कि 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं , तीसों दिन , ई एस आई तथा पी एफ काट कर ड्युटी साइट अनुसार 12-13-13,500 रुपये बैंक खातों में भेजते हैं और ओवर टाइम दिखाते ही नहीं। इक्की-दुक्की साइट पर ही 8 घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक अवकाश है। तभी ***कोका कोला/एनरिच एग्रो*** (276-277 फेज-2) वरकर कुछ कह कर चल पड़ा। ***मोडलामा एक्सपोर्ट*** (105 ,106, 200 , 201 , 204 फेज-1) मजदूरों का एक समूह कई बातें करने लगा: जनवरी में 160-200 घण्टे ओवर टाइम, दो घण्टे प्रतिदिन ओवर टाइम का भुगतान डबल रेट से और बाकी घण्टों का सिंगल रेट से , 17 फरवरी को ओवर टाइम का कुछ पैसा ही अकाउन्ट में भेजा। मजदूरों ने हँगामा किया और 19, 20 ,21 फरवरी को सब फैक्ट्रियों में दस हजार वरकरों ने काम बन्द रखा। तभी ***यूनिक कलेक्शन*** (29-30 फेज-4) फैक्ट्रियों में काम करते वरकर बोले: 2500 मजदूरों को ओवर टाइम डबल रेट से और यहाँ 11 फरवरी को 75 मजदूरों ने गेट पर हँगामा किया। कारण ? सितम्बर और अक्टूबर 2016 में जिन्होंने नौकरी छोड़ी उन्हें 15-20 दिन किये काम के पैसे यह कह कर नहीं दे रहे थे कि रिकार्ड नहीं है। नवम्बर-दिसम्बर में जिन्होंने नौकरी छोड़ी उन्हें किये काम के पैसों के लिये तारीख देते रहते हैं। हँगामा करने पर मैनेजिंग डायरेक्टर ने गेट पर आ कर कहा था कि सब के पैसे 18 फरवरी को देंगे। डेढ सौ वरकरों को 18 फरवरी को मैनेजमेन्ट बोली कि 25 को पैसे देंगे। और 25 फरवरी को बोले हैं 25 मार्च..... ***मोडलामा फैक्ट्रियों*** का दूसरा समूह बातें करने लगा: हर वरकर के ओवर टाइम में से 2000 रुपये काट लिये थे , 3500-4000 मजदूर हैं , एक दिन सुबह लन्च तक काम बन्द किया और फिर साँय 5½ छुट्टी कर ली (ओवर टाइम नहीं किया), दूसरे दिन दोपहर डेढ से 5½ तक काम बन्द किया , तीसरे दिन लन्च के बाद 3-4 घण्टे बन्द किया तब साहब बोले थे कि 26 फरवरी को सब पैसे दे देंगे। लेकिन नहीं दिये और आज 28 की कही है..... तभी ***गौरव इन्टरनेशनल*** (411 फेज-3) का वरकर ऋचा-गौरव समूह की फैक्ट्रियों में पी एफ घोटाले की बात करने लगा : सब मजदूरों का फण्ड हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम पर काटा जाता है , 6500 रुपये पर ही पी एफ राशि जमा की जा रही है। ***साची एक्सपोर्ट*** (458 फेज-

3) फैक्ट्री छोड़ चुका वरकर बोलने लगा: ई एस आई तथा पी एफ स्टाफ की ही , 250 मजदूरों की नहीं , वरकर काम बन्द करते हैं तब तनखा देते हैं , 27-28 तारीख तक , मजदूर टिकते नहीं पर छोड़ने वालों के 20-25 दिन किये काम के पैसे फँस जाते हैं ..... ***वशिष्ठ फार्मास्युटिकल*** (173 फेज-1) कम्पनी का नाम लेने की बजाय दवाई फैक्ट्री कह कर एक मजदूर शुरू हो गया : रोज 11½ घण्टे की ड्युटी है , ओवर टाइम सिंगल रेट से , 60 में ई एस आई तथा पी एफ 4-5 के , अधिकारी आते हैं तब मजदूरों को छत पर छिपा देते हैं..... तब मई 2012 से बन्द ***ईस्टर्न मेडिकिट*** की पाँच फैक्ट्रियों के 1100 परमानेन्ट मजदूरों में से एक वरकर पाँच साल से नियम-कानून में तारीख-दर-तारीख चल रही हैं की बातें करने लगा । तभी ***स्पार्क एक्सपोर्ट*** (166 फेज-1) वरकर नियम-कानून से परे तारीखें बताने लगा । सितम्बर 2015 में गाँव गया था और लौटने पर रखा नहीं । एक महीने किये काम के पैसों के लिये तब आना , तब आना कह कर बुलाते रहे और 6-7 चक्कर कटवाने के बाद 16 दिसम्बर 2016 को बोले कि ज्यादा दिन हो गये , अब पैसे नहीं मिलेंगे ..... ***टेकनोवा*** (335 फेज-5) का वरकर बोला कि कहते हैं 6 महीने का पी एफ नहीं मिलेगा । अरे नहीं , एक महीने का भी फण्ड ले सकते हैं ..... ***मोडलामा*** फैक्ट्रियों के फिनिशिंग वरकरों ने कहा कि ओवर टाइम के 1500-3000 रुपये काटने के खिलाफ टेलरों ने काम बन्द किया था । फिनिशिंग वरकरों ने एक-दो घण्टे ही काम रोका ।

1 मार्च आई एम टी मानेसर में :

होराइजन इन्डस्ट्रीयल (45 सैक्टर-4) फैक्ट्री छोड़ चुका मजदूर बोला कि सितम्बर तथा अक्टूबर की तनखायें अब तक नहीं दी हैं । बैंक अकाउन्ट नम्बर ले लिये थे और बोले थे कि पैसे भेज दिये हैं पर नहीं भेजे । फोन पर कह देते भेज दिये हैं । छुट्टी करके गया तब 20 फरवरी को एच आर वाले बोले कि पैसे ठेकेदार देगा । अरे बहुत हेराफेरी है यह कहते हुये ***एन एच के स्प्रिंग्स*** (31 सैक्टर-3) के वरकर अपनी कहने लगे : नौकरी छोड़ने पर पी एफ के पैसे मजदूर को नहीं मिलते ; फार्म भर देते हैं पर 2-3 बार रिजैक्ट हो जाता है ; पैसे किसी को मिल जाते हैं और किसी को नहीं मिलते । ***होण्डा टपुकड़ा*** से निकाला , ***इण्डो ऑटोटेक*** (132 सैक्टर-8), ***ओमैक्स ऑटो*** (6 सैक्टर-3) वरकर बातचीत में शामिल हो गये । एक्सीडेन्ट में उँगली कटी, ई एस आई अस्पताल में इलाज , 6 दिन किये काम के पैसे इण्डो ऑटोटेक कम्पनी ने नहीं दिये और बोले कि उपचार में खर्च कर दिये । ओमैक्स कम्पनी कहती है कि घाटे में है । साल हो गया फैक्ट्री से बाहर हुये और होण्डा टपुकड़ा यूनियन लीडर अब कुछ बताते भी नहीं । अरे नेताओं के चक्कर बुरे हैं कहने लगा ***ब्रिजस्टोन इंडिया ऑटोमोटिव प्रोडक्ट्स*** (11 सैक्टर-3) से निकाला मजदूर , दो साल से तारीख पड़ रही हैं । ***डब्लू एस पी एल-वाही सन्स*** (11 सैक्टर-5) के पाँच-छह वरकर कहने लगे : सुबह 8 से रात 9 की शिफ्ट में मारुति के पार्ट्स बनते हैं , 70 पावर प्रैस से प्रोडक्शन के चक्कर में सैन्सर हटा दिये हैं, एक साल में 14-15 के हाथ कटे हैं , पावर प्रैस टेम्परेरी ऑपरेटरों को ओवर टाइम मात्र 24 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से देते हैं और साहब अहसान जताते हैं कि तीन टाइम खाना देते हैं – सुबह दो रोटी-दाल, दोपहर एक प्लेट भोजन , रात 9 बजे दाल-रोटी । हम 70 टेम्परेरी वरकरों ने 27 फरवरी को ओवर टाइम पर रुकने से इनकार किया । कल सुबह हम फैक्ट्री में गये ही नहीं , पाँच घण्टे गेट के बाहर बैठे रहे । परमानेन्ट वरकर काम कर रहे हैं पर टेम्परेरी के काम बन्द करने से बहुत असर पड़ा है । आज देखते हैं कम्पनी क्या कहती है..... ***जय उशिन*** (4 सैक्टर-3) वरकर ने हौसला बढाते हुये कहा कि 800 लड़की और हम 300 लड़के 12 रोज दिन-रात फैक्ट्री के बाहर सड़क पर बैठे तब कम्पनी झुकी थी । ***कृष्णा ग्रुपो एन्टोलिन*** (47 सैक्टर-3), ***एसवी प्रिसीजन कम्पोनेन्ट्स*** (22 सैक्टर-3) , ***ओरियन्ट क्राफ्ट*** (15 सैक्टर-5) के मजदूर कहने-सुनने लगे । ओरियन्ट क्राफ्ट में सुबह 9 वाले रात एक , सुबह चार बजे तक काम करते हैं और फिनिशिंग-पैकिंग-कटिंग में अब दूसरी शिफ्ट भी है , रात 8 से सुबह 7 बजे की । पिछले वर्ष फुडिंग के 80 रुपये और चाय-बिस्कुट देते थे पर अब नहीं दे रहे । ओवर टाइम की पेमेन्ट दुगुनी दर से है पर साप्ताहिक अवकाश के दिन , रविवार को सिंगल रेट से और सण्डे को ड्युटी पर नहीं गये तो गेट रोकने की बात । रात की ड्युटी कर आये ***मेगा मैटल*** (45 , 47, 51 सैक्टर-5) के वरकर अपनी कहने लगे : स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं , सब मजदूर टेम्परेरी हैं , 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और हर रविवार को भी ड्युटी । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और जनवरी के यह पैसे 27 फरवरी को जा कर देने शुरू किये , आज (1 मार्च) तक सब वरकरों को दिये नहीं हैं । अटेन्डेन्स अलाउन्स 500 रुपये है और एक छुट्टी पर खत्म । रात ड्युटी करके आया ***एच एम एस सेक्युरिटी*** (सैक्टर-7) गार्ड कहने लगा कि 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं , साप्ताहिक अवकाश नहीं है , ई एस आई तथा पी एफ काट कर तीस दिन के 8000-9000 रुपये देते हैं जो कि तनखा के तौर पर चार हजार रुपये हुये, और कम्पनियाँ सोचती हैं कि गार्ड उनकी रक्षा करेंगे । ***खजाना टॉयज*** (131 सैक्टर-5) और ***सुपरफाइन कम्पोनेन्ट्स*** (118 सैक्टर-5) मजदूर सुनने-कहने लगे । सुपरफाइन फैक्ट्री में स्टाफ

और 2-3 मजदूर परमानेन्ट हैं , 400 टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा दुपहियों के पार्ट्स और कार साइलैन्सर बनाते हैं , ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से , कैन्टीन नहीं है , मात्र एक कप चाय 12 घण्टे में , तनखा से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं पर मजदूरों को ई एस आई कार्ड नहीं और छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं । एक वरकर ने केन्द्र सरकार की बात करते हुये ***मिलिट्री नर्सरी*** (एन एच 8 रोड़ पर , मानेसर) के बारे में बताया : 170 महिला काम करती हैं , पर्ची दी है और पी एफ के 1100 रुपये काटते हैं , प्रतिदिन काम के 250 रुपये देते हैं और ज्ञान देते हैं : कोई पूछे तो कहना 350 रुपये देते हैं । जनरल शिफ्ट है कह कर ***विनय कारपोरेशन*** (42 सैक्टर-3) के मजदूर बताने लगे : 30-35 परमानेन्ट वरकर , 30-32 कैजुअल वरकर , और पाँच-छह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 800 मजदूर जे एन एस , प्रीकॉल , मिण्डा फैक्ट्रियों के लिये वायर बनाते हैं । महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम , भुगतान सिंगल रेट से । हरियाणा सरकार द्वारा निध ार्ारित न्यूनतम वेतन से भी कम तनखा, हैल्पर की 7600 रुपये और ऑपरेटर की 8000-8200 रुपये । रात की 12 घण्टे की शिफ्ट से लौटे ***नर्मदा पोलीमर्स*** (17-18 और 189 सैक्टर-4) वरकर : फैक्ट्रियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं , महीने के तीसों दिन, नामी कम्पनियों के जूतों के सोल बनते हैं । रोज के 4 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और रविवार के दुगुनी दर से । तनखा बहुत कम है, हैल्पर की 6300 रुपये और ऑपरेटर की 6500 रुपये , बहुत वरकर ई एस आई तथा पी एफ कटवाते नहीं हैं । ***हाई टेक गियर*** (169 सैक्टर-7) फैक्ट्री छोड़ चुके एक मजदूर ने कहा : 4 साल बिना ई एस आई तथा पी एफ काम किया फिर 2015 में यह लागू । आठ महीने बाद नौकरी छोड़ पी एफ फार्म कम्पनी में दिया , कहीं खो गया कहने पर फिर फार्म दिया , साल हो गया और फण्ड के पैसे निकालने का फार्म नहीं भरते । मना नहीं करते, कल , फिर कल करते रहते हैं । यहाँ कम आयु की लड़कियाँ भी हैं और उनकी 10½ घण्टे की ड्युटी है । लड़कों की 12 घण्टे की ड्युटी है और महीने में 8 नाइट लग जाती हैं – नाइट लगने का मतलब है 36 घण्टे लगातार काम । हैल्पर की तनखा 6000-6500 रुपये , बैंक में भेजते हैं , ओवर टाइम के पैसे मिला कर न्यूनतम वेतन की खानापूर्ति करते हैं । सुबह 9½ से रात 8 की ड्युटी वाले ***कबीर लैदर*** (17 सैक्टर-6) के वरकरों ने कहा कि 150 टेम्परेरी वरकरों की ई एस आई नहीं , पी एफ नहीं , 32 परमानेन्ट मजदूरों की ही हैं । रविवार को भी फैक्ट्री में काम होता है , महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । एक दिन छुट्टी करने पर नौकरी से निकाले गये ***सेबरोस ऑटोमोटिव*** (191 सैक्टर-4) मजदूर ने हिसाब लगाया और 9 दिन किये काम के 2500 रुपये बने पर बैंक खाते में 1400 ही भेजे गये । वरकर ने एच आर वालों से पूछा तो वो बोले कि ठेकेदार से बात करो । सेबरोस फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं । रात की 12 घण्टे की शिफ्ट में ड्युटी कर आये ***कल्याणी टैक्नोफोर्ज*** (103 सैक्टर-8) के मजदूरों ने काफी देर बातें की । बैंक अकाउन्ट खुलवाने के लिये ए टी एम और पास बुक के 300 रुपये माँग रहे थे , वरकरों ने मना कर दिया , ठेकेदार ने एक मजदूर से मारपीट की तो वरकरों ने ठेकेदार को घेर लिया , कम्पनी ने ठेकेदार को पार्सल किया, गाड़ी से भगा कर बचाया । फोटो ले कर मजदूरों ने व्आट्सएप पर डाल दिया । स्टाफ के लोग और दो-चार मजदूर परमानेन्ट हैं , 100 वरकर दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं । रीज्वाइनिंग करते रहते हैं, मजदूर का नाम एक ठेकेदार कम्पनी के खाते से दूसरी ठेकेदार कम्पनी के खाते में डालते रहते हैं । फण्ड निकालने का फार्म ब्रेक के 45 दिन बाद भरना चाहिये पर जनरल मैनेजर बोला कि 3 महीने बाद फार्म भरने का नियम है । मजदूर के खाते में फण्ड के 5-6-8000 रुपये कम आते हैं , पी एफ कार्यालय से पैसे नहीं आते , मैसेज नहीं आते , पैसे शायद कम्पनी खुद ही भेजती है । ई एस आई कार्ड जिनके तीन साल हो गये हैं उनके ही हैं । दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । लेबर डिपार्ट से कल , 28 फरवरी को फिर आये थे – पैसे ले कर चले जाते हैं । सुबह 9½ छूटे ***गांधी स्प्रिंग*** (154 सैक्टर-7) के मजदूर बोले कि फैक्ट्री में 150 वरकर हैं , सब टेम्परेरी हैं , ई एस आई तथा पी एफ तीन-चार की हैं । शिफ्टें सुबह 9 से रात 8½ और रात 8 से अगली सुबह 9½ की हैं । ओवर टाइम 25 से 35 रुपये प्रतिघण्टा । हैल्पर की तनखा 6000 रुपये और ऑपरेटर की 8000-8500 रुपये । अब तक कैश देते थे , फरवरी की बैंक खाते में भेजने की बातें ।

2 मार्च ओखला औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली

पीने का पानी खराब था , मजदूर बीमार पड़ते , घर से पानी ले कर फैक्ट्री जाते थे और यह बात फैल कर चर्चा में आई तो कम्पनी ने पानी ठीक करवा दिया कहते हुये ***पुनियानी इन्टरनेशनल*** (बी-114 फेज-1) वरकर ने बताया कि लैदर की जैकेट समेत बहुत-कुछ बनाते 1000 मजदूरों में 300 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं । इन 300 की तनखा बैंक खातों में और 700 अन्य वरकरों को कैश देते हैं । रोज सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है और रात पौने एक तक रोक लेते हैं । ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से और सब को नकद देते हैं । ई एस आई तथा पी एफ के बारे में ***फैशन टेक गारमेन्ट्स*** (ए-32 फेज-1) के मजदूर बोले

कि 150 प्रोडक्शन टेलरों की यह नहीं हैं , सैम्पलिंग टेलरों और परमानेन्ट हैल्परों की ही ई एस आई व पी एफ हैं । ***एस एम एस एक्सपोर्ट***(फेज-2) में ई एस आई तथा पी एफ 300 से कम वरकरों की ही हैं , 700 मजदूरों की नहीं हैं । यहाँ 200 महिला मजदूरों की तनखा 5000 रुपये और वाशिंग वालों की 7000-9000 रुपये की बात की तो नये ग्रेड पर चर्चा बढी । एक ने कहा कि चुनाव के समय नेता से कच्छा उतारवा लो । बातें रोचक होने लगी थी तब एक हँस कर बोला कि यूनियन लीडर आ रहा है , अब चलो । जहाँ दस वरकर बात करते दिखे , नेता पहुँच जाते हैं । थोड़ी देर बाद ***ए के क्रियेशन्स*** (सी-58/4 फेज-2) के मजदूरों ने कहा : हैल्परों की तनखा 5500 रुपये है और कारीगरों में कुछ पीस रेट पर हैं , कुछ दिहाड़ी पर । जनवरी की तनखा 27-28 फरवरी को जा कर दी है , नकद में दी है । ई एस आई तथा पी एफ 100 मजदूरों में एक-दो के ही हैं । महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम के , भुगतान सिंगल रेट से । सी-22 , सी-23 फेज-2 में ***पैरामाउन्ट*** का माल तैयार करते फैब्रिकेटर के 90 टेलरों की ई एस आई नहीं , पी एफ नहीं, 8 घण्टे के 350 रुपये ।

पिता–पुत्र संवाद

बातें 1969 में पूर्वी उत्तर प्रदेश की हैं । पिताजी कोलकाता में जूट मिल में कुछ साल काम कर चुके थे और गाँव में थोड़ी खेती तथा पुश्तैनी काम में कहारी आदि करते थे । गाँव में ट्युशन करते हुये नौकरी ढूँढ रहा था ।

एक परिचित ने कहा कि नदी पार छपरा (बिहार) में होम्योपैथी कॉलेज से डॉक्टरी कर लो । मैंने यह बात पिताजी से कही । इस पर वे बोले कि डॉक्टरी नहीं करना क्योंकि डॉक्टर यह चाहते हैं कि लोग बीमार हों और हमारे पास आयें ताकि हम पैसे बनायें । डॉक्टरी का धन्धा बहुत खराब है । फिर मैंने पिताजी को दूसरे सुझाव के बारे में बताया । बी टी सी में दाखिला ले कर मास्टरी की ट्रेनिंग करने की बात की । इस पर पिताजी बोले कि नहीं-नहीं, मास्टर नहीं बनना । परिवार में पाटीदार अपने चाचा को ही देख लो । उन्होंने मास्टर बनने के बाद अपने सगे भाईयों से जमीन में बेईमानी की है । मास्टर बेईमान बन जाते हैं इसलिये मास्टर नहीं बनना ।

मैंने तीसरा सुझाव पिताजी के सामने रखा । दिन में कहीं काम करना और इवनिंग कॉलेज से वकालत की पढाई करना । इस पर पिताजी बोले कि वकील बनने की पढाई कभी मत करना क्योंकि लोगों के बीच के झगड़ों को वकील बढाते हैं । वकील गलत ढँग से पैसे कमाते हैं ।

जिन्हें मैं गाँव में ट्युशन पढाता था उन में से एक फरीदाबाद जा कर एक फैक्ट्री में लग गया था । नवम्बर 1970 में मैं उसके साथ फरीदाबाद पहुँचा और फैक्ट्री मजदूर बन गया ।

कुछ इमेल पते :

मुख्य मन्त्री, हरियाणा < cm@hry.nic.in>

श्रम आयुक्त, हरियाणा < labour@hry.nic.in>

मुख्य मन्त्री, दिल्ली < cmdelhi@nic.in>

श्रम विभाग दिल्ली < labjlc2.delhi@nic.in >

मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश ईमेल < cmup@nic.in >

श्रम आयुक्त, उत्तर प्रदेश इमेल <labourcom@nic.in>

ई एस आई महानिदेशक < dir-gen@esic.nic.in >

केन्द्रीय भविष्यनिधि आयुक्त < cpfc@epfindia.gov.in >

चीफ विजिलैन्स पी एफ < cvo@epfindia.gov.in >

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ईमेल
< majdoorsamachartalmel@gmail.com >

< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स,
बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट ।
फोन नम्बर : 9306159411

अप्रैल 2017

''असहाय कहना , उज्जवलता के डर से आता है।''

ताऊ, बडे थके हुये लग रहे हो।

एक तो गर्मी और ऊपर से बहुत सियापा भी सुना।

आप तनखा बढवा दो।

ताकत आप में है। हम कहाँ से बढवा देंगे !

ताऊ , हम बोलेंगे तो दँगा हो जायेगा।

अरे ! तुम्हें दँगे से क्या डर ?

क्या बात कर रहे हो। हमें डर कहाँ। डर तो ऊपर से नीचे तक है। पत्रकारों तक फैल गया है। सब डरे हैं।

भाई, आपका संकेत किस तरफ है ?

थोड़ा समझ में नहीं आ रहा।

बोलेंगे तो आप काँप जाओगे।

हा-हा-हा ! अरे अभी ठण्ड थोड़ी न है कि काँपने लगेंगे।

बात तो सही है। हम यह कह रहे हैं आप से और अपने इन साथियों से भी कि सारा एक्शन तो हम करते हैं और रियेक्शन वाले बहुत बोलते हैं। और बोलते-बोलते यहाँ पहुँच जाते हैं कि हमें ही कमजोर, असहाय दिखाने लगते हैं। इसलिये जब हम बोलते हैं तब कम्पन आ जाती है। क्योंकि असहाय दिखते नहीं हैं फिर।

ताऊ , आपको कल की बात सुनाता हूँ । हमारा एक साथी एच आर के पास गया। बोला तनखा का हिसाब समझा दो जरा। एच आर की क्रुर बुद्धि ले गई उसे ठेकेदार के पास हिसाब करवाने। चाय का समय था। उसने फोन किया, बात फैल गई। काम बन्द। सब एच आर के पास। हवा टाइट। कुछ दिन चलेगा। दूसरी शिफ्ट को भी पता चल गया है।

इस तरह के ट्रिगर हर वक्त दबते रहते हैं। तूफान का धीरे-धीरे बढना चलता रहता है। जैसे कि जलवायु का अप्रत्याशित, तरंगी परिवर्तन।

सुना है कि आजकल का शोध यह कह रहा है कि छोटे-छोटे उबाल कई ढँग से जुड़ कर झंझावाती माहौल में सब को लपेट लेते हैं।

लपेटे में तो सभी आयेंगे। सवाल है कि क्या चमक लिये , क्या उज्जवलता लिये टकरायेंगे।

यह बात सुनने में अच्छी लग रही है पर पूरी तरह समझ नहीं आ रही।

ताऊ , देखो आप । दो-तीन दिन पहले की बात है , एक रोबोट ने एक वरकर के सिर में मार दी चोट। एक इन्च का घाव हो गया। नौकरी भी गई। उस फैक्ट्री में 100 के करीब रोबोट हैं। चलते रहते हैं। हम थक जाते हैं। हमें तो रैस्ट चाहिये और अर्थ तथा व्याख्या, स्पष्टीकरण भी चाहियें।

तो आपका यह कहना है कि हम झमेले लिये हैं और रोबोट इन झमेलों से मैनेजमेन्टों को मुक्त करने का आकर्षण लिये हैं।

आकर्षण तो हमारे लिये भी है , पर उस आकषर्ण का अभी वो वर्णन नहीं मिला। अभी डर और शंका में ही बात चल रही है। मेरा कहना यह है कि हमारे देखते-देखते शायद श्रम निर्भर जीवन का अर्थ बदल जायेगा।

हाँ , ये कहा जा रहा है कि काम के लुप्त होने के समय के दौरान में हैं हम। और इस अवधि में क्या उज्जवल सोच , क्रिया, रचना उभारेंगे हम वही चुनौती है, वही महत्वपूर्ण है।

पिछले कई वर्षों से यह उज्जवलता आती है , उसकी चमक दिखती है , फिर छोटे-से अन्तराल में रह कर भूमिगत हो जाती है।

जो उज्जवलता से डर जाते हैं वो उसके होने को ही नकारते हैं।

ताऊ , अब समझो। असहाय कहना डर से आता है। उज्जवलता के डर से आता है।

सजा का बज चुका बाजा

रविवार , 12 मार्च को मजदूर लाइब्रेरी में काठमाण्डु , मुरैना , दिल्ली , गुड़गाँव के आठ-दस मित्रों/साथियों के साथ बातचीतों में 10 मार्च को ***मारुति सुजुकी मानेसर केस*** में गुड़गाँव न्यायालय के निर्णय पर भी चर्चा हुई । फिर 16-17 मार्च को होण्डा मानेसर और मारुति गुड़गाँव फैक्ट्रियों के टेम्परेरी वरकरों से इस सन्दर्भ में कुछ बातें हुई । जज द्वारा 18 मार्च को 13 मजदूरों को आजीवन कारावास की सजा सुनाने के बाद गुड़गाँव-दिल्ली-कोलकाता-अमरीका में मित्रों/साथियों से और भी बातें हुई हैं ।

अप्रेन्टिस , ट्रेनी , ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूर, और परमानेन्ट मजदूरों के बीच मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री में जून 2011 से घनिष्ठता बहुत तेजी से बढी। कन्ट्रोल पुनः स्थापित करने के लिये कम्पनी और सरकार ने एक के बाद दूसरी रियायत भी मजदूरों को दी। रियायतों के बावजूद , 18 जुलाई 2012 को साँय ए तथा बी शिफ्ट के 4000 मजदूरों ने बिना किसी अचानक गुस्से-आवेश-उत्तेजना के मजदूरी-प्रथा के दो प्रतीकों : मैनेजरों और फैक्ट्री बिल्डिंगों पर आक्रमण किया। कोई भी व्यक्ति मजदूर हो ही क्यों ? मजदूरी-प्रथा की समाप्ति के लिये इस दस्तक द्वारा उत्पन्न उज्जवलता की चमक विश्व-भर में पहुँची। इस उज्जवलता के इन्डस्ट्रीयल मॉडल टाउन मानेसर की हजारों फैक्ट्रियों से होते हुये इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में फैलने की सम्भावना उभरी थी। पर यह हो नहीं पाया।

ऐसे में :

●उज्जवलता से डरी सरकार ने तत्काल 600 पुलिस कमाण्डो आई एम टी मानेसर में तैनात किये और 147 मजदूर गिरफ्तार किये । पुलिस कमाण्डो 2017 में भी वहाँ हैं ।

●उज्जवलता से डरी मारुति सुजुकी कम्पनी के चेयरमैन ने इसे वर्ग युद्ध (class war) कहा । मानेसर फैक्ट्री मैनेजमेन्ट ने 546 परमानेन्ट मजदूरों को निकाला और अप्रेन्टिस-ट्रेनी-ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 3000 को बाहर किया ।

●उज्जवलता से डरी केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों ने मजदूरों के हाथों से निकालने , मजदूरों के दायरे से निकालने के लिये तत्काल 16 यनियन लीडरों की समिति बना कर मामला गुड़गाँव में अधिकारियों-मन्त्रियों को आवेदन-ज्ञापन देने , धरना-प्रदर्शन-भूख हड़ताल का बनाया । टेम्परेरी वरकर इस समिति के फेर में नये आये पर निकाले गये 546 परमानेन्ट और जेल में बन्द 147 के परिवार तथा साथी/मित्र 16 यूनियन लीडरों की समिति के बन्धुआ-से हो गये । छह महीने में उस समिति का दाह-संस्कार हो गया पर तब उग्र भाषा वाले लोग धरना-भूख हड़ताल को 200 किलोमीटर दूर ग्रामीण परिवेश वाले कैथल ले गये । वर्ष पूरा होने पर 19-23 क्रान्तिकारी संगठनों की छत्रछाया में पुलिस अनुमति से 18 जुलाई 2013 को लेजर वैली पार्क गुड़गाँव में मृत एच आर मैनेजर की तस्वीर उठा कर , यूनियन का रजिस्ट्रेशन करवाने वे चण्डीगढ गये थे इसलिये उन्हें मजदूर- पक्षधर घोषित करते हुये, दिन में जलती मोमबत्तियाँ ले कर गम्भीर चेहरों के साथ बिचौलियों का एक प्रहसन समाप्त हुआ ।

●उज्जवलता से डरे एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों ने मजदूरों द्वारा उत्पन्न उज्जवलता को ही नकार दिया । इन लोगों के लिये मजदूर असहाय हैं , बेचारे हैं और मजदूरों द्वारा क्रिया जैसी कोई चीज नहीं होती । एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों के अनुसार मजदूरों की दैनिक समस्यायें सुलझाने के लिये भी अन्य का निदेर्शन जरूरी है । यह लोग मजदूरों को मात्र प्रतिक्रिया देने वालों के तौर पर देखते हैं । प्रतिक्रिया देने में सिद्धस्त एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों के लिये सरकार-कम्पनी-पूँजी क्रिया करती हैं , act करती हैं और जनता-मजदूर प्रतिक्रिया करते हैं, react करते हैं । इसलिये एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों ने 18 जुलाई 2012 के लिये भी कहानी गढी : मारुति सुजुकी कम्पनी ने षडयन्त्र किया , 200 बाउन्सरों से हमला करवाया , प्रतिक्रिया में मजदूरों ने अपना बचाव किया , ऐसे में दुखद घटना हुई ।

●उज्जवलता से उदारवादी बहुत डरते हैं । ऊँच-नीच को बनाये रखने के लिये उदारवादी लोग इसलिये बेचारे मजदूरों , असहाय किसानों , दयनीय गरीबों के लिये कुछ करना चाहते हैं । और, अपने हितों के प्रति सदैव चौकस उदारवादी इस कुछ करने के दौरान भी अपने निजी हितों को खूब साधते हैं । इसके लिये एक्टिविस्टों और क्रान्तिकारी ग्रुपों द्वारा गढी कहानियाँ उदारवादियों के माफिक बैठती हैं । मारुति मानेसर के बारे में कम्पनी और सरकार द्वारा गढी कहानी के खिलाफ एक्टिविस्टों तथा क्रान्तिकारी ग्रुपों द्वारा गढी कहानी को उदारवादी पत्रकारों व उदारवादी वकीलों ने हाथोंहाथ लिया । और , दिन में जलती मोमबत्ती तथा मजदूर-पक्षधर एच आर मैनेजर वाले पाखण्ड की अगली कड़ी कोर्ट-कचहरी बने ।

दहशत में मैनेजर

18 जुलाई 2012 को मारुति सुजुकी मानेसर में मजदूरों द्वारा उत्पन्न की उज्जवलता से फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में मैनेजर डरे दिखे। यहाँ कम्पनी साहबों के संग-संग जापान, अमरीका, यूरोप में कम्पनियों के चेयरमैन-एम डी-सी ई ओ के मन-मस्तिष्क से उज्जवलता के डर को हटाने पर सहमति भारत सरकार के हर अंग में थी। ऐसा करने के लिये मजदूरों में दहशत फैलाना शास्त्र सम्मत है। जिला अदालत, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट जजों द्वारा 147 गिरफ्तार मजदूरों को तीन वर्ष तक जमानत नहीं देना इसकी एक अभिव्यक्ति थी। शस्त्रधारी कमाण्डो तो थे ही। और, शास्त्रधारी बिचौलिये अपने नाटक-नौटंकियों-लेखों-भाषणों-पर्चे-पोस्टरों द्वारा मजदूरों में दहशत फैलाने की पूरक भूमिका में रहे।

मिसाल बने सजा, exemplary punishment के बुलबुले में फरवरी 2013 में नोएडा में मजदूरों ने पिन चुभा दी थी और अगले दिन ओखला औद्योगिक क्षेत्र के मजदूरों ने तो इसका बाजा ही बजा दिया था। अटूट रहा है यह सिलसिला। फैलता जा रहा है। जहाँ 600 कमाण्डो तैनात हैं उस आई एम टी मानेसर में ही इस दौरान मुंजाल किरियु, ऑटो लिव, जे एन एस, बैक्सटर, नपीनो ऑटो, अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स, जय उशिन आदि-आदि फैक्ट्रियों में पुरुष और स्त्री मजदूरों की निडरता देखते बनी है। पलवल जिले के पृथला-बघौला औद्योगिक क्षेत्र के मजदूर हों चाहे फरीदाबाद में ध्रुव ग्लोबल और लखानी वरदान ग्रुप फैक्ट्रियों के मजदूर। उद्योग विहार गुड़गाँव में फरवरी 2015 में मजदूरों से डर कर मैनेजर और डायरेक्टर फैक्ट्रियाँ छोड़ कर भागे थे। बिचौलियों को ठोकर मार कर भगाती केरल में मुन्नार चाय बागानों की महिला मजदूरों की निडरता मिसाल है। बिना बिचौलियों के कर्नाटक में बेंगलुरू की गारमेन्ट फैक्ट्रियों की महिला मजदूरों की हलचल से डरी केन्द्र सरकार ने पी एफ के नये नियम कैन्सल किये। होण्डा टपुकड़ा फैक्ट्री मजदूर ..... सऊदी अरब में बिन लादेन समूह के वरकर..... बांग्लादेश में गारमेन्ट वरकर..... दिसम्बर 2015 में तमिल नाडु में प्रिकोल फैक्ट्री के 8 मजदूरों को दोहरे आजीवन कारावास की सजा दी गई और तमिल नाडु में के दौरान 18-20 वर्ष आयु के 2400 निडर मजदूरों ने मैनेजमेन्ट तथा सरकार की नाक में दम किया।

खानापूर्ति-खानापूर्ति-खानापूर्ति

ऐसे में मजदूरों के दायरे से हटने के बाद मारुति सुजुकी मानेसर के जेल में बन्द मजदूरों का मामला खानापूर्तियों का एक सिलसिला बना, जो अब भी जारी है। असंगत बन चुके कानूनों के इस दौर में विधान-संविधान-कानून का दायरा स्वाभाविक तौर पर खानापूर्ति का है। पुलिस की जाँच (लचर जाँच), गवाह (लचर गवाह), गवाही (लचर गवाही), कम्पनी के वकील, सरकार के वकील, जिला जज, हाई कोर्ट जज, सुप्रीम कोर्ट जज, बचाव पक्ष के वकील, पक्ष-विपक्ष के पत्रकार, कम्पनी अधिकारी, सरकारी अधिकारी, एक्टिविस्ट, क्रान्तिकारी ग्रुप, यूनियन लीडर अपनी-अपनी खानापूर्ति करते रहे हैं। सजा भी एक खानापूर्ति क्योंकि सजा का बाजा बज चुका है। खानापूर्ति में जुटे लोगों के लिये अँग्रेजी में एक सटीक मुहावरा है going through the motions.

दोषी ठहराये जाने पर यूनियन लीडरों द्वारा फैक्ट्री कैन्टीनों में एक-दो दिन भोजन के बहिष्कार की घोषणा। सजा सुनाने के बाद मारुति सुजुकी समूह की फक्ट्रियों में एक घण्टे टूल डाउन। सण्डे संघर्षों से आश्वस्त-सी हो चुकी सरकार द्वारा 23 मार्च को आई एम टी मानेसर में यूनियनों को सभा करने देना। आई एम टी और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों की 40 यूनियनों द्वारा फैक्ट्रियों में ए शिफ्ट की समाप्ति के बाद की गई इस सभा में पाँच-सात हजार की उपस्थिति थी। इतने लोगों को देख कर गदगद यूनियन लीडरों द्वारा भाषणों में हाई कोर्ट जाने की बात। वहाँ उपस्थित एक साथी ने इसे चन्दा मीटिंग कहा। आज फैक्ट्रियों में 80-90 प्रतिशत मजदूर टेम्परेरी हैं और इस सभा में नब्बे परसैन्ट लोग परमानेन्ट मजदूर थे। कानून अनुसार परमानेन्ट मजदूर ही फैक्ट्री यूनियन के सदस्य बन सकते हैं। कानून अनुसार टेम्परेरी वरकर फैक्ट्री यूनियन के मेम्बर नहीं बन सकते। फिर 4 अप्रैल को भारत-व्यापी विरोध प्रदर्शन और अन्य देशों में रिहाई की माँग करने वाले दिन गुड़गाँव में लीडरों ने डी सी के माध्यम से राष्ट्रपति को सजा माफ करने का ज्ञापन भेजा।

सिर्फ प्यार ही दे सकते हैं

अस्सी वर्षीय क्रान्तिकारी कोलकाता से गुड़गाँव आये। उनकी मान्यता है कि क्रान्ति को गति देने के लिये लड़ाकू यूनियनों की एकजुटता महत्वपूर्ण है। मारुति सुजुकी मानेसर यूनियन आज एक प्रतीक है लड़ाकू यूनियन का। बुजुर्ग से मिलने मारुति सुजुकी मानेसर यूनियन के दो लीडर आये। बातचीत में बुजुर्ग अन्धी गली, बन्द गली में से निकलने की कोशिशें करते लगे। मारुति सुजुकी मानेसर में 2011-2012 में जीवन्त गतिविधियों में शामिल रहे उन युवा लीडरों ने बार-बार कहा कि काफी कुछ बदल गया है और अब टेम्परेरी वरकरों को वे सिर्फ प्यार ही दे सकते हैं।

यह प्यार भी देख लें। मैनेजमेन्ट-यूनियन तीन वर्षीय

समझौते में 2012 में मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के परमानेन्ट मजदूरों की तनखा में 18800 रुपये की वृद्धि की गई थी। फिर सितम्बर 2015 में हुये तीन वर्षीय समझौते में परमानेन्ट मजदूरों की तनखा में 16000 रुपये की वृद्धि। मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री के युवा परमानेन्ट मजदूरों की तनखा पचास-साठ हजार रुपये के दायरे में है। सितम्बर 2015 में हुये समझौते से मारुति मैनेजमेन्ट इतनी प्रसन्न हुई कि उसने प्रत्येक परमानेन्ट मजदूर को तीन हजार रुपये उपहार में दिये।और, यूनियन लीडरों द्वारा समझौता सुनाने के अगले दिन, 26 सितम्बर को सुबह साढे छह बजे की शिफ्ट में 400 टेम्परेरी वर्कमैन मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते के विरोध में मानेसर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये (टेम्परेरी वर्कमैन, टी डब्लू, जुलाई 2012 के बाद 7 महीने के लिये कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये जाते मजदूर हैं और यह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों के अलावा हैं)। टी डब्लू के बी-शिफ्ट के साथी भी फैक्ट्री गेट पर पहुँच गये। मारुति सुजुकी कम्पनी द्वारा गोद लिये 14 गाँवों के कुछ बन्दे तत्काल वाहनों से फैक्ट्री पहुँचे और बाहर एकत्र मजदूरों से भिड़ गये। पुलिस का हस्तक्षेप। फैक्ट्री के अन्दर लड़ाकू यूनियन ने उत्पादन जारी रखने में मैनेजमेन्ट का सहयोग किया। कम्पनी ने ए-शिफ्ट में सामान्य उत्पादन वाला बयान दिया जबकि टेम्परेरी वर्कमैन के बाहर रहने से ए-शिफ्ट में तीन असेम्बली लाइनों पर 1440 वाहनों की बजाय 781 वाहन ही बने, लाइनें एक-एक कर चली थी। ■

कई बातें कईयों में बातचीतों में

मार्च माह में फरीदाबाद में अनमोल ऑटो इलेक्ट्रिक, शाही एक्सपोर्ट, फ्रिक इण्डिया, के आर रबराइट, ब्ल्यू स्टैम्पिंग, ओरियन्ट इलेक्ट्रिक, जे सी बी, कटलर हैमर, लखानी शूज, हिन्दुस्तान सिरिंज आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें हुई। इस दौरान उद्योग विहार गुड़गाँव में हरसोरिया हैल्थकेयर, ऋचा ग्लोबल, कैलाश रिबन, एशियन हैण्डीक्राफ्ट, चिन्टू क्रियेशन, लोगवैल फोर्ज, अर्जुन ऑटो, माइक फिल्टर, चॉयस, एम डी एच मसाले, गौरव इन्टरनेशनल, ओरचिड ओवरसीज, कौटिल्य एक्सपोर्ट, मोडलामा, रादनिक, पर्ल ग्लोबल, वैम हाईफैशन, रांगी इन्टरनेशनल आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें हुई। आई एम टी मानेसर में मार्च माह के दौरा सिग्मा मोल्डिंग, ग्रोवर सन्स, डिगानिया मेडिकल, इण्डो ऑटोटेक, एस वी प्रिसीजन कम्पोनेन्ट्स, जे बी एम, वीएक्सेस, जे एन एस, हुबरसुन्नर, एफ एम आई ऑटोमोटिव, ज्योति एपरेल्स आदि फैक्ट्रियों के मजदूरों से बातें हुई। दिल्ली मजदूरों से बातें नये ग्रेड से आरम्भ हो कर फैली। मार्च माह में स्विफ्ट, ग्रुप फोर, एस आई एस, सेन्टिनल, एच एम एस आदि सेक्युरिटी सर्विसेज के गार्डों से बातें हुई। बातें एक के-कई के साथ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान, बातचीत के लिये तय दिनों के समय, मजदूर लाइब्रेरी में आमने-सामने हुई। इधर व्हाट्सएप पर आदान-प्रदान बढे हैं। जगह कम के कारण इस बार हम बहुत थोड़ी बातें दे पा रहे हैं।

आरम्भ में स्पष्ट कर दें कि दिल्ली में नये ग्रेड 3 मार्च 2017 से लागु हैं। ***जे एन एस*** (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में भोजन के बाद बोतल में पानी भरने लगी एक लड़की को लाइन पर पहुँचने में दो मिनट की देरी हो गई। दो लाइन लीडरों ने उसे बुरी तरह डाँटा, लाइन से हटा दिया, कहा कि छुट्टी के बाद रुक कर एक्स्ट्रा काम करके जाओगी। लड़की ने मना किया तो एक लाइन लीडर उसे नीचे एच आर डिपार्ट में ले जाने लगी। ठीक है, चलो बोली लड़की तो लाइन लीडर ने उसे धक्का मारा। वो गिर गई, ऑपरेटर उसके पास एकत्र हुये तो लाइन लीडर बोली कि नाटक कर रही है। उसका पैर फ्रैक्चर हो गया है जान कर सब ऑपरेटरों को बहुत दुख हुआ। इस पर सीनियर स्टाफ कुछ नहीं बोला है। ***शाही एक्सपोर्ट*** (15/1 मथुरा रोड़, फरीदाबाद) फैक्ट्री में कार्यरत 4000 वरकरों में 85 प्रतिशत महिला मजदूर हैं और कम्पनी ने एक बस का भी प्रबन्ध नहीं किया है। स्वयं मन्थली ऑटो का प्रबन्ध करती महिला एक ऑटो में 17-20-22 ठूँसी हुई आती-जाती हैं। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं, महिला मजदूर घायल होती रहती हैं। ***हरसोरिया हैलथकेयर*** (110-111 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 250 परमानेन्ट मजदूरों को दिसम्बर-जनवरी-फरवरी में किये ओवर टाइम के पैसे यह कह कर मार्च-अन्त तक नहीं दिये हैं कि कम्पनी के पास पैसे नहीं हैं। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1000 मजदूरों में से कुछ को फरवरी की तनखा 20 मार्च को दी और कुछ को 29 मार्च तक नहीं दी थी। ***डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज*** (251, 275 सैक्टर- 6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 7 मार्च को एक टेम्परेरी वरकर ने एच आर हैड से तनखा और ओवर टाइम समझाने को कहा तो साहब ने ठेकेदार के पास ले जा कर रिजाइन लिखवाने को कहा। तब बन्दे ने साथियों को फोन किया। सब टेम्परेरी वरकर इक्ट्ठे हो कर एच आर विभाग में। फिर सब फैक्ट्री के बाहर। उम्पादन बन्द। प्लॉट 275 में 10 टेम्परेरी के बीच एक परमानेन्ट मजदूर है। फिर 8 मार्च को सुबह की शिफ्ट में टेम्परेरी वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। ***फ्रिक इण्डिया*** (एन एच पी एसी चौक, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 30-40 परमानेन्ट मजदूर और 550 टेम्परेरी वरकर। .....

मई 2017

किस्सा , कैसे , और कविता

बड़ा मस्त लेटा है। ड्युटी नहीं जाना क्या ?

बहुत अच्छी बाजरे की खिचड़ी झीगें के अचार के साथ खाई है। आज ड्युटी ऑफ ! !

बड़े आराम से तो ऑफ ले लेता है। प्रोब्लम नहीं होती क्या ?

आजकल प्रोडक्शन का कुछ डाउन चल रहा है। कुछ तूफान आने वाला है। कुछ एनर्जी जमा कर रहा हूँ ।

हाँ सरिता , तुम भी तो कुछ ऐसे ही कह रहे थे।

मैं तुझे यह समझा रही थी कि हमारे यहाँ काम डाउन हो रहा है। ऐसे समय में लोग कहते हैं कि बेरोजगार होने के दिन आ रहे हैं।

हा-हा-हा ! बेरोजगार हूँ तीन महीने से। इसलिये बेधड़क बोल रहा हूँ। खूब सुन रहा हूँ। और खूब पढ रहा हूँ।

तू तो यार बेरोजगारी को आजादी बना रहा है ! आजादी बना नहीं रहा , आजादी की प्रैक्टिस कर रहा हूँ । आजादी भी एक खेल है। जितनी प्रैक्टिस करो उतनी ही निखरती है। तुम सब भी तो अपने-अपने ढँग से करते हो।

हाँ सुना है, चीन में युवा वरकर मोबाइल फोनों में कवितायें लिख कर एक-दूसरे को भेजते रहते हैं। और यह कवितायें जीवन के हर रस को जीती हैं।

समय को छीन कर गीत लिखने का आनन्द और जिद अपने आप में ही विद्रोह है।

यार तू तो फिर से पहेलियों में बात कर रहा है। कुछ दिन पहले अखबार में एक लेख पढा था। उसमें एक युवा वरकर था जो रोज एक घण्टा निकाल कर कविता लिखता था। उसका कहना था कि उन कविताओं में हर रोज वह बराबरी शब्द को जाँचने और पहचानने की कोशिश में लगा रहता है।

यह तो विद्रोह ही हुआ ।

प्रोडक्शन लाइनों पर बाहर से अचानक काम बन्द होता दिखता है तब बारह सौ-पन्द्रह सौ हम साथियों के बीच में कोई गुनगुनाहट होती है। शब्द भी होते हैं , ताल भी होती है , महसूस भी होती है लेकिन रिकार्ड नहीं की जा सकती, जी जाती है।

कई जगहों का पानी पिया
कभी पेट भी खराब हुआ
इतमिनान से जीना सीखा
औरों ने जब मुझे छुआ।

समय कभी कम लगता है
शायद और समय बनाना है
एक दिन मिल के छुट्टी करो भई
क्षितिज को खींच लाना है।

क्षितिज को खींच लाने की एक कहानी सुनाता हूँ। एक सज्जन पाँच दिन से मिल रहे हैं। हर रोज चाय की दुकान पर मिल जाते हैं। पाँच दिन पहले खूब गाली दे रहे थे। बहुत बुरा हाल है कह कर गहरी-गहरी साँस ले रहे थे। उसके अगले दिन उनके 120 साथयों ने काम बन्द किया। जब मिले तो बोले बुरा हाल है। अगले दिन उनकी कम्पनी की दो फैक्ट्रियों में उनके साथियों ने काम बन्द किया।

अब क्या बोले वो ?

बड़ी गर्मी है। आओ तुम्हें भी चाय पिलाता हूँ। मूड अच्छा है। फिर कुछ देर बाद बोले , क्या हमारा दम दिखा ?

तीन दिन में ही इतने उतार-चढाव ! कभी-कभी लगता है कि जब हम एक-दूसरे से मिलते हैं तब कोई उतार में और कोई चढाव में होते हैं। कोई पीछे देख रहे होते हैं और कोई आगे देख रहे होते हैं।

कविता, गीत इसी समय को पकड़ लेते हैं। उतार-चढाव के सन्धि-काल को पकड़ लेते हैं। यह सज्जन हजार साथियों के बीच में तैर रहे हैं। आसानी से। कैसे ?

तीन महीने से काम में नहीं हूँ , कविता में हूँ और
जिसको जो कहना है बेझिझक मुझ से बोलो।
अपने सारे किस्से और कैसे सुना डालो।

लगता है कि तीन 'क' से परिवेश बनता है।
किस्से, कैसे , और कविता। इन तीनों के उतार-
चढाव, टक्कर और जुगलबन्दी हमारे बीच में से
गुजरती है और परिवेश की महक रचती है।

जहाँ जना और बड़ा हुआ
छूटे हैं कई साथ मेरे
तो नये रिश्ते बना सकूँ
सो फैले हुये हैं हाथ मेरे ।

एक रिपोर्ट

एक मित्र ने ***एस पी एम ऑटोकॉम्प सिस्ट्म्स*** (187 सैक्टर-3 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री मैनेजमेन्ट द्वारा मानेसर थाने में दायर एफ आई आर की फोटो व्हाट्सएप पर भेजी। सुश्री चेतना ने 6.4.2017 के टाइम्स ऑफ इण्डिया में इस सन्दर्भ में समाचार दिया जहाँ से हम ने जानकारी ली है।

500 से ज्यादा मजदूर एस पी एम ऑटोकॉम्प फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। बुधवार, 5 अप्रैल को साँय 7 बजे आरम्भ हुई शिफ्ट में 37 वर्षीय शत्रुघ्न भी थे। मैनेजमेन्ट के अनुसार तीन वर्ष से फैक्ट्री में काम कर रहे शत्रुघ्न हैल्पर थे और ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे गये थे। वीरवार को सवेरे 4 बजे शत्रुघ्न कनवेयर बैल्ट में फँस गये। मेन्टेनैन्स वरकरों ने कनवेयर बैल्ट को काट कर शत्रुघ्न को निकाला। रॉकलैण्ड अस्पताल ने 'मृत लाया गया' कहा। कम्पनी ने पुलिस को सूचना दी और जाँच अधिकारी आया तथा साढे नौ बजे फैक्ट्री से चला गया।

पुलिस अधिकारी के फैक्ट्री से निकलने के मिनटों के अन्दर होण्डा, मारुति सुजुकी, मुंजाल शोवा, एफ एम आई ऑटोमोटिव, इन्ड्युरेन्स टैक्नोलोजीज, बेलसोनिका ऑटोकम्पोनेन्ट्स आदि फैक्ट्रियों के मजदूर एस पी एम ऑटोकॉम्प फैक्ट्री में दाखिल हो गये। फैक्ट्री में उत्पादन बन्द हो गया और फिर रात की शिफ्ट में भी बन्द रहा। क्षेत्र की अन्य फैक्ट्रियों में भी उत्पादन प्रभावित।

बहुत जल्दी , दस बजे के करीब मानेसर थानेदार 150 पुलिसवालों के साथ एस पी एम ऑटोकॉम्प फैक्ट्री पहुँचा और बोला कि विरोध शांति से करो। श्रम विभाग के अधिकारी भी पहुँच गये। साँय साढे पाँच बजे बताया गया : शत्रुघ्न की मृत्यु की एवज में आठ लाख रुपये, शत्रुघ्न की बेटी के लिये तीन लाख रुपये बैंक में फिक्स्ड डिपोजिट में, शत्रुघ्न के बेटे के 21 वर्ष आयु का होने तक 5000 रुपये हर महीने परिवार को , शत्रुघ्न के दोनों बच्चों की शिक्षा का खर्च ,यह सब एस पी एम ऑटोकॉम्प कम्पनी देगी। शत्रुघ्न की पी एफ राशि तथा अन्य बेनेफिट इनके अतिरिक्त।और, गुड़गाँव (दक्षिण) के डी सी पी ने पुलिस चौकसी जारी रखने की बात की।

आई एम टी मानेसर और पुणे में फैक्ट्रियों वाली एस पी एम ऑटोकॉम्प कम्पनी एग्जास्ट मनीफोल्ड का उत्पादन कर मारुति सुजुकी, टाटा मोटर्स, हुन्डई, फोर्ड, जनरल मोटर, फियेट, होण्डा कार फैक्ट्रियों को तथा डेम्लर, अशोक लेलैण्ड, वाल्वो, आयशर, टाटा क्युमिन्स बस-ट्रक फैक्ट्रियों को भेजती है।

टारगेट नहीं बनना

2002 में , जब 15 वर्ष आयु थी तब ***शिवम् ऑटोटेक लिमिटेड***, बिनौला , गुड़गाँव फैक्ट्री में लगा। साढे तीन साल लगातार नाइट ड्युटी की – 12 घण्टे की शिफ्ट।

शिवम् ऑटोटेक, बिनौला फैक्ट्री में करीब 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। जुलाई 2015 में मैनेजमेन्ट ने पुराने वरकर निकालने शुरू किये। दिन वाली 12 घण्टे ड्युटी के बाद 5-7 वर्ष से फैक्ट्री में नौकरी कर रहे मजदूर रात को अपने निवास जाते और सुबह ड्युटी के लिये पहुँचते तो गेट बन्द।

आपस में चर्चाओं के बाद 15 जुलाई 2015 को दिन की शिफ्ट आरम्भ हुई तब 300 वरकर कार्यस्थल पर जाने की बजाय फैक्ट्री के अन्दर पार्क में जा कर बैठ गये। मैनेजमेन्ट हड़बड़ा गई। काम बन्द हुये 8 घण्टे हो गये तब पार्क में आ कर साहबों ने आश्वासन दिया कि कोई निकाला नहीं जायेगा , काम करो। हम 6 लड़के आगे हो कर बोल रहे थे। हम 6 राजी हो गये और हम सब लड़कों को बोले कि काम शुरू करो।

काम आरम्भ होने के बाद, एक-एक करके हम 6 को मैनेजमेन्ट ने बुलाया। मैं गया तब तक 4 के रिजाइन लिखवा लिये थे। मैंने मना कर दिया। शिफ्ट समाप्ति के बाद बिनौला गाँव में मेरे कमरे पर बाउन्सरों के साथ ठेकेदार कम्पनी वाला आया। मुझे डराया, धमकाया, गन दिखा कर इस्तीफा लिखवाया और बोले कि फैक्ट्री के पास दिखाई दिया तो मार देंगे। मैंने इलाका ही छोड़ दिया।

जबरन इस्तीफों के खिलाफ नाइट शिफ्ट वालों ने काम बन्द कर दिया तब बहका दिये कि वे 6 तो पैसे ले गये। काम शुरू हो गया।

कई बातें कईयों में बातचीतों में

★ ***सुपर ऑटो*** (80 सैक्टर-6 , फरीदाबाद) फैक्ट्री का मजदूर 11 अप्रैल को बोला कि सुन कर ताज्जुब होगा कि 12 घण्टे के 300 रुपये देते हैं जबकि हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम 8 घण्टे के लिये 318 रुपये है । ***सुपर ऑटो*** (50 सैक्टर-6 वाली) फैक्ट्री के नाइट शिफ्ट से छूटे वरकरों ने 25 अप्रैल को बताया कि 10 तारीख को तनखा लेने के तीन दिन बाद दोनों शिफ्टों के मजदूरों ने काम बन्द किया । रात वालों के निकलने के बाद जब सुबह 7 बजे दिन वाले फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये तो दो घण्टे के अन्दर जी एम , एम डी सब आ गये । दो सौ रुपये बढाये । और , 2 मई को ***इकोकैट*** (प्लॉट 4 , 20 वाँ मील पत्थर , मथुरा रोड़ , फरीदाबाद) फैक्ट्री से नाइट शिफ्ट में 12 घण्टे ड्युटी कर लौटा मजदूर बात कर रहा था तब ***सुपर ऑटो*** (13 सैक्टर-6) फैक्ट्री में रात की 12 घण्टे की शिफ्ट करके आये वरकर बातचीत में शामिल हो गये : 13 अप्रैल को क्वालिटी वाले 15 लड़कों ने ऊपर जा कर साहब से तनखा बढाने को कहा तो एक का हिसाब कर दिया । वी एम सी के 120 ऑपरेटरों में विचार हुआ । फैक्ट्री में हँगामा करेंगे तो कुछ का गेट बन्द होगा । क्या करें ? आपस में सलाह की और नाइट शिफ्ट के 60 वी एम सी ऑपरेटर साँय 7 बजे फैक्ट्री गये ही नहीं । रात को ही एम डी ने कुछ वरकरों को फोन किये पर किसी मजदूर ने साहब का फोन रिसीव नहीं किया । सुबह ही बात करेंगे । सुबह 7 वाले वी एम सी ऑपरेटर भी अन्दर नहीं गये तो फिर साहब के फोन – आओ बात करो । दस बजे दो पुरानों को अन्दर भेजा । ग्रेड दो पर साहब बोला कि देखेंगे , काम शुरू करो । इधर 27 अप्रैल को साहब बोले कि ऑपरेटर को तनखा 7800 देंगे जबकि हैल्पर का ही न्यूनतम वेतन 8280 रुपये है । आपस में सलाह कर रहे हैं , तनखा लेने के बाद देखेंगे । फैक्ट्री में प्रेशर डाई कास्टिंग (पी डी सी) , सी एन सी , पेन्ट शॉप भी हैं । पी डी सी वाले काम बन्द करते हैं तब फैक्ट्री में उत्पादन रुक जाता है । वे काम बन्द करते रहते हैं , होली से पहले भी उन्होंने बन्द किया था , उनकी तनखा औरों से कुछ ज्यादा है, ओवर टाइम के पैसे उन्हें भी दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से । सुपर ऑटो ग्रुप की फैक्ट्रियों में जनवरी 2017 से पहले हैल्परों की तनखा 5000 और ऑपरेटरों की 6000-6500 रुपये थी । जनवरी में एक रोज दोनों शिफ्टों में काम बन्द किया तब ऑपरेटरों की तनखा 7100 की । मार्च में 300 बढाये । जनवरी से तनखा बैंक में भेजने लगे हैं तब से तनखा तथा ओवर टाइम एक साथ भेज कर निर्धारित न्यूनतम से ज्यादा वेतन दिखाने लगे हैं ।

★ चार दिन पावर प्रैस पर काम किया उसके पैसे नहीं दे रहे. ....दुर्भाग्य से एस्कोर्ट्स में था..... बहुत दूर , पलवल ड्युटी कर रहा हूँ..... फ्री है कहने पर , मैं पेपर निकालने के लिये पैसे देता हूँ. .... पोते को रेल दिखाने आया बुजुर्ग बोला कि 13 साल से कटलर हैमर में परमानेन्ट मजदूरों का मुँह बन्द कर रखा है..... प्रेस्को-मेक ऑटोकॉम्प (9 डी सैक्टर-6 , फरीदाबाद) ऐसी कम्पनी है कि बीमार हो जाओ और चार दिन नहीं जाओ तो कार्ड रोक देते हैं चाहे दस वर्ष से काम कर रहे हों..... काले कुर्ते-पजामे में तैश में युवाः ई एस आई मेडिकल कॉलेज में मजदूरों के साथ बहुत दुर्व्यवहार! किस फैक्ट्री से हो ? फैक्ट्री कोई हो , ई एस आई के लिये पैसा तो कटता है ..... विंग्स ऑटोमोबाइल प्रोडक्ट्स (डी एल एफ से 31 सैक्टर-6 पहुँची) फैक्ट्री मजदूरों के बहुत अनुभव हैं ।

★ ***जगसन पॉल फार्मास्युटिकल्स*** (12/4 मथुरा रोड़ , फरीदाबाद) फैक्ट्री में 450 वरकर थे , अब 35 हैं , दवाइयाँ बाहर बनती हैं , मोहर और मार्केटिंग यहाँ की ..... बदरपुर टोल पर 100 कर्मियों को 12 घण्टे ड्युटी पर महीने के 8500 रुपये..... ओखला फेज-2 में दो महीने की तनखा फँसी है , अब फरीदाबाद में लार्सन एण्ड टुब्रो में लगा हूँ.... ग्रुप फोर गार्ड : यह पेपर नहीं , धरोहर है ।

★ बन्द पड़ी फैक्ट्री (873 उद्योग विहार फेज-1 , गुड़गाँव) में साँस की तकलीफ से परेशान गार्ड ड्युटी जा रहा..... रात 12 घण्टे ड्युटी कर आ रहा गार्ड : स्पिरिट क्लोथिंग (549 उद्योग विहार फेज-5) में साढे तीन साल नौकरी की , अब फण्ड के पैसे निकालने का फार्म यह कह कर नहीं भर रहे कि रजिस्टर नहीं मिल रहा..... ***क्वाट्रो ग्लोबल सर्विस*** (119 उद्योग विहार फेज-1) में ***ट्रिग सेक्युरिटी*** के गार्ड थे , दो साल के फण्ड के पैसे निकालने का फार्म यह कह कर नहीं भर रहे कि नौकरी छोड़ गया जी एम पी एफ खा गया ..... कैलाश रिबन वरकरः हर जगह भ्रष्टाचार है. ..... और ***कोका कोला/एनरिच एग्रो*** (276-277 उद्योग विहार फेज-2) के मजदूर बातचीत में शामिल हो गये : ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 250-300 वरकरों की तनखा 5-6000 रुपये और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट , ओवर टाइम सिंगल रेट से । कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 250-300 के बैंक खातों में सही रकम भेजते हैं पर फिर साहब लोग ''ज्यादा पैसे भेजे हैं'' कह कर 800-1000 रुपये वापस लेते हैं..... ***नपीनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स*** (753 उद्योग विहार फेज-5) मजदूरों ने समूहों में बातें की। सब टेम्परेरी निकालने के बाद अब यहाँ 150 परमानेन्ट मजदूर हैं ।.....

जून 2017

हमारे बीच में कवि बहुत हैं

यार नये ग्रेड के लिये नाटक बहुत कर रहे हैं।

क्या बोल रहे हैं ?

(15-20 जनों का ग्रुप बन चुका था।)

बोलते हैं कोर्ट से स्टे है।

हर वक्त की तरह पहले झूठ से शुरू करते हैं। फिर बोलेंगे कि जब सब देंगे तब हम देंगे। फिर कहेंगे फैक्ट्री यहाँ बन्द हो जायेगी और दूसरी जगह ले जायेंगे।

मेरा कहना यह है कि एन सी आर का एक ग्रेड होना चाहिये। फिर उनकी भागमभाग कम हो जायेगी।

(ग्रुप बढ कर 30-35 का हो गया था।)

अब मेरा यह कहना है कि सब तीन दिन छुट्टी करते हैं। मैं तो कहूँ छुट्टी करो , खाओ-पीओ मौज करा, खूब मिलो एक-दूसरे से , परिवारों को ले कर रास्तों में सैर करो , रात को ढोल बजाओ और नाचो-गाओ। तीन दिन में सब को नया ग्रेड देने लगेंगे।

(बढते ग्रुप में सहमति , हँसी , कोलाहल।)

यह अपने आप में एक अद्‌भुत दृश्य होगा। हम पाँच लाख, हमारे परिवार पूरे इन्डस्ट्रीयल एरिया को बन्द कर छुट्टी मनायें , जश्न मनायें , उल्लास में रहें और नतीजा है मैनेजमेन्टों में दहशत।

ऐसे माहौल जगह-जगह बनते रहते हैं पर आपकी यह पाँच लाख परिवारों की बात तो अखाड़ा ही बदल देती है।

पन्द्रह-बीस लाख लोग रात को जाग रहे हैं , गा रहे हैं । वाह !!

(ग्रुप अब तक बहुत बड़ा हो चुका था।)

पिछली बार का नया ग्रेड कुछ साल पहले आया था तो अपने आप तो कम्पनियों ने लागू नहीं किया था।

हाँ , हमारे ब्लॉक में पाँच फैक्ट्रियों में तो एक साथ काम बन्द किया तब ग्रेड लागू हुआ था।

कितनी ही फैक्ट्रियों में अन्दर जा कर बैठे थे। सुनो ! तीस साल से काम कर रहा हूँ। ग्रेड हो चाहे और कुछ , देते कोई नहीं हैं , लेने होते हैं। लेने वालों जैसी बात करो।

मैं आप सब के सामने कुछ मेरी यादें ताजा करना चाहता हूँ।

अब आप कितनी पुरानी यादें ताजा करना चाहते हो?

ज्यादा पुरानी नहीं हैं बहन। दो साल पहले की हैं, 2015 की। शायद आप लोगों को याद भी हैं। फरवरी का महीना। फुल स्वैटर छोड़ कर हाफ स्वैटर में आ चुके थे। चेहरे खुले थे। वसन्त की महक चारों तरफ।

दादा , आप तो कवि हो । याद कर रहे हो या कल्पना में हो।

हा-हा !! याद और कल्पना का संगम है यह। माहौल बहुत अच्छा हो गया था। बात पाँच घण्टे से शुरू हुई थी। खूब मजा आया। मैनेजर और डायरेक्टर फैक्ट्रियाँ छोड़ कर भाग गये थे। सिपाही भी वसन्त में मगन थे।

दादा , याद आ गई हमें भी। उसी माहौल में हम पले। फैक्ट्रियों में मैनेजरों-सुपरवाइजरों की गाली-गलौज बन्द पाई थी हमने। काम शुरू ही किया था और सुनने में आया था कि ऐसा माहौल कभी-कभी बनता है।

मेरे नौजवान साथी। यह माहौल बनता है। फिर टूटता है। फिर बनाना पड़ता है।

यहाँ पर मेरी एक बात पर गौर कीजिये। टारगेट और टारेगट बढाना निरन्तर है। मैनेजमेन्ट इसलिये मैनेजमेन्ट है। कोई अपने आप से , अपने मन से , अपनी बु‌ि से अपना शोषण तो बढाने से रहा। इसलिये गाली गलौज बार.बार आ जाती है। इसलिये ये बार.बार बनाना पड़ता है। माहौल।

(पचास-साठ के इस ग्रुप का माहौल उत्तेजना और गम्भीरता में झूल रहा था।)

यह बात आज मैं रात की बस में ले जाऊँगा।

रात की बस ! कौनसी बस में चढते हो ?

हम सब की अपनी-अपनी बस हैं। रूट अलग-अलग हैं , टोलियाँ अलग-अलग हैं। लेकिन साथी, चर्चायें, बहसें , गीत और कविता आड़ी-तिरछी होती सब रूटों से , सब टोलियों से गुजरती हैं। आजकल टेम्परेरी ड्राइवरों-कण्डक्टरों की हड़ताल के कारण हमारी बस में हमारी टोली बहुत बड़ी हो गई है। बहुत-ही मजा!

यहाँ पर खड़े हो कर ऐसा लग रहा है जैसे कि तीन-चार में शुरू हुई बातचीत दस-पन्द्रह , तीस-चालीस , पचास-साठ , तीन सौ , सात सौ होते हुये कितनी तेजी से लाखों में बहने लगती है।

और , हर कथा वाचक , हर वर्णन कर्ता , हर बयान करने वाली , हर टोकने वाला , हर विरोधी , हर भिन्न मतावलम्बी , और हर कवि छाप छोड़ते हैं , घना करते हैं , गति बदलते हैं , घुमाव लाते हैं , और नई ऊर्जा देते हैं। यह माहौल है।

इन मौकों में ये माहौल अपने परिचय देते हैं। लाखों की साँसों की ऊष्मा को महसूस कराते हैं और कल्पनाओं को बेलगाम कर देते हैं।

हमारे बीच कवि बहुत हैं।

रात 9½ बस में

सवा नौ बजे छूटे। बस पकड़ी जिसमें रात में एक पुलिसवाले की ड्युटी रहती है। इसमें 12 घण्टे की ड्युटी से छूटे मजदूर होते हैं। हर दूसरे-तीसरे दिन बस में खूब चर्चायें हो जाती हैं।

शनिवार , 20 मई को बस में भीड़ थी। एक ने पूछा कि भई ये ओरेंज बसों की हड़ताल किसलिये है और कब तक चलेगी। इस पर दूसरे ने कहा : केजरीवाल ने सत्ता में आने पर ठेकेदारी खत्म कर सब वरकरों को परमानेन्ट करने की बात की थी , नहीं किया इसलिये इन बसों के ड्राइवर और कण्डक्टर हड़ताल पर हैं। तीसरा बोला : भाई, मोदी ने तुम्हारे खाते में पन्द्रह लाख डाल दिये क्या ? तब पहले वाला बोला : मैं मुसलमान हूँ और यह हिन्दू है , इसके खाते में मोदी ने 15 लाख नहीं , बीस लाख डाले हैं और मेरे खाते में तो एक पैसा नहीं डाला। इतना कहते ही पूरी बस में आग की तरह चर्चा फैल गई : ऐसे ही लोग हिन्दू-मुसलमान करके दँगा करवाते हैं। बस में पीछे से आवाज आई : भई तुम्हें कितनी तनखा मिलती है ? दस हजार। तो भई तुम्हें तो न्यूनतम वेतन भी नहीं मिलता। तब पाँचवीं आवाज: मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम मोदी सपोर्टर हो कि केजवरीवाल सपोर्टर। भाई , न मोदी और न केजरीवाल सपोर्टर हूँ। बारह घण्टे रोज ड्युटी करता हूँ , खर्चा नहीं चलता। बीबी-बच्चे तो पल रहे होंगे ! कहाँ पल रहे हैं ? आठ बाई आठ के कमरे में रहता हूँ कहते हुये पूरी कहानी सुना डाली। सातवाँ बोला : अरे भई , यह नेता-वेता कोई काम नहीं आयेगा , यह सब बकवास करते हैं , हमें तो 12-14 घण्टे काम करके ही पेट भरना है। आठवाँ: तुम ने किस पार्टी को वोट दिया ? दूसरा : मैंने तो किसी को नहीं दिया । तब आठवाँ : फिर आप न्यूनतम वेतन, सरकार, नेताओं की बात क्यों कर रहे हैं ? ऐसी बातें ही तो हमारी जिन्दगी से निकल रही हैं, यह नहीं करें तो क्या करें।

स्टैण्ड आते , लोग उतरते , गोविन्दपुरी में काफी उतर गये। ओरेंज बसों की हड़ताल क्यों और कब तक से चर्चा छेड़ने वाला बस से उतर कर बोला : मोदी-योगी-केजरीवाल तो गये !

(ओरेंज बस ड्राइवरों और कण्डक्टरों की हड़ताल दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च से निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिये जाने के विरोध में थी।)

म्यांमार (बर्मा) में

म्यांमार में 2011 से पुरानी राजधानी यांगोन (रंगून) के निकट गारमेन्ट फैक्ट्रियाँ तेजी से बढी हैं। निर्यात 2010 से 2014 के बीच पाँच गुणा बढा। फैक्ट्रियों में नब्बे प्रतिशत वरकर महिला मजदूर हैं। दो लाख वरकरों की चाणचक्क हड़तालों की तीन लहरें 2015 तक उभर चुकी थी। मजदूरों को नियंत्रित करने के लिये सरकार ने 2011 में यूनियनें लीगल की। और, समझौता वार्ताओं के अखाड़े में मजदूरों को खींच कर कन्ट्रोल करने के लिये यूनियनें प्रयासरत हैं। लेकिन यूनियनों पर वरकर विश्वास नहीं करते, बल्कि अविश्वास करते हैं। इधर 23 फरवरी 2017 को हाँगझाऊ हन्डरेड-टैक्स गारमेन्ट फैक्ट्री पर मजदूरों ने आक्रमण किया। गाड़ियाँ तोड़ी , शीशे तोड़े , मशीनें तोड़ी , मैनेजर की धुनाई की और 7 सुपरवाइजरों को पकड़ लिया। चीन सरकार के दूतावास के हस्तक्षेप पर पुलिस ने मजदूरों पर हमला कर सुपरवाइजरों को छुड़ाया।

(एक मित्र ने इन्टरनेट पर लिबकॉम की साइट से सामग्री जुटाई।)

कई बातें कईयों में बातचीतों में

★ ***मैक्सशॉप*** (10 , 27 सैक्टर-6 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम । दुगुनी दर से ओवर टाइम के लिये आपस में चर्चा शुरू की । मीटिंगें करने ही लगे थे । एच आर वालों ने कुछ अपने बन्दे भर्ती किये थे , वे मीटिंगों में पहुँचे , और उन्होंने खुफियागिरी की । मैनेजमेन्ट को निशाना मिला । तब कम्पनी ने 50 को निशाना बनाया और इधर मार्च में 15 दिन में हम 50 को निकाला । पहले एक-एक , दो-दो करके निकाले और फिर एक रोज 10 को एच आर विभाग में बुलाया । दस को फैक्ट्री से बाहर किया जहाँ बाउन्सर थे । गाड़ियों में इधर-उधर ले गये और जबरन इस्तीफे लिखवाये ।

भरोसे के लोगों के बीच काफी समय से चर्चायें कर रहे थे । बातें फैलती थी । कम्पनी पर दबाव डालने में सफल होते थे । कोई निशाना नहीं बनता था । मैनेजमेन्ट को आक्रमण के लिये टारगेट नहीं मिलता था । मीटिंगों ने सब गड़बड़ा दिया । मैनेजमेन्ट के लिये मीटिंग आसानी से चिन्हित करने का जरिया है । कम्पनी के बन्दे मीटिंग में फोन से वीडियो तक बना लेते हैं । ऐसा बेलसोनिका और ट्रैक कम्पोनेन्ट्स में भी हुआ था ।

भरोसे के लोगों के जोड़ बड़ी सँख्या के बीच तालमेल बढाने के सहज, सरल , आसान तरीके लगते हैं ।

ओरियन कॉनमर्क्स (90 उद्योग विहार फेज-1) लैदर वरकर: फैक्ट्री में 600 मजदूर बन्धुआ की तरह हैं । फैक्ट्री के अन्दर जाने के बाद बाहर निकलने देना कम्पनी की मर्जी । रोज सुबह साढे नौ बजे से रात सवा तीन बजे तक काम, रविवार को साँय 6 , रात 9 बजे तक । फुडिंग के 100 रुपये पर जिस दिन रात 11 बजे छोड़ते हैं तब 50 रुपये । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । पागल हो जाते हैं , कई वरकर बेहोश हो कर गिर जाते हैं । पन्द्रह दिन में बैंक खातों में तनखा, ओवर टाइम , फुडिंग के पैसे अलग-अलग करके भेजते हैं । एम डी , मैंगो , टिम्बरलैण्ड बायर हैं । मैनेजमेन्ट कहती है कि बायर पूछें तो ओवर टाइम 2 घण्टे तथा भुगतान दुगुनी दर से बताना । पिछले वर्ष हम ने तीन दिन काम बन्द किया था पर बात बनी नहीं , 20-30 जो लाइट में आये उन्हें निकाल दिया.....

वर्दी में वरकरों से पूछा : ***फ्रिक इंडिया*** में परमानेन्ट हो क्या? नहीं । टेम्परेरी हैं । जिन्हें फैक्ट्री में काम करते 5 साल हो जाते हैं उन्हें वर्दी देते हैं । वैसे दस साल से काम कर रहे मजदूर भी टेम्परेरी हैं । यूनियन ने फरवरी में डिमाण्ड नोटिस दिया और लीडरों ने बताया कि इस बार टेम्परेरी की बात नहीं हैं , एम डी से बात हुई है , 2019 के डिमाण्ड नोटिस में यूनियन टेम्परेरी वरकरों की बातें रखेगी । और , रिटायरमेन्ट के नजदीक फ्रिक इंडिया के एक परमानेन्ट मजदूर ने कहा कि यूनियन के 60 मेम्बर हैं.....

गौरव इन्टरनेशनल (208 उद्योग विहार फेज-1) फैक्ट्री में होली से पहले की बात है । घण्टे में 40 पीस की जगह 55 पीस के लिये प्रोडक्शन इन्चार्ज ने गाली दी । उल्टी गाली पर मारपीट हो गई । मजदूरों ने प्रोडक्शन इन्चार्ज की धुनाई कर दी । तब से साहबों द्वारा गाली देना बन्द है । गौरव इन्टरनेशनल की 411 उद्योग विहार फेज-3 फैक्ट्री में गालीगलौज बहुत ज्यादा है , वहाँ भी लड़ाई होगी , कभी भी । लड़ाई का कारण टरगेट बढाना । प्रोडक्शन में कम्पनी स्वयं रखती है और 7 महीने में ब्रेक । आजकल डबल-ट्रिपल नाइट हो जाती है : सुबह 9½ से अगली सुबह 6 बजे तक काम करो, फैक्ट्री में ही सो जाओ , 9½ बजे कार्ड पंच कर फिर काम में लग जाओ । महीने में 180-250 घण्टे ओवर टाइम । तबीयत खराब होनी ही है । कम्पनी फुडिंग का एक पैसा नहीं देती । प्रोडक्शन में महिला मजदूरों को रात 10 बजे तक छोड़ देते हैं । फिनिशिंग में वरकर ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखते हैं । फिनिशिंग में इस समय 250-300 घण्टे महीने में ओवर टाइम...

★ कई वर्ष पहले की बात है । तब मैं ***गौरव इन्टरनेशनल*** (506 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में काम करता था । औरतों को टोकन दे कर बाथरूम से दो मिनट में आने को कहते । टोकन तोड़ कर फेंकने में मैं आगे रहा । एक को जबरदस्ती निकाल रहे थे । मैंने एतराज किया । झूठ बोले कि उसे काम करना नहीं आता । बाद में उससे जबरन इस्तीफा लिखवाया । इस पर हम 700 वरकर फैक्ट्री से निकले । उद्योग विहार थाने गये पर पैसों के जोर ने वहाँ रफादफा कर दिया तो हम गुड़गाँव थाने गये । कोर्ट गये । पैसे एकत्र कर वकील को 50 हजार रुपये दिये पर उसने कुछ नहीं किया । जज पर भी पैसों का जोर चला । एक हफ्ते 700 मजदूर फैक्ट्री से बाहर रहे । ऐसे में भी मैं डटा रहा । लेकिन दलदल में धँसते जाने की बजाय कारीगर पीछे हटे । तब मैंने खुद अपना इस्तीफा लिख दिया ।

MESL अनुभवें

24 अप्रैल को फैक्ट्री पहुँचे तो बेगमपुर खटोला , जयपुर मार्ग, गुड़गाँव स्थित ***मार्क एग्जास्ट सिस्टम्स लिमिटेड*** मैनेजमेन्ट ने ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लिया । बाहर किये इन वरकरों से मई में तीन रोज हमारी बाचीतें हुई और व्हाट्सएप पर सम्पर्क रहा है । यह मजदूर 5 जून को भी फैक्ट्री के बाहर थे ।

1993 में मारुति की हिस्सेदारी में संयुक्त उपक्रम के तौर पर MESL की स्थापना हुई । आज कम्पनी की सात फैक्ट्रियाँ हैं ।

2001 से बेगमपुर खटोला फैक्ट्री में यूनियन , 82 परमानेन्ट मजदूर सदस्य । वर्ष के आरम्भ में यूनियन का चुनाव और नये नेताओं द्वारा मैनेजमेन्ट से वेतन वृद्धि का समझौता । एग्रीमेन्ट के लिये जब दबाव बनाना होता है तब टेम्परेरी वरकरों को आगे करके यूनियन लीडर काम बन्द करवा देते हैं , एक-दो घण्टे बाहर बैठा देते हैं , कैन्टीन बन्द करवा देते हैं । इस प्रकार जनवरी 2016 से उत्पादन 100 की जगह 150 पीस करने पर परमानेन्ट मजदूरों के प्रोडक्शन इन्सेन्टिव में 2500 रुपये की वृद्धि । नया बोझ टेम्परेरी वरकरों पर और उनका एक पैसा नहीं बढाया । परमानेन्ट मजदूर ना के बराबर उत्पादन करते हैं , वे टेम्परेरी वरकरों से काम करवाते हैं । परमानेन्ट मजदूरों की तनखा 60-70 हजार रुपये है । टेम्परेरी में हैल्पर की तनखा 8280 रुपये और वैल्डर की 8676 रुपये ।

MESL में 15 वर्ष से अधिक समय से काम कर रहे मजदूर भी टेम्परेरी वरकर हैं । दिवाली पर 2016 में बोनस मात्र 3500-4000 रुपये दिया । टेम्परेरी वरकरों ने यूनियन बनाने का तय किया । दिसम्बर 2016 में 7 वरकर एक केन्द्रीय यूनियन के जिला स्तर लीडर से मिले । सदस्यता के 110 रुपये प्रत्येक के हिसाब से नेता ने 500 मजदूरों से पैसे लिये । और शीघ्र ही ''मार्क एग्जास्ट ठेका श्रमिक संगठन'', रजिस्ट्रेशन नम्बर 2045 के कागज आ गये । टेम्परेरी वरकरों के लीगल एडवाइजर बने केन्द्रीय यूनियन के नेता ने फिर कुछ दिन बाद मजदूरों को बताया कि रजिस्ट्रेशन कैन्सल हो गया है । और , अब केन्द्रीय यूनियन का वह लीडर मार्क एग्जास्ट मैनेजमेन्ट का लीगल एडवाइजर है ।

रजिस्ट्रेशन कागजों में 26 टेम्परेरी वरकरों के नाम थे । परमानेन्ट मजदूरों की यूनियन के प्रधान ने उन पर डोरे डाले पर वे 26 काबू में नहीं आये । मार्क एग्जास्ट मैनेजमेन्ट ने माल स्टॉक करने के लिये ओवर टाइम बढाया , महीने में 25-50 की जगह 80-100 घण्टे किया । फिर 24 अप्रैल को 500 टेम्परेरी वरकर बाहर किये । और , 24 अप्रैल से 82 परमानेन्ट मजदूरों के संग स्टाफ के 150 लोग ट्रॉली खींच रहे हैं – पहले एसी में बैठे रहते थे । करीब 200 नये मजदूर भर्ती और 24 अप्रैल से फैक्ट्री में उत्पादन जारी है ।

मार्क एग्जास्ट मैनेजमेन्ट पहले ही फैक्ट्री गेट से 200 मीटर दूर का स्टे अदालत से ले आई थी जिसका पता टेम्परेरी वरकरों को 24 अप्रैल को लगा । पुलिस । दूर तम्बू के लिये छत्रछाया दूसरी केन्द्रीय यूनियन के एक लीडर ने प्रदान की और वे श्रम विभाग में पैरवी करने लगे ।

बाहर किये 500 मजदूरों के पास ठेकेदार कम्पनियों के पत्र आने लगे । किसी पत्र में 24 अप्रैल से बिना बताये अनुपस्थिति का जिक्र । किसी पत्र में 31 मार्च को ठेका समाप्ति की चर्चा के बाद कर्नाटक में बेंगलुरू ट्रान्सफर की बात । और श्रम विभाग में तारीख पर तारीख । दूसरी केन्द्रीय यूनियन के बुलावे पर अलग-अलग फैक्ट्रियों के यूनियन लीडर मार्क एग्जास्ट के 500 वरकरों को भाषण देने आने लगे । यह नेता फैक्ट्री स्तर पर मार्क एग्जास्ट फैक्ट्री में काम जारी रखे यूनियन लीडरों के हूबहू । खैर । छपवा कर पर्चे बाँटें । और , 29-30 मई को केन्दीय यूनियन के वार्षिक अनुष्ठान में शामिल हो कर , जिला प्रशासन कार्यालय के सम्मुख भूख हड़ताल और धरना को मार्क एग्जास्ट के 500 मजदूरों ने सफल बनाया ।

श्रम विभाग में 11 मई के बाद 19 मई की तारीख और फिर 23 , 29 , 31 की तारीख । फाइनल तारीख बताया था 31 मई को । और, 31 को मैनेजमेन्ट के लोग बीमार हो गये – 5 जून की तारीख । फिर 8 जून की तारीख..... मार्क एग्जास्ट कम्पनी ने मार्च माह के ओवर टाइम के पैसे और अप्रैल के 23 दिनों की तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे 5 जून तक 500 टेम्परेरी वरकरों के खातों में नहीं भेजे थे – मैनेजमेन्ट श्रम विभाग में एक-दो दिन में भेज देने की कहती रही हैं ।

जुलाई 2017

ज्ञान और विशेष कौशल *बुद्धि* में टकराव

भइया, अपने आप को ज्ञानी समझो।

क्यों ?

ज्ञानी तब बनते हो जब अपने हालात से हट कर दूसरों के सामने अपने विचार , अपनी शंकायें , और अपने तथा दूसरों के अनुभवों की व्याख्या करते हो। और सुनो , यह सब कर सकते हैं लेकिन कई बार करने से चूक जाते हैं क्योंकि अपने को ज्ञानी नहीं समझते।

शायद वो ज्ञानियों को ढूँढते हैं।

अरे बुद्धु। अगर तू अपने को ज्ञानी नहीं मानेगा तो दूसरे का ज्ञान समझ कैसे आयेगा। और यह कैसे समझेगा कि वो ज्ञान की बातें कर रहा है या कुछ अपनी मतलब की पका रहा है।

तो आपका कहना है कि ज्ञान और अपना मतलब, अपना हित अलग-अलग हैं ?

तू एक कोई सोच अपने दिमाग में ले जिसको तू ज्ञान मान सकता है। और देख कि अपने निजी हित से वो कितना पास या दूर है।

आप दोनों की बातचीत में एक टैन्शन है जिसको मैं थोड़ा समझना चाहती हूँ। मुझे लग रहा है कि आप विशेष कौशल की जो बुद्धि होती है उससे ज्ञान को टकरा रहे हो । उदाहरण के लिये मैं ले सकती हूँ वकील या मैनेजर को जिन्हें आप अपने ज्ञान से तौलते हो। और कुछ लोगों से सामना होने पर अपने ज्ञान से तौलना धुँधला भी पड़ जाता है।

थैंक्यू फ्रैन्ड। आपसे मिल कर खुशी हुई और आपने बहुत सफाई से मेरी बात को मेरे से बैटर सोचा है। विशेष कौशल बुद्धि , वाह ! कितनी साफ परिभाषा है। और इन से टकराव में है , घाल मेल में है , नाराजगी में है , विरोध में है हमारे जीवन का ज्ञान। यह सब में होता है।

इसलिये शायद अगर कोई मुझे अज्ञानी कहता है तो दुख लगता है । लगता है कि मैं अपना परिचय पूरी तरह नहीं दे पाया।

मुझे आप लोगों की बात सुन कर अभी हाल का एक प्रसंग याद आ गया। कुछ फैक्ट्रियों में कामगारों को तीन दिन की पगार दे कर लिखने को कहा गया।

वाह ! यह तो गजब का डेवलेपमेन्ट है। वैसे तो बहुत लोगों को लिखने और सोचने के लिये पगार दी जाती है तथा उनके प्रोडक्शन टारगेट होते हैं लेकिन इसका बूँद-बूँद कर हमारे बीच टपकना बेहतरीन बात है।

अरे सुनो तो। उन्होंने लिखा क्या ?

कोई विषय पर नहीं लिखा। अपनी विशेष कौशल बुद्धि नहीं दिखाई। अपने हालात से दूर चले गये। उन्होंने कोई याचिका नहीं लिखी, कोई अर्जी नहीं लिखी।

फिर लिखने को क्या रह गया ?

ज्ञान चर्चा। वे अपने निजी हित से दूर गये। कुछ बगावत की बू। कुछ दोहे। कुछ आसमान। कुछ अज्ञात दुनिया। कुछ गीतों की लाइन।

और फिर क्या हुआ इससे ?

इस ज्ञान चर्चा से दूसरी फैक्ट्रियों में कोलाहल मच गया।

यही तो मैं कह रहा था भाई । ज्ञान से आप विशेष कौशल बुद्धि के धुरन्धरों और उनके गुटों को सवालों के घेरे में ला कर काउन्टर उदाहरणों से उनके कब्जे ढीले कर, नट-बोल्ट खोल सकते हैं।

अब आप जिस ज्ञान की बात कर रहे हैं वह जीवन के ज्ञान का नैटवर्क रूप है। इसमें पीढी के , पीढियों के आरपार के , स्थानीय और वैश्विक , जमीन और आसमान के , और दोस्तों के बीच के, कार्यस्थलों के बीच के , नाइट बसों में बातचीतों के इत्यादि-इत्यादि के शब्द और स्वर हैं।

मुझे अभी जा कर इसे लिख लेना पड़ेगा। बात थोड़ी घुमाऊ हो गई है। ज्ञान का हम सब के पास होना, ज्ञान की विस्तृत परिभाषा और इसका विशेष कौशल बुद्धि से टैन्शन को मुझे अभी थोड़ा और गहराई से समझना होगा।

आपके इस ऑटो में फिर से मिलेंगे। एक फैक्ट्री के कुछ दोस्तों को लाऊँगी जिनकी हाल ही में नौकरी गई है विशेष कौशल बुद्धिवालों के फेर में।

जरूर साथी। जरूर।

नोएडा में

सूरजपुर स्थित ***प्रियागोल्ड बिस्कुट*** फैक्ट्री के जनरल मैनेजर ने 17 नामजद और 300 अन्य मजदूरों के खिलाफ दँगा, घातक हथियारों के साथ दँगा , हत्या का प्रयास आदि धाराओं के तहत थाने में एफ आई आर दर्ज करवाई है।

प्रियागोल्ड फैक्ट्री में ढाई हजार मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं।अधिकतर वरकर ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे गये हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर महीने के 9000 रुपये।

29 जून को नाइट शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्री के अन्दर पहुँच गये थे और दिन की शिफ्ट के वरकर छूटने वाले थे। प्रोडक्शन लाइन पर कम्पनी के एक अधिकारी और मजदूरों के बीच साढे सात बजे के करीब बहस हुई। प्रियागोल्ड कम्पनी के चेयरमैन के अनुसार बहुत-ही मामुली बात थी।अधिकारी द्वारा एक वरकर के थप्पड़ मारने पर बवाल हुआ।

दोनों शिफ्टों के मजदूर इक्ट्ठे हो गये। रिसेप्शन तथा सेक्युरिटी ऑफिस और फैक्ट्री परिसर में खड़ी कारों पर वरकरों ने हमला किया। रात 8 बजे पुलिस दल फैक्ट्री पहुँचा। रात साढे नो बजे पुलिस की बीस से ज्यादा गाड़ियाँ वहाँ खड़ी थी। पुलिस लाठियों से मजदूरों को खदेड़ने की कोशिश कर रही थी। आसपास से लोग एकत्र हो गये थे और उन्हें हटाने के लिये भी पुलिस लाठियाँ चला रही थी। पत्थरबाजी में दो थानेदार भी घायल हुये।

अगले दिन, 30 जून को मजदूर फैक्ट्री नहीं पहुँचे।प्रियागोल्ड फैक्ट्री 30 जून को बन्द पड़ी थी। (सुश्री शिखा की 1 जुलाई 2017 के टाइम्स ऑफ इण्डिया में रिपोर्ट से जानकरी ली है।)

कहाँ–कहाँ से गुजर लिया

✶ पिताजी एस्कोर्ट्स कम्पनी में परमानेन्ट मजदूर थे। मैंने पहली नौकरी 1992 में फरीदाबाद में यामाहा फैक्ट्री में की। छह महीने में ब्रेक। फिर तो 6 महीने का सिलसिला चल पड़ा। एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक, एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट , एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट में बारी-बारी से और मुड़-मुड़ कर लगा। जब एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक में था तब एक रोज ड्युटी से छूटने पर सड़क पर एक्सीडेन्ट का शिकार हुआ।पैर की जाँघ की हड्डी टूटी।पाँच वर्ष के बाद कार चालक से 60,000 रुपये मुआवजा मिला।

फरीदाबाद में सैक्टर-59 में कोविट इंजीनियरिंग फैक्ट्री में सी एन सी ऑपरेटर का काम किया। सैक्टर-59 में ही प्लॉट 14 में यही काम किया। विकास फोरजिंग (174 सैक्टर-24) फैक्ट्री में सी एन सी ऑपरेटर रहा। जे सी बी फैक्ट्री में हैण्ड ब्रेक असेम्बली में काम किया। ओसवाल कास्टिंग (48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया) फैक्ट्री में लगा।

बेंगलुरू गया और वहाँ मॉडल फैब्रिकेशन फैक्ट्री में पेन्ट का काम किया। इधर फिर फरीदाबाद में सैक्टर-24 में एक फैक्ट्री में लगा हूँ।

✶ ***जी जे एस कम्पोनेन्ट्स*** (37 सैक्टर-6) फैक्ट्री के युवा वरकर ने अपनी कहानी सुनाई : फिरोजाबाद में जन्म। माँ बचपन में गुजर गई। चूड़ी कारखाने में काम करते पिताजी ने आत्महत्या कर ली। दो साल बड़ा भाई और मैं चाचा-चाची के पास रहे। जब 6 वर्ष का था तब गोदाम में काम करने लगा। जब 12 का हुआ तो चूड़ी कारखाने में लगा। फिर ईंट-भट्ठे पर बेलदारी की। काम करने के संग-संग पढाई की। सुबह 5 बजे उठना, खाना बना स्कूल जाना , लौट कर काम पर जाना। दसवीं में फेल हो गया। दोस्तों के साथ ताजमहल घूम लिया, लाल किला भी देखा। चाचा-चाची से रिश्तों में कड़वाहट आ गई। उन्होंने जाने को कहा। हम दोनों भाई आई एम टी मानेसर आ गये।

कुछ विस्तार में

✶ 16 जून , शुक्रवार को सुबह साढे नो बजे वैल्डिंग सैट में करन्ट के कारण फरियाद अन्सारी की ***ओसवाल कास्टिंग*** (48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया , फरीदाबाद) फैक्ट्री में मृत्यु हो गई। प्लॉट 48 में नया निर्माण , फर्श की तराई के लिये पानी भरा था , पानी में रखे वैल्डिंग सैट का 50 गज दूर प्लग पुराने तार से जुड़ा था, लोहे की डाली छत में वैल्डिंग हो रही थी।

फरियाद अन्सारी की तत्काल मृत्यु हो गई थी लेकिन साँस चल रही है कह कर मैनेजमेन्ट ई एस आई मेडिकल कॉलेज ले गई। फैक्ट्री में 600 मजदूर काम करते हैं लेकिन एम्बुलैन्स नहीं है। फरियाद अन्सारी को ऑटो में ले गये और डॉक्टरों ने ''मृत

लाया गया'' कह कर लाश को पोस्ट मार्टम के लिये भेज दिया।

फैक्ट्री में मृत्यु के बाद से मोटे-मोटे बाबा और पुजारी ओसवाल कास्टिंग फैक्ट्री में डेरा-सा डाले हैं। रात 1 बजे तक हवन। शुक्रवार, 23 जून को रात 12 से साढे तीन बजे तक किये गये हवन में कम्पनी का चेयरमैन भी शामिल था।

ओसवाल कास्टिंग से टी वी एस बाइक ने दो वर्ष पहले काम वापस ले लिया। अब यहाँ ब्रिजस्टोन, हैवेल्स, लुकास टी वी एस, उकाल, ओरियन्ट इलेक्ट्रिक के लिये हिस्से-पुर्जे बनते हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। प्रेशर डाइकास्टिंग में 2 मशीनों पर 3 आदमी कर दिये हैं जबकि 4 होने चाहियें। रैस्ट रूम नहीं है। कैंटीन नहीं है, भोजन करने के लिये स्थान नहीं है। अधिकतर वरकर टेम्परेरी हैं, ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। प्रोडक्शन इन्सेन्टिव के 800-1000 रुपये महीना बनते थे, आठ महीने से देने बन्द कर दिये। जनवरी 2017 से देय डी ए मई की तनखा से दिया, एरियर नहीं दिया।

रिजेक्शन की भरमार। मात्र 35-40 प्रतिशत माल ओके होता है। मैनेजरों से डायरेक्टर गाली-गलौज करता है। इधर नये भर्ती किये तीन मैनेजरों को 10 दिन में निकाल दिया। मैनेजरों को मई की तनखा के चैक 23 जून को दिये। आधी तनखा के चैक दिये हैं और डायरेक्टर बोला है कि बाकी आधी तनखा तब देंगे जब जून का निर्धारित उत्पादन 70 प्रतिशत ओके होगा।

✶ सुबह-सुबह एक गार्ड ने उत्साह से बताया : पिछले वर्ष दिवाली के समय की बात है। प्रोलारनिंग सेक्युरिटी (मुख्यालय सुशान्त लोक, गुडगाँव) ने डी एल एफ बिल्डिंग सर्विस में 5-6 हजार गार्ड सप्लाई किये हैं। साहब बोले थे कि तनखा दिवाली बाद देंगे। सात तारीख की साँय तक वेतन नहीं आया। तय किया कि तनखा देंगे तब ड्युटी करेंगे। आठ नवम्बर को सुबह स्ट्राइक कर दी। दस बजे सब गार्डों को तनखा दे दी! इतने में सुजुकी फाई में रात ड्युटी कर आये युवा अपनी कहने लगेः हम 100 को एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखा है। कम्पनी 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट दिखाती है पर टेम्परेरी वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। तीन रविवार को भी 12-12 घण्टे की ड्युटी। कई छात्र हैं जो नौकरी के संग पढाई भी कर रहे हैं। पढाया जाता है कि स्वतंत्रता है, अधिकार हैं। लेकिन फैक्ट्री में आजादी थोड़ी भी नहीं, जबरन 12 घण्टे रोकते हैं....

इन्ड्युरैन्स टैक्नोलॉजी (400 सैक्टर-8) फैक्ट्री में परमानेन्ट के संग 300 टेम्परेरी को 1000-2000 रुपये प्रोडक्शन इन्सेन्टिव मार्च से यह कह कर बन्द कर दिया है कि कम्पनी घाटे में जा रही है – उत्पादन पहले जितना ही हो रहा है। बफिंग और फैटेलिंग वाले 150 टेम्परेरी की 12-16 घण्टे ड्युटी और प्रोडक्शन इन्सैन्टिव था ही नहीं। मैनेजमेन्ट से समझौते के समय दबाव डालने के लिये यूनियन लीडर टेम्परेरी वरकरों को प्रोडक्शन डाउन करने को कहते हैं। इस प्रकार 2012 में परमानेन्ट के 10,500 रुपये बढे और 2015 में 13,000 रुपये बढे। फिर यूनियन लीडर कहते हैं कि मैनेजमेन्ट उनकी सुनती ही नहीं : 5 वर्ष में दो बार करके टेम्परेरी वरकरों के एक-एक हजार रुपये बढाये हैं और बफिंग व फैटलिंग वालों के तो वह भी नहीं.....***इन्ड्युरैन्स टैक्नोलॉजी*** (400 सैक्टर-8) फैक्ट्री में परमानेन्ट के संग 300 टेम्परेरी को 1000-2000 रुपये प्रोडक्शन इन्सेन्टिव मार्च से यह कह कर बन्द कर दिया है कि कम्पनी घाटे में जा रही है – उत्पादन पहले जितना ही हो रहा है। बफिंग और फैटेलिंग वाले 150 टेम्परेरी की 12-16 घण्टे ड्युटी और प्रोडक्शन इन्सैन्टिव था ही नहीं। मैनेजमेन्ट से समझौते के समय दबाव डालने के लिये यूनियन लीडर टेम्परेरी वरकरों को प्रोडक्शन डाउन करने को कहते हैं। इस प्रकार 2012 में परमानेन्ट के 10,500 रुपये बढे और 2015 में 13,000 रुपये बढे। फिर यूनियन लीडर कहते हैं कि मैनेजमेन्ट उनकी सुनती ही नहीं : 5 वर्ष में दो बार करके टेम्परेरी वरकरों के एक-एक हजार रुपये बढाये हैं और बफिंग व फैटलिंग वालों के तो वह भी नहीं.....

✶ फरीदाबाद में सैक्टर-6 में प्लॉट 20, 24, 36, 37 में ***के आर रबराइट*** कम्पनी की फैक्ट्रियाँ हैं। प्लॉट 36 में मुख्यालय है और यहाँ दिन में 700 तथा रात में 400 वरकर काम करते हैं। दोनों शिफ्टें 12-12 घण्टे की हैं। रविवार को सुबह 8 से दोपहर 2 बजे तक काम लेकिन वी एम सी मशीनों पर 12-12 घण्टे ही। महीने में 120-150 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। ओवर टाइम को दिखाते नहीं हैं, तनखा के साथ बैंक खातों में भेज कर तनखा ज्यादा दिखाते हैं। नब्बे प्रतिशत वरकर तथा स्टाफ को 8-9 ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखा है।

के आर रबराइट कम्पनी मारुति सुजुकी की वैन्डर है। कुछ माल महिन्द्रा का भी बनता है। मारुति सुजुकी से लोग आते रहते हैं। एक हजार टन की 7-8 पावर प्रैस हैं और 200-300-400 टन की 40 हैं। प्रोडक्शन के चक्कर में सब पावर प्रैसों से सैन्सर हटा दिये हैं। डेढ-दो साल से एक्सीडेन्ट कम होते हैं, इससे पहले एक हाथ तो हफ्ते में कट ही जाता था। तब हैल्परों को पावर प्रैस चलाने में लगा देते थे। अब ऑपरेटर ही चलाते हैं। वैल्डिंग में 10-12 रोबोट हैं और टेम्परेरी वरकर वहाँ काम करते हैं।

✶ ***इन्टरवीव फैशन*** (बी-294 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में अभी कुछ काम डाउन है अन्यथा महीने में कम से कम

15 फुल नाइट – सुबह साढे नो बजे से अगली सुबह 5 बजे तक काम और कुछ आराम के बाद फिर साढे नो से ड्युटी। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम सामान्य और 300-350 घण्टे तक हो जाता है, भुगतान सिंगल रेट से। ओवर टाइम मिला कर उन 50-60 की तनखा ज्यादा दिखाते हैं जिन्हें चैक से देते हैं। वर्षों से काम कर रहे 125 वरकर टेम्परेरी हैं, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, पैसे नकद देते हैं।

अनुभव : MESL और बोनी पोलीमर

★ गुड़गाँव स्थित ***मार्क एग्जास्ट सिस्टम्स लिमिटेड*** फैक्ट्री से 24 अप्रैल को बाहर किये 500 मजदूरों, यूनियनों और श्रम विभाग का कुछ विवरण मजदूर समाचार के जून अंक में दिया था।

फाइनल बताई जा रही 31 मई की तारीख को मैनेजमेन्ट से कोई उपस्थित नहीं हुआ – सब बीमार हो गये थे। श्रम विभाग ने 5 जून की तारीख दी और फिर 8 जून की। लीडरों ने घोषणा की कि 8 जून को फैसला नहीं हुआ तो 9 को न्याय सम्मेलन कर कार्रवाई करेंगे जिसकी जिम्मेदार कम्पनी होगी। मैनेजमेन्ट 8 जून की तारीख पर श्रम विभाग पहुँची ही नहीं। तब 12 जून की तारीख दे दी। चार लोग कम्पनी की तरफ से 12 जून की तारीख पर पहुँचे और बोले कि कम्पनी चेयरमैन नासिक, महाराष्ट्र गया है, साहब के आने पर बतायेंगे। इस पर 23 जून की तारीख दे दी। नेताओं ने अन्य नेताओं के सुझाव लेने के लिये 20 जून को सभा रखी। मैनेजमेन्ट 23 जून की तारीख पर नहीं पहुँची और श्रम विभाग ने 29 की तारीख दे दी। यूनियन लीडर 25 जून को गुड़गाँव में मंत्री और विधायक से मिले। नेताओं ने ऐलान किया कि 29 जून को गुड़गाँव में डी सी ऑफिस पर प्रदर्शन किया जायेगा। मार्क एग्जास्ट के 24 अप्रैल से बाहर किये 500 मजदूरों को जून-अन्त तक मार्च माह के ओवर टाइम के पैसे और अप्रैल के 23 दिन की तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे भी नहीं दिये थे। व्हाट्सएप पर सम्पर्क वाले मार्क एग्जास्ट वरकरों से इधर हाल की कोई सूचना नहीं मिली है।

★ भारत-भर में महत्वपूर्ण ऑटो हब में ***बोनी पोलीमर्स*** की 12 फैक्ट्रियाँ हैं। रेलवे और दुपहिया, कार, ट्रक-बस, ट्रैक्टर आदि की निर्माता सब नामी कम्पनियों की फैक्ट्रियों को बोनी पोलीमर्स हिस्से-पुर्जे सप्लाई करती है।

फरीदाबाद में प्लॉट 132 सैक्टर-24 में ***बोनी पोलीमर्स/प्राइम इंडिया पोलिमिक्स*** फैक्ट्री है। यहाँ 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में करीब 1000 मजदूर काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 30-32 रुपये प्रतिघण्टा। अधिकतर वरकरों को ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखा है। पी एफ में बहुत गड़बड़ी की जाती है। मोल्डिंग मशीनों पर एक्सीडेन्ट होते रहते हैं। घायलों को ई एस आई अस्पताल ले जाते हैं और फिर ज्यादातर को निकाल देते हैं।

सैक्टर-24 फैक्ट्री के कुछ मजदूर एक यूनियन से जुड़े। चन्दा दिया। दो महीने पहले चण्डीगढ से यूनियन रजिस्ट्रेशन के कागज आये। और, कम्पनी ने तत्काल कई मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। यूनियन ने श्रम विभाग में शिकायत की। दो महीने से तारीखें पड़ रही हैं। तीन जुलाई को तारीख थी..... 5 जुलाई को बाहर किये हुये मजदूरों में से दो वरकर पूछ रहे थे : श्रम विभाग से कुछ मिलेगा क्या ?

अगस्त 2017

संगति । बहुत खूब ।

निश्चित दो दिन । अनिश्चित तीन दिन। निश्चित दो दिन। अनिश्चित तीन दिन। निश्चित दो दिन। अनिश्चित तीन दिन।

हँसते हुये यह क्या जप रही हैं ?

आज एक मैनेजर प्रैस और पुलिस को कुछ ऐसा ही बोलते हुये दिखा।

यह इसलिये कि ये तीन हफ्ते कुछ अलग ही हैं। ऐसे लग रहा है कि विद्रोह की मानसून है।

आज ही बहस हुई एक साथी से जो निराशा में बोले जा रहा था कि हम कामगारों से कुछ नहीं होगा। एक साथ कुछ नहीं करते।

बाबा रे बाबा! यह तो अपने को अपने आप से काटने की सोच हो गई। मैं सोचते रहता हूँ कि ऐसी बातें कहीं सत्ता की वो भाषा तो नहीं है जिसे हम दोहराते रहते हैं ?

मैं बहस में उससे बोल रहा था कि अभी ही तो नोएडा में घरों में काम करने वाली 300 महिलाओं ने विद्रोह किया है। और, मारुति से भी ज्यादा डर मंत्रियों तक पहुँच गया है।

मजेदार तो यह है कि काँपते हुये घरों को हौसला देने के लिये एकदम मनु के दण्ड विधान पर पहुँच गये। न्याय, संविधान, कानूनी व्यवहार, जाँच-पड़ताल को धक्का मार कर सार्वजनिक घोषणा: ''जमानत नहीं होने देंगे।''

हा-हा! यह कोई किले नहीं, यह तो कागजी लुगदी है। पाँच हजार साल लगे मनु के दण्ड विधान को छद्म वेष देने में और एक धक्के में द्रवीभूत हो गया।

हा-हा! पर मेरा कहना यह है कि यह एक धक्का नहीं, बल्कि कई धक्के हैं। निरन्तर।

यह बहुत जरूरी है कि अपने बीच में बात करें कि एक धक्के को देख कर सोच में एक धक्का नहीं सोचें। कभी-कभी एक धक्का बहुत करीब से देखने को मिलता है और उसका पैमाना भी बड़ा हो जाता है। लेकिन वह अन्य धक्कों की गति और गूँज की संगति में दौड़ता है।

संगति। बहुत खूब । चलो। पिछले हफ्ते सउदी अरब में कन्स्ट्रक्शन वरकरों से सीखते हुये आई एम टी मानेसर में 800 वरकर ऑटो पार्ट्स फैक्ट्री नहीं गये और अपने कमरों पर रहे। आराम किया, प्यार किया, कविता लिखी। दूसरे दिन भी नहीं गये। तीसरे दिन भी नहीं गये। चौथे दिन भी नहीं गये। चारों तरफ हड़बड़ी । फैक्ट्री गेट पर खड़ी पुलिस की गाड़ी कन्फ्युज्ड।

चलो। अन्ताक्षरी में अगला गाना। हाल ही में व्हाट्सएप पर अखबारों की एक सुन्दर फोटो देखे होंगे। पीली वर्दी, पीले हेल्मेट में तीन हजार कन्स्ट्रक्शन वरकर आत्म विश्वास से भरे और शान्त।

मैनेजमेन्ट के ऑफिस को तोड़ कर विश्राम में।

चलो। मैं भी टीम में। नोएडा से हूँ। नोएडा के गीत। मोबाइल फैक्ट्री। पन्द्रह हजार से ज्यादा वरकर। प्रोडक्शन में उतार-चढाव। ज्वार-भाटा की तरह। भर्ती किये। काम कराया। निकाल दिये। यह आदत बन ही रही थी कि एक विद्रोह हो गया। एक फ्लोर की मशीनें तहस-नहस। भगदड़। कम्पन जारी है।

टाइम कम है। मेरा भी गीत सुन लो जरा। ओखला का राग है गारमेन्ट फैक्ट्री से। अरजेन्ट शिपमेन्ट का तानपुरा। तबले पर डैडलाइन की ताल। लेकिन एक अद्भुत अलग धुन छिड़ी। छह बजे मशीनें बन्द कर सब बैठ गये। बैठे रहे। एक-दूसरे को करीब से देखे। अद्भुत मुस्कान सब के चेहरों पर। माहौल शान्त। हड़बड़ा कर आया चेयरमैन-एम डी। क्या बोलें ? जल्दी-जल्दी में नया ग्रेड और एरियर देने की घोषणा।

निश्चित दो दिन। अनिश्चित तीन दिन।

इन तीन हफ्तों को नजर में रख कर पिछले सात साल को सोचें।

आप कह रहे हो कि कुछ दूसरी असलियत की, बगावत की अभिव्यक्ति हो रही है। विचार करें कि उसको हम कैसे दैनिक संवाद में सजीव रखें, गति दें।

उदाहरण लो आप। गुड़गाँव में 100-150 की टोलियों में घरों में काम कर रही औरतें सोसाइटियों के गेट पर पहुँच रही हैं। रेजीडेन्ट एसोसियेशन पुलिस बुला लेती हैं। सिपाहियों को भी हँसी आ रही है।

निश्चित दो दिन। अनिश्चित तीन दिन।

नोएडा – ग्रेटर नोएडा में विद्रोहों की लड़ी

★दिल्ली से 50 किलोमीटर दूर। बहुमंजिला पॉश कॉलोनी 25 एकड़ में। निवास की 2700 इकायाँ। गेट-गार्ड-सी सी टी वी कैमरे। ***महागुण मोडर्न सोसाइटी***। सैंकड़ों घरेलु कामगार महिलाओं की अगुआई में आसपास की अवैध बस्तियों से एकत्र हुई भीड़ 12 जुलाई को सुबह सवेरे जबरन महागुण मोडर्न में घुस गई। पत्थर, डण्डे, लोहे की छड़ें। दँगा। चार ट्रकों में हथियारबन्द पुलिस पहुँची।

दो महीने से बकाया 3500 रुपये माँग रही वरकर जोहरा पर चोरी का आरोप लगा कर एक मकान मालकिन ने 11 जुलाई साँय उसे कमरे में बन्द कर दिया। रात को पति महागुण मोडर्न पहुँचा तो अन्दर नहीं है कह कर लौटा दिया। थाने से पुलिसवालों के साथ आया तब भी जोहरा सोसाइटी के अन्दर नहीं है कह कर लौटा दिये। सोसाइटी के घरों में झाड़ू-पौंछा लगाती, कपड़े धोती, भोजन बनाती-परोसती-बर्तन साफ करती बस्ती की महिलाओं और निर्माण कार्य आदि में लगे पुरुषों में रात को चर्चायें। सुबह 4 बजे से ही महिलायें महागुण मोडर्न के गेट के बाहर एकत्र होने लगी। भीड़ बढती गई। कोलाहल। बेहोश-सी जोहरा को सोसाइटी के अन्दर से गार्ड लाये।

विद्रोही मजदूरों ने महागुण मोडर्न सोसाइटी के किसी निवासी को थप्पड़ तक नहीं मारा। मात्र कुछ शीशे-वीशे तोड़े थे। लेकिन पॉश कॉलोनी वाले 2700 परिवार आतंकित :

– ''डेढ घण्टे बाथरूम में बन्द रह कर बेटा, पति और मेरी जान बचाई।''

– 13 जुलाई को घरेलु कामगारों के सोसाइटी में प्रवेश पर रोक। बहुत से निवासियों ने बाहर से भोजन मँगवाया।

– ''इन्हें सबक सिखाना है। अगर वो एकजुट हो सकते हैं तो हम सोसाइटी वाले एकजुट क्यों नहीं हो सकते।''

– ''एक घण्टे पहले उठी। सफाई के लिये नई टैक्नोलॉजी वाले औजार खरीदने की योजना है।''

– ''ये गले की ऐसी हड्डी हैं जिसे न निगल सकते हैं और न उगल सकते हैं। चौकसी जरूरी है।''

– ''वो दिखाने की कोशिश करती हैं कि उनके कोई अधिकार नहीं हैं। मुझे लगता है कि हम सोसाइटी वालों के कोई अधिकार नहीं हैं और बेचारे तो हम हैं।''

– ''हम उनकी पूजा करते हैं क्योंकि हमारे जीवन का वो इतना महत्वपूर्ण अंग हैं। हम पहले उन्हें भोजन करवाते हैं और फिर स्वयं खाते हैं। उसे काम पर लगाने से पहले मैं उसे चाय पिलाती हूँ।''

– ''वो हम से घृणा करती हैं। एक स्पष्ट वर्ग विभाजन है। हमारे धन के कारण वो हम से नफरत करती हैं।''

महागुण मोडर्न का सेक्युरिटी हैड : ''सोसाइटी वाले दहशत और गुस्से में हैं। पर कितने दिन अड़े रह सकते हैं ? बिना घरेलु कामगारों के सोसाइटी वालों का गुजारा नहीं हो सकता।''

एस पी नोएडा : '' चौंकाने वाली तेजी से सोसाइटी वाले उनके घरों में काम करने वालों के खिलाफ हो गये और झूठे आरोप लगाने लगे।''

12 जुलाई की रात पुलिस ने 78 मजदूर गिरफ्तार किये। सोसाइटी वाले किसी के खरोंच तक नहीं आई थी फिर भी 13 वरकरों के खिलाफ हत्या का प्रयास आदि धारायें लगाई।

और, एक केन्द्रीय मन्त्री इलाके की सोसाइटियों की महागुण मोडर्न में मीटिंग में पहुँचे। सुरक्षा के प्रति आश्वस्त करते हुये मन्त्री बोले कि 13 गिरफ्तार कामगारों की जमानत नहीं होने देंगे।

● फर्श पर बैठने की बजाय घरेलु कामगार अब सोफा पर बैठने लगी हैं। मालिक-मालकिन के सामने कुर्सी पर बैठी रहती हैं। मुँह पर जवाब देने लगी है। पहेली : अमीरों को जान से क्यों नहीं मार रहे गरीब लोग ?

●ये अदृश्य मजदूर, लाखों घरेलु कामगार टाइम बम हैं...

●नाथने के लिये यूनियन : जिला अदालत में 13 गिरफ्तार के खिलाफ एफ आई आर की प्रतियों के लिये एक वकील बोली कि

पुलिस को 600 रुपये रिश्वत देनी होगी। दिल्ली से पहुँची एक यूनियन बीच में पड़ी और 1000 रुपये मजदूरों से लिये पुलिस को रिश्वत देने के नाम पर.....

(सामग्री न्यू यॉर्क टाइम्स में सुश्री सुहाषिनि तथा एलेन , कैरावन मैगज़ीन में सुश्री अनुमेहा, स्क्रोल में सुश्री कल्पना, मिन्ट में श्री मनु जोजेफ की रिपोर्टों से ली है।)

✶ ग्रेटर नोएडा में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर स्थित ***वीवो इण्डिया*** मोबाइल फोन कम्पनी इस वर्ष आई पी एल क्रिकेट की प्रायोजक थी। और , वीवो इण्डिया ने अगले पाँच वर्ष के लिये यह पोजीशन 2,200 करोड़ रुपये में खरीदी है। कबड्डी लीग की भी वीवो प्रायोजक है।

क्रिकेट लीग समाप्ति पर वीवो फोन की माँग कम हुई। मोबाइल फोन असेम्बल करते पन्द्रह हजार मजदूरों में ज्यादतर वरकर टेम्परेरी हैं। प्रोडक्शन लाइन वरकर की तनखा 7000 रुपये। कम्पनी नीति अनुसार मजदूर नौकरी से निकाले जाने लगे। पाँच सौ-एक हजार वरकर निकाले जा चुके थे तथा दो हजार अन्य को निकालने की चर्चा। सुबह 8 बजे ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचे 20 टेम्परेरी वरकरों को 25 जुलाई को हिसाब के लिये चाय-स्थान पर बैठने को कहा। भोजन अवकाश में 100 अन्य टेम्परेरी वरकर वहाँ पहुँच गये। अचानक मजदूरों ने विद्रोह किया। खिड़कियाँ तोड़ी। फोन असेम्बली यूनिटें तोड़ी। घबराई मैनेजमेन्ट ने पुलिस बुलाई। सेक्युरिटी कम्पनियों से और गार्ड मँगवाये। छह मजदूर गिरफ्तार और कम्पनी ने 26 जुलाई को फैक्ट्री में छुट्टी का नोटिस लगाया।

हड़बड़ाई वीवो मैनेजमेन्ट के एक साँस में दो सुर निकले :

– हिंसा गलतफहमी के कारण हुई। निकाल नहीं रहे थे , ट्रेनिंग के लिये दूसरे स्थान पर भेज रहे थे। मजदूर '' मूव'' को '' रिमूव'' समझ बैठे।

– उत्पादकता बनाये रखने और बढाने के लिये छँटनी करते रहना कम्पनी की नीति है।

मजदूरों के विद्रोह से घबराई वीवो मैनेजमेन्ट चीन सरकार के दूतावास के लोगों के साथ पुलिस अधिकारियों से मिली। पुलिस द्वारा सुरक्षा का भरोसा और कम्पनी से छँटनी की पूर्व सूचना का अनुरोध ताकि मुस्तैद पुलिस 25 जुलाई की पुनरावृति रोक सके।

✶ ग्रेटर नोएडा में 26 जुलाई को ***मैजेस्टिक ऑटो*** फैक्ट्री मैनेजमेन्ट द्वारा 8 वरकरों को निकाले जाने के खिलाफ मजदूरों ने उत्पादन बन्द कर दिया।

✶ 29 जून को रात 8 बजे सूरजपुर स्थित ***प्रिया गोल्ड*** बिस्कुट फैक्ट्री के ढाई हजार मजदूरों ने विद्रोह किया। नियन्त्रण के लिये बीस से ज्यादा गाड़ियों में पुलिस फैक्ट्री पहुँची। अगले दिन , 30 जून को मजदूर फैक्ट्री गये ही नहीं।

✶ मार्च 2017 में ***ओप्पो मोबाइल*** फैक्ट्री, नोएडा मजदूर उफान पर थे।

✶ नोएडा सैक्टर-63 स्थित ***ओरियन्ट क्राफ्ट*** गारमेन्ट फैक्ट्री में 1 अक्टूबर 2016 को तीन हजार मजदूरों ने विद्रोह किया। नियन्त्रण के लिये कई थानों की पुलिस बुलानी पड़ी।

✶ ग्रेटर नोएडा में जुलाई 2016 में ***एल जी इण्डिया*** मजदूरों द्वारा खुला विरोध....

नोएडा-ग्रेटर नोएडा क्षेत्र में सैमसंग , लावा , इन्टैक्स, ओप्पो, वीवो आदि की 25 फैक्ट्रियों में वर्ष में 18 करोड़ मोबाइल फोन बनते हैं। क्षेत्र में मजदूरों के बढते विद्रोहों से कम्पनियाँ बेहद चिन्तित हैं। एक मोबाइल कम्पनी के इण्डिया हैड के अनुसार विद्रोहों से निपटने की रणनीति बनाने के लिये नोएडा-ग्रेटर नोएडा की प्रमुख मोबाइल निर्माता कम्पनियों द्वारा मीटिंग करने की योजना है।

(सामग्री हिन्दुस्तान टाइम्स में श्री विनीत , बिजनेस स्टैन्डर्ड में श्री अरनब दत्ता, और टाइम्स इण्डिया में श्री शफाक आलम की रिपोर्टों से ली है।)

सिलसिला अंग–भंग का

✶ ***वी जी इन्डस्ट्रीज*** (31 इन्डस्ट्रीयल एरिया , फरीदाबाद) फैक्ट्री के जी पी एस प्लान्ट में पैडल वाली पावर प्रैसें हाथ से दबाने वाली बना दी हैं पर वे कभी भी फ्री हो जाती हैं और हाथ काट देती हैं। कलाई से हाथ कटा अशोक , हथेली से हाथ कटा धीरेन्द्र , तीन-तीन उँगली कटे वीरेन्द्र , राजेश, कलुआ ड्युटी कर रहे हैं पर हाथ कटने पर कम्पनी बी के शर्मा नर्सिंग होम ले जाती है और फिर अधिकतर को निकाल देती है। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की और रात की शिफ्ट में पावर प्रैसों पर ज्यादा हाथ कटते हैं। नाम क्या बतायें, फटाफट प्रायवेट में ले जाती है मैनेजमेन्ट और मजदूरों को पता भी नहीं लगता। वी जी में 9 नम्बर पावर प्रैस पर पाँच महीने पहले जिस मजदूर का नाइट शिफ्ट में हाथ कटा था उसका पता ही नहीं। दो महीने पहले 13 नम्बर पावर प्रैस पर जिस वरकर का दाहिना हाथ कटा था उसके घर-पड़ोस की बीस-पच्चीस महिलाओं ने 3 अगस्त को सुबह फैक्ट्री गेट पर हँगामा किया। इधर 26 जुलाई की रात वी जी की सहायक ***एक्युरेट प्रेसिंग*** में पावर प्रैस पर खुर्शीद के दोनों हाथ कट गये।

✶ ***श्रीराम इंजीनियर्स*** (सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर)

फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनी के जरिये आकाश को हैल्पर रखा था पर ऑपरेटर का काम करवाने लगे। आकाश की 27 जुलाई को उँगली कट गई।

★ ***जेवेरियन*** (113 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 21 जून को कमलेश का अँगूठा कट गया।

★ ***इण्डो ऑटोटेक*** (61 सैक्टर-25, फरीदाबाद) कम्पनी की यूनिट 4 में 30 जून को एक मजदूर का एक पैर पूरा कट गया। और , यूनिट 2 (261 सैक्टर-24, फरीदाबाद) में 9 जून को एक वरकर की उँगली कटी थी।

★ ***हरिओम हाइड्रोलिक्स*** (24 बाबा ह्रदयराम कॉलोनी, मुजेसर, फरीदाबाद) में पावर प्रैस ऑपरेट करती शिव कुमारी की 26 जून को दो उँगली कटी।

★ ***ओसवाल कास्टिंग*** (48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में खराब सी एन सी मशीन पर 5 जून को एक टेम्परेरी वरकर की उँगली कटी। ई एस आई मेडिकल कॉलेज ने सर्जरी के लिये एस्कोर्ट्स फोर्टिस अस्पताल भेजा। वहाँ डॉक्टर नहीं। तब क्यू आर जी सैन्ट्रल अस्पताल भेजा जहाँ डॉक्टर ने आनाकी की। परिजनों-पड़ोसियों संग वरकर फैक्ट्री पहुँचा। चेयरमैन की गाड़ी रोकी। कम्पनी ने अपने खर्च पर इलाज की बात की। एक मैनेजर संग वरकर डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने 52 हजार रुपये खर्च बताया, मैनेजर ने कम्पनी फोन किया, मैनेजिंग डायरेक्टर ने मना कर दिया। मजदूर सहयोगियों संग मुजेसर थाने गया। एफ आई आर में चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर के नाम लिखने को कहा। थानेदार ने कम्पनी को फोन किया। मैनेजमेन्ट पहुँची और समझौता किया : हर्जाने में 50 हजार रुपये नकद , एस्कोर्ट्स फोर्टिस अस्पताल में सर्जरी का खर्चा कम्पनी देगी।

★ ***श्री भिक्षु कम्पोनेन्ट्स*** (385 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे एक मजदूर की उँगली 7 अगस्त को पावर प्रैस पर कटी। फैक्ट्री में तड़फते को साथी मजदूर अस्पताल ले गये।

★ ***जे एल ऑटो*** (14 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 7 अगस्त को एक वरकर की उँगली कटी.....

कई बातें कईयों में बातचीतों में

★ ***गुडईयर टायर*** (मथुरा रोड़, बल्लभगढ) फैक्ट्री में 15-16 ठेकेदार कम्पनियों के जरिये मजदूर रखते हैं। जी एस ठेकेदार कम्पनी फरवरी-अन्त में छोड़ गई। उस के जरिये रखे 250 मजदूरों को मार्च की तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे गुडईयर के एच आर विभाग ने दिये। फिर पहली अप्रैल से इन 250 को डी एस ठेकेदार कम्पनी के वरकर बना दिया। फरवरी में किये ओवर टाइम के पैसे 250 मजदूरों को नहीं दिये हैं। पुरानी ठेकेदार कम्पनी कहती है कि गुडईयर ने पैसे नहीं दिये हैं। वरकर एच आर मैनेजर से मिलते हैं तो वे कहते हैं कि मेरे से बात मत करो.....

★ ***थॉमसन प्रैस*** (बी-315 ओखला फेज-1) में अप्रैल की तनखा नये ग्रेड अनुसार दी और 3 मार्च से एरियर भी दिया। फिर मई की तनखा पुराने ग्रेड अनुसार दी और उसमें से पहले नये ग्रेड अनुसार दिये पैसे काट लिये। कम्पनी ने जून में यह किया तब वरकर फैक्ट्री से बाहर आ गये। एक घण्टा हो गया फैक्ट्री से बाहर निकले तब मैनेजमेन्ट बोली कि नये ग्रेड अनुसार तनखा देंगे.....

★ ***ए डी विक्टोरिया गारमेन्ट्स*** (एफ-23/3 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में सुबह साढे नो से रात 9 बजे तक रोज काम करते 300 मजदूरों ने 5 मई को साँय 6 बजे मशीनें बन्द कर दी। तनखा बैंक में भेजे जाने से पहले वरकर काम बन्द कर फैक्ट्री में बैठ गये। अरजेन्ट माल चल रहा था। चेयरमैन-एमडी तत्काल मजदूरों के बीच पहुँचे और बोले कि काम शुरू करो, पेमेन्ट नये ग्रेड अनुसार भेजेंगे। एरियर भी 3 मार्च से भेजा।

★ ***इण्डो ऑटोटेक*** (132-133 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में सुबह की शिफ्ट के 250 मजदूर 4 जुलाई को ड्युटी नहीं गये। यह वरकर अपने कमरों पर रहे। थोड़े-से नये मजदूर फैक्ट्री पहुँचे थे। ठेकेदार कम्पनियों ने कमरों पर फोन पर फोन किये। रात की शिफ्ट के 150 वरकर भी फैक्ट्री नहीं गये। कम्पनी को भारी परेशानी। नकद 700-800 रुपये दे कर मैनेजमेन्ट लेबर चौक आदि से वैल्डर और ऑपरेटर लाई। दूसरे दिन भी वरकर फैक्ट्री नहीं गये। इण्डो मैनेजमेन्ट बुलाती रही, ठेकेदार कम्पनियाँ दस दिन तक फोन कर बुलाती रही। पर वे मजदूर फैक्ट्री नहीं गये। होण्डा दुपहियों के मेन फ्रेम कम पड़े और होण्डा मैनेजमेन्ट ने 50-60 मजदूर पाँच दिन इण्डो फैक्ट्री में काम करने भेजे। मजदूरों से निपटने के लिये पुलिस की एक बस इण्डो फैक्ट्री गेट पर रही। कोई वरकर फैक्ट्री पहुँचा ही नहीं तो पुलिस बस फैक्ट्री से हट गई। अब दो-तीन महीने से ज्यादा पुराना एक भी मजदूर फैक्ट्री में नहीं है। रिजैक्शन बहुत। प्रोडक्शन कम कर दिया है — 12 घण्टे में 350-400 पीस की जगह 100-150 कर रखा है। फैक्ट्री में रोबोट बहुत हैं। जब 2013 में मजदूरों ने कदम उठाये तब कम्पनी फरीदाबाद से तीन बसों में वरकर लाती थी , खाना और रहना कम्पनी ने एक महीने तक मानेसर फैक्ट्री में किया था।

सितम्बर 2017

अशांत , उपजाऊ गैप

बना दो फिल्म।

सीरियस ? किसके ऊपर ?

मेरे ऊपर ।

क्यों ?

विश्वास नहीं हो रहा क्या कि मैं अपने को फिल्म की नायिका लायक समझती हूँ !

नहीं। बात वो नहीं है। बात यह है कि तू नायक के खिलाफ सोचती है। और अब बोल रही है कि तुझे मैं नायिका की कल्पना में क्यों नहीं सोच सकता।

नायक ना हो कर फिल्म में कैसे उतरें ? यह जटिल प्रोब्लम लग रहा है। अगर नायक नहीं हो तो आपसे कोई आपकी अपनी सोच के शब्द नहीं बुलवायेंगे। और अगर हो तो ऐसे शब्द बुलवाये जायेंगे जो जीवन के विपरीत हैं।

तो खलनायक बन जाओ।

खलनायक को शब्द मिलते हैं जरूर। लेकिन वो शब्द अन्दर के घाव से सपोर्ट लेते हैं। कुछ सोच ऐसे चलती है जैसे कि कोई गहरी वेदना दूर बचपन की , इन्धन दे कर उसे चला रही है।

ये घाव , वेदना , बचपन की चोट तो आम हैं। इनकी चर्चायें काफी व्यापक हैं। और काफी प्रभाव भी लिये हुये हैं।

नायिका इस प्रभाव को अगर ले और खुद नायिका बनने से इनकार करे तथा किसी को भी नायक बनाने से भी इनकार करे तो ?

यहाँ एक फिल्म है जो फिल्म बनने से इनकार करती है।

वाह ! बहुत खूब ! कुछ हमारे जैसे ही है। आप कामगार बनते हो और कामगार बनना नहीं चाहते। और यह अन्तर विरोध निरन्तर है।

तो आप क्या कह रहे हो ? क्या यह कि ढलाई हर वक्त अधूरी है और नया उस अधूरे पन में से ही निकलता है ? और शायद आपका इशारा इस ओर है कि यह अधूरापन रूबरू है खुलेपन से जो बहु आयामी है।

तुझे सुन कर मैं अपनी सोच के साथ ज्यादा खुलेपन से दौड़ पा रही हूँ। जो स्वीकार और इनकार के बीच गैप है वह बहुत अशांत है। मुझे लगता है कि कुछ जनन का , प्रसव का विस्तार लिये है। गैप खाली नहीं होता।

मजा आ गया ! सब के लिये चाय मेरी तरफ से। और मेरा सवाल। इस उपजाऊ गैप का अहसास तीक्ष्णता से , तीव्रता से कब होता है ? मैं यह साफ कर दूँ कि मुझे अहसास है कि दैनिक उतार-चढाव में धीमे ढँग से इस गैप की ताप हमें जीवन्त रखती है। मेरा सवाल है कि वो कौन से क्षण हैं जब तीव्रता उभरती है और एक-दूसरे की ताप हमें सींचती है, जुनूनी प्रेरणा देती है ?

आप कुछ विचित्र इन्सान हैं। हर वक्त अपने सवाल में ही नया अर्थ रच लेते हैं। संगति। संगति कैसे बनती है ? यह सवाल है। एक पहेली भी है और एक प्रभाव भी है कि हर रोज हम एक-दूसरे की खोज में रहते हैं।

ठोस तरीके से यह महसूस करते हैं हम। एक डिपार्ट में कुछ होता है , बिना शब्द दूसरी डिपार्ट में पहुँचता है , फैलता रहता है। कभी , अब कुछ ज्यादा , यह फैलना तूफान बन जाता है। तूफान की तीव्रता घटती-बढती रहती है।

इन तूफानों में कोई नायक नहीं दिखते। ज्यादा शब्द भी नहीं बोले जाते। असर बहुत लिये होते हैं।

फिल्म कैसे बनाओगे आप ! शब्द कम। एक्शन कब आरम्भ हुआ , कब दिखा , कब चढाव लिया, कब उतार पर आया , यह सब चित्रण के बाहर है। घटना नहीं है। पारदर्शी नहीं है। हीरो नहीं है। हीरोइन नहीं है।

लेकिन गाने खूब हैं।
काउन्टर अटैक बहुत हैं।
और कोर्ट-कचहरी भी बहुत हैं।
शायद फिल्म बन सकती है जब आपको उस काउन्टर अटैक से त्रस्त दिखाया जाये और कोई अन्य नायक आ कर आपका त्रस्त होना आपको ही समझाये।

हम जैसे ही गैप की ऊर्जा ले कर
सामाजिक नियम-संग्रह की दहलीज
को तोड़ते हैं तो हम पर कुछ टूट पड़ता
है। दण्ड। सदाचार पर भाषण।
और, शब्द कोष के विद्रोह, बगावत, बागी जैसे शब्दों को तड़ीपार करने के लिये यज्ञ किये जाते हैं।

कदम–कदम पर मृत्यु

★ ***साँई स्टील कटर*** फैक्ट्री (20-30 संजय मेमोरियल इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, सैक्टर-5, फरीदाबाद) में सुबह 9 बजे काम पर लगा एक मजदूर साँय 7 बजे क्रेन से माल हटा रहा था कि पट्टा टूट गया। एक से दूसरे अस्पताल ले जाते समय रात साढे आठ बजे घायल मजदूर की मृत्यु। एक्सीडेन्ट होते ही फैक्ट्री में काम कर रहे 100 वरकरों ने काम बन्द कर दिया। कम्पनी ने मृत मजदूर के परिवार को दो लाख रुपये देने की बात की। मजदूरों ने अगले दिन और फिर उसके अगले दिन भी फैक्ट्री में काम बन्द रखा। कम्पनी द्वारा मृत वरकर के परिवार को पाँच लाख रुपये का चेक और मैनेजर द्वारा 50 हजार तथा एच आर द्वारा 70 हजार रुपये नकद देने के बाद साँई स्टील कटर मजदूरों ने काम आरम्भ किया।

★ ***एस वी (बजाज) प्रिसीजन कम्पोनेन्ट्स*** फैक्ट्री (22 सैक्टर-3, आई एम टी मानसेर) में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। साँय 7 बजे से होलिंग मशीन पर काम कर रहे वरकर की मशीन से रात 3 बजे पीस उछला। मजदूर की हथेली में और कोहनी तक पीस ने तीन सुराख कर दिये। ई एस आई अस्पताल में रक्त बन्द नहीं हुआ, दूसरे अस्पताल ले गये। रात 3 बजे सब वरकरों ने काम बन्द कर दिया और सुबह 7 बजे तक बन्द रखा। दूसरी शिफ्ट वाले सुबह 7 अन्दर आये और उन मजदूरों ने भी काम बन्द रखा। एच आर वालों ने सही उपचार करवा रहे हैं कह कर 10 बजे काम आरम्भ करवाया।

★ ***गुलाटी फैब्रीकेशन*** फैक्ट्री (सैक्टर-24, फरीदाबाद) में 2 सितम्बर को सुबह बिजली का करन्ट लगने से 38 वर्षीय फिटर राकेश की मृत्यु हो गई।

★ ***सुपरफाइन*** फैक्ट्री (117-118 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) में 6 सितम्बर को एक मजदूर की मृत्यु हो गई और दूसरे का पैर टूट गया।

सूरजपुर, नोएडा

(दो साथी पहली बार नोएडा गये। बहुत उत्साहित लौटे। मजदूर समाचार के अगस्त अंक की 600 प्रतियाँ बहुत कम पड़ गई।)

संयोग से हम सुबह 8 बज कर 10 मिनट पर सूरजपुर गाँव के चौराहे पर पहुँच गये। एक तरफ से वरकरों का गाँव से आवागमन चल रहा था, दूसरी तरफ प्रियागोल्ड फैक्ट्री खड़ी थी। थोड़ी दूरी पर एल जी, मोसर बेयर आदि कम्पनियों की फैक्ट्रियाँ थी। फेज-2 का रास्ता वहीं से कटके है। ऑटो, बसों में मजदूर बैठ रहे थे। वहीं से फेज-5, कासन, आदि-आदि स्थानों पर फैक्ट्रियों के वरकर जा रहे थे।

29 जून की रात वाले विद्रोह का जिक्र करने पर ***प्रियागोल्ड*** बिस्कुट फैक्ट्री के वरकर बोले कि फैक्ट्री में दँगे होते रहते हैं और 29 वाला तो एक उदाहरण ही है। तभी मजदूर समाचार लेते हुये ***एल जी*** फैक्ट्री में काम करता एक हैल्पर बोला कि तनखा 7400 रुपये है, फैक्ट्री में काम करते तीन-चार हजार मजदूरों में अधिकतर वरकर टेम्परेरी हैं, करीब 900 ही परमानेन्ट मजदूर हैं... ... कई अन्य की तरह काम भी कर रहा हूँ और पढ भी रहा हूँ कहते हुये एक वरकर बोला कि ***पेप्सी*** कम्पनी में 100 मजदूर हैं, तनखा 8000-10,500 रुपये..... कुछ अप्रेन्टिस बोलने लगे: आई टी आई करके आये अप्रेन्टिसों को प्रशिक्षण के लिये सरकार एक साल भत्ता देती है पर मैनेजमेन्टें हैं कि ट्रेनिंग की बजाय फैक्ट्रियों में अप्रेन्टिसों को कुछ पैसे अतिरिक्त दे कर प्रोडक्शन में लगा देती हैं; ***सैमसंग*** में अप्रेन्टिस को 7400 रुपये; एक वर्ष बाद अप्रेन्टिस को परमानेन्ट करने की बात थी पर अब परमानेन्ट नहीं करते; फैक्ट्रियों में काफी ज्यादा अप्रेन्टिस रखते हैं; अप्रेनिटस सस्ते मजदूर हैं..... तब एक दम्पत्ति में से पुरूष बोला कि ***लक्ष्मी रिमोट*** फैक्ट्री (बी-201 फेज-2) में 3000 मजदूर, तनखा 7400 रुपये, रोज 12 घण्टे ड्युटी में साढे तीन घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं परन्तु भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं..... मजदूर समाचार लेते हुये ***मंगला होइस्ट्स*** फैक्ट्री (3 सी/2 इकोटेक 2) वरकर ने कहा कि 50-60 मजदूर महीने में .....

अक्टूबर 2017

अरे , चुपचाप क्रान्ति हो जायेगी पता भी नहीं चलेगा

फोन में क्या देख कर इतना हँस रहा है ?

सुन.सुन। एक घूमता हुआ मैसेज सुन। रात को एक चोर मेरे कमरे में घुसा। वो पैसे ढूँढ रहा था। मैं उठ गया और उसके साथ पैसे ढूँढने लगा।

तूने तो दिल को हँसा दिया। गति है , हँसी है , असंगत है, आज का एक वर्णन है।

ट्रेन में एक बन्दा जोर-जोर से सब को सुना रहा था। कल से पूरे भारत में सब की तनखा 18 हजार। बराबर। ना कोई चोर , ना कोई राजा। सरकार जिन्दाबाद। और हँसता और फिर यही बोलता।

मेरी ट्रेन में भी एक ऐसा ही है जो 15 हजार बोलता है और आगे बढाता है कि जो नहीं देंगे वह बन्द। ताली बजाता है और फिर से बोलता है।

मेरी बस में कुछ अलग बहस चल रही है। वो चुप्पी पर चल रही है। मैं इस पर तुम दोनों से कुछ विचार करना चाहती हूँ।

तेरी बस में लोग क्या चुप्पी को नीचा देखते हैं ? बोलते हैं क्या कि कायर चुप रहते हैं और बलवान बोलते हैं?

हा-हा!! कुछ ऐसा ही सोच। लेकिन वाद-विवाद में चुप्पी के बहुत तरह-तरह के गुण खिलने लगते हैं। लेकि न हाँ , कायर और चुप्पी , दमन और चुप्पी का वजन गुणों को धुँधलाता है।

यह बहस जगह-जगह चलती है। मैंने देखा है कि चुप्पी के तरह-तरह के भाव जो उभरते हैं वो बहुत प्रबल हैं। उदाहरण के तौर पर अगर इस शब्द को सोचें – ''चुपचाप''।

चुपचाप । चुपचाप ।

हाँ , यह तो अद्‌भुत ओज लिये है।

मैं जब भी चुपचाप शब्द को बहस में डालती हूँ तो विभिन्न विस्फोटक विद्रोहों की छवि उभर कर आती है। चुपचाप कैन्टीन में खाना खाया और बैठे रहे।

चुपचाप मशीनें बन्द कर साइड में बैठ गये। माहौल में चुप्पी इस कदर थी कि मैनेजर घबराने लगे।

चुपचाप एक रिश्ता है।

यह तो तूने कमाल की बात बोली है। चुपचाप एक्शन है। एक गुप्त भाव है शरीर और दिमागों के बीच में।

मौन, सन्नाटा, खामोशी को हम खास रिश्तों में सोच सकते हैं। यह वो रिश्ते हैं जो सिखाये नहीं जाते। यह जन्म से नहीं आते। यह खरीद-बिक्री में पैदा नहीं होते।

तो तेरा कहना यह है कि इस चुपचाप में हम रोज रहते हैं। महसूस करते हैं। उत्पादक बनाते हैं। घातक बनाते हैं। चुपचाप की तीव्रता-तीक्ष्णता को जीते हैं।

यह माना कि यह हमारा महीन बल है और प्रचण्ड बल भी है। लेकिन इसे मुख बन्द से कनफ्युज न करें। मेरा कहना यह है कि एक बोली की शैली है जिसको चुपचाप की बोली कह सकते हैं।

थोड़ा-सा खुल कर बोल।

15-20 जने जब मैनेजर के पास जाते हैं और 8-9 आवाजें अलग-अलग ढँग की आती हैं। कुछ अधूरे और कुछ पूरे बोल। फिर अगले दिन 20-25, कुछ पुराने और कुछ नये फिर से यही अधूरे और पूरे बोल मैनेजर को सुनाते हैं। ऐसे में एक बेचैन-सा माहौल बनता है जिससे मैनेजर घबराते हैं। उस बनते हुये माहौल की चुप्पी से डरते हैं। यह महीन ताकत बोल को लिये है और बोलने वालों को छितराये रखती है।

नो टारगेट्स ! बोलने वाले ज्यादा , भाषण नहीं ।

मेरे एक मित्र बोलते हैं , '' भूख लगे तो खुद को रोटी खानी होंगी ।'' बीस-पच्चीस के बोल जल्दी फैलते हैं । बसों में, ट्रेनों में , मोहल्लों में , पार्कों में, चाय की दुकानों पर ।

यह फैलना अदृश्य होता है । इसकी तकनीक है । पकड़ी नहीं जा सकती । स्मृति है पर व्यक्ति की याद में बन्दी नहीं है । समूह में विचरती है ।

जो विलाप करते हैं कि '' सब चुप हैं ।'' वो अदृश्य को जीते तो खूब हैं , चुपचाप के बल का आनन्द लेते हैं, लेकिन शब्दों में लाने के लिये आवश्यक दिमागी कोशिशें नहीं करते ।

अरे ! तूने हम को तो बोल दिया पर किसी और को मत बोल बैठियो !!

श्रम विभाग

ठेकेदार कम्पनी ***सहारा सेक्युरिटी एण्ड मैनपावर सर्विसेज*** ने 4.7.2017 को ***कोल्ड फोर्ज*** (181 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में गार्ड की ड्युटी पर लगाया । रोज 12 घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक अवकाश नहीं । प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30-31 दिन के 8694 रुपये । निकाल दिया 8.8.2017 को और तनखा नहीं दी ।

श्रम विभाग में 18 अगस्त को शिकायत की । तारीखें पड़ी : 25-28-31 अगस्त और 4-7-11-18 सितम्बर की । सेक्युरिटी ठेकेदार कम्पनी से किसी भी तारीख को कोई नहीं पहुँचा । कोल्ड फोर्ज फैक्ट्री का एच आर मैनेजर 5 तारीखों पर उपस्थित हुआ ।

18 सितम्बर को कोल्ड फोर्ज मैनेजर 11,969 रुपये का चेक लाया । गार्ड : इतने कम पैसे का चेक कैसे ? लेबर इन्सपैक्टर : हिसाब ठीक है । ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर और ओवर टाइम के पैसे जोड़ कर इतना ही बनता है ।

गार्ड : यह देखो फरीदाबाद इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन का 6 मार्च 2017 का सरक्युलर जिसमें गार्ड की कम से कम तनखा 8694 रुपये दिखाई है । तनखा 8 घण्टे ड्युटी और साप्ताहिक अवकाश पर बनती है । ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है । रोज 12 घण्टे ड्युटी और महीने के सब दिन ड्युटी पर ही ढाई महीने की तनखा बनती है । मेरे तो महीने से आठ दिन ज्यादा हैं । कानून अनुसार हिसाब लगाने पर मेरे छब्बीस हजार रुपये से ज्यादा बनते हैं ।

लेबर इन्सपैक्टर तब कोल्ड फोर्ज एच आर मैनेजर से बोला कि 1000 रुपये और दे दो । गार्ड ने नहीं लिये और ऑफिस से बाहर आ गया । पीछे-पीछे एच आर मैनेजर भी निकला । एक नेता-वकील जो लेबर इन्सपैक्टर के दफ्तर में बैठा था उसने बाहर आ कर दोनों को रोक लिया ।

गार्ड से नेता-वकील बोला : लक्ष्मी जो आ रही है इसको जाने मत दो । एच आर मैनेजर से 500 और दिला देता हूँ ।

गार्ड ने सोचा कि केस बढाने में कोई फायदा नहीं है, बहुत टाइम लग जायेगा । तीनों वापस लेबर इन्सपैक्टर के कार्यालय में पहुँचे । हस्ताक्षरों के बाद गार्ड को चेक और 1500 रुपये नकद मिले । चेक पर देने वाले के स्थान पर सहारा सेक्युरिटी एण्ड मैनपावर सर्विसेज लिखा था ।

छोटी फैक्ट्री

स्टील का फर्नीचर बनाती कम्पनी की ***फेरोरवैल्ड*** (64 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) 25 वरकरों वाली छोटी फैक्ट्री है । सैक्टर-6 में ही कम्पनी की मेन फैक्ट्री में 250 मजदूर हैं ।

नोटबन्दी के बाद तनखा बैंक में भेजने लगे थे पर इधर जून से नकद देने लगे हैं । जुलाई की तनखा 16 अगस्त को देने लगे तब बोले कि आधी ले लो और आधी 5 दिन बाद लेना । मजदूरों का समवेत स्वर : ''आधी कोई नहीं लेगा । चलो ।'' और सब , 25 वरकर चल दिये ।

सितम्बर-आरम्भ में मजदूरों में ई एस आई कार्ड नहीं देने और पी एफ जमा नहीं करने की चर्चा । बातें मैनेजमेन्ट तक पहुँची । बड़ी फैक्ट्री से प्लान्ट हैड 13 सितम्बर को आया और वरकरों को एक जगह बुला कर बोला: तुम्हारी ठेकेदार कम्पनी सही नहीं है । उससे ई एस आई और पी एफ के पैसे जमा करवा कर उसे भगा देंगे और नई ठेकेदार कम्पनी लायेंगे । तुम लोग मन लगा कर काम करो । अगले महीने से तनखा 10-12 तारीख को और ओवर टाइम 22-25 को..... मजदूर : तनखा और ओवर टाइम के पैसे साथ चाहियें । प्लान्ट हैड ने बहुत समझाने की कोशिश की : माल बेचते हैं । टाइम लगता है । इकट्ठा पैसा ज्यादा हो जाता है ।

वरकर नहीं माने । प्लान्ट हैड चला गया ।

अगले दिन सब मजदूर साँय साढे पाँच बजे छुट्टी करने लगे । वरकरों ने ओवर टाइम करने से मना कर दिया । मैनेजर बोला रुको , प्लान्ट हैड को बुलाता हूँ ।

प्लान्ट हैड ने फिर उल्टा-सीधा समझाने की कोशिश की । मजदूर नहीं माने । तब साहब बोला : कोशिश करेंगे कि पैसे इकट्ठे दें । डेढ घण्टे बाद वरकरों ने काम आरम्भ किया ।

नवम्बर 2017

फाटक

बचपन से देख रहा हूँ। जिज्ञासा रही है। सोचता था एक दिन पढ़ूँगा। अब पढने का समय है।

पढना एक बहुत ही अनोखी चीज है। वह अक्षर जानने से पहले आ जाती है। अक्षर उसे धार भी देते हैं और धुँधला भी देते हैं।

हाँ। पढने की क्षमता अक्षर ज्ञान से पहले से होती है। मेरी दादी आज भी सतह को देखती हैं, समझने की कोशिश करती हैं, पूछती हैं उसके बारे में लेकिन उस पर रुकती नहीं हैं।

क्या करती हैं ?

उनके सोचने की कुछ विधि हैं। जो सतह दीखती है वही सतह नहीं होती। कई सतहें होती हैं। वे एक-दूसरे पर फिसलती हैं, टकराती हैं। एक-दूसरे में रिसती हैं, उलझती हैं, दबाती हैं, उलझाती हैं।

तेरी दादी की विधि में क्या सब कुछ विभिन्न तरह की सतह हैं जो अपनी अलग-अलग गति और पैमाना लिये हुये हैं ? कोई कहे कि ''फरक पड़ता है'' और कोई कहे कि ''फरक नहीं पड़ता'' तो तेरी दादी इसे कैसे पढेंगी ?

मेरे ख्याल से मेरी दादी इन शब्दों को व्यक्ति-विशेष से नहीं जोड़ेंगी जबकि शब्द उनके पास व्यक्ति-विशेष से ही आये होंगे। वो उन शब्दों में जीवन के किसी रूप अथवा प्रणाली को ढूँढने की कोशिश करेंगी। और अपने दिमाग में दौडायेंगी कि पहले कहाँ-कहाँ सुना है। और, किसी समापन पर नहीं पहुँचेंगी। वो किसी गीत में भी जा सकती हैं।

मुझे जो समझ आ रहा है वो यह है कि तेरी दादी कोई जज नहीं बनती। न वकील बनती है। वो समझ बनाने की प्रक्रिया को खुली रखती हैं। इसलिये उनके निष्कर्ष ओझल हैं और उनकी पढने की विधि में जाना होगा।

यही शायद तेरी दादी में हमें आकर्षक लगता है। यह पढने का जो खुलापन है यह एक खास किस्म की आजादी का अहसास देता है।

आजादी का अहसास क्यों ? आजादी देता है। नहीं। अहसास देता है। दादी की आजादी दादी की आजादी है। महक खूब महसूस करते हैं। लेकिन अपनी आजादी, पढने की ऐसी विधि की रचना करने और उसका अभ्यास, सामुहिक अभ्यास करने में ही है।

यहाँ सामुहिक अभ्यास के बारे में थोड़ी साफ-सफाई करना चाहूँगा। सामुहिक लाउडस्पीकर के उस तरफ नहीं है। सामुहिक है साथ-साथ। साथ में। यह निकट है और बहुत दूर भी है। यह स्थानीय है और वैश्विक भी है। यह क्षणिक है, आता-जाता है, युग व्यापी भी है।

आता-जाता सुन कर मुझे मुजेसर फाटक याद आया। लोग कहते हैं यह एक मौत का कुँआ है। बहुत एक्सीडेन्ट होते हैं। भीड़ बनती है, टूटती है, छटपटाती है, गुम हो जाती है। शिफ्ट टाइम पर निरन्तर। सोचुँगा इसके बारे में।

वफादारी। यह एक अजीब शब्द है। अ-जीव। जो अब जीवित नहीं है। जो मर चुका है। कम्पनियाँ कितने लोगों को निकालती रहती हैं यह कह कर कि '' वफादार नहीं रहे।'' यानी, मशीन नहीं बने।

मशीनें बनाते हैं पर मशीन नहीं बने। यह बार-बार बताना पड़ता है। यह एक द्रोह है। यह विद्रोह हर शब्द में सुन सकते हैं। यह हँसी में सुन सकते हैं। हर चीख में सुन सकते हैं। हर चुपचाप में सुन सकते हैं।

मशीनों से, मशीनों के साथ काम करना। अदृश्य मशीनों के बीच काम करना। और, मशीन नहीं बनना यह फिसलती-टकराती सतहें हैं।

यह है आज का विश्व युद्ध।

बातचीतों में भँवर और उल्लास

मजदूर समाचार बाँटने के दौरान हजारों बातचीतों से हम गुजरते हैं। यह बातचीतें बहुत तरह की देख-परख, विचार, अनुभव और कदम से लैस होती हैं। इन वार्ताओं के रस का आनन्द धीरज और विनोद भाव से प्राप्त होता है। जैसे दादी कहती हैं , सतहों का टकराव सतहों से ही, को पढना होता है।

इस सन्दर्भ में एक बातचीत के उतार-चढाव, घुमाव और पैठ को यहाँ साझा कर रहे हैं।

सुबह-सुबह फरीदाबाद में जे सी बी चौक के इर्द-गिर्द मजदूर समाचार बाँट रहे थे। ड्युटी जाने वाले टुकड़ों में बोलते हुये निकल रहे थे। रात की ड्युटी करके लौट रहे कुछ आराम से चर्चा कर रहे थे। सैक्टर-59 की फैक्ट्रियों की तरफ जा रहा एक युवा मजदूर रुक गया। वह मथुरा रोड़ पर स्थित स्ट्डस हैल्मेट फैक्ट्री में काम करता था। वह बोला कि स्ट्रैप विभाग के सब पुराने वरकरों को मैनेजमेन्ट ने अचानक निकाल दिया है और पुलिस उन्हें फैक्ट्री गेट पर एकत्र नहीं होने दे रही, धमका कर हटा देती है। उसे भी दो दिन से फैक्ट्री के बाहर किया हुआ है। यह 2015 की बातें हैं।

बगल में चाय की दुकान पर बैठ कर अपनी बातें लिखने को कहा। युवक ने आराम से लिखा। जो कहा था वही बातें लिखी। शिफ्टें आरम्भ होने का समय समाप्त होने पर चाय पीते हुये चर्चा हुई।

आरम्भ में युवा ने वही दोहराया जो खड़े-खड़े कहा था और फिर लिखा था। बातचीत जारी रहने पर : स्ट्ड्स हेल्मेट फैक्ट्री में 900 मजदूर। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। नब्बे प्रतिशत से ज्यादा वरकर टेम्परेरी। चेन सिस्टम से उत्पादन। तेजी से काम करने के लिये भारी दबाव। स्ट्रैप विभाग में एक शिफ्ट में 36 मजदूर और सब वरकर एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे जाते हैं। तनाव में रहते सुपरवाइजर और मैनेजर भड़ास निकालने के लिये गाली भी दे देते हैं। तब क्या करते हो ? काम करते हैं, गाली क्यों खायें! स्ट्रैप विभाग में गाली देने पर हम काम बन्द कर देते हैं। थोड़ी देर में ही सुपरवाइजर और मैनेजर के होश ठिकाने आ जाते हैं। लेकिन और बहुत बातें हैं। आपस में बहुत चर्चायें होती हैं। इस बार स्ट्रैप विभाग की दोनों शिफ्टों के मजदूरों ने तय किया। दो दिन पहले सुबह की शिफ्ट के 36 वरकर फैक्ट्री नहीं गये। चेन सिस्टम से उत्पादन के कारण मैनेजमेन्ट में हड़कम्प मच गया। ठेकेदार कम्पनी के बन्दे वरकरों के कमरों के चक्कर लगाने लगे। हम सब इधर-उधर रहे। रात की शिफ्ट में भी स्ट्रैप विभाग के 36 मजदूर ड्युटी नहीं गये। बौखलाई स्ट्डस हैल्मेट मैनेजमेन्ट ने ठेकेदार कम्पनी पर दबाव बढाया। इधर-उधर से नये लोग ले कर गये। लेकिन बिलकुल नये वरकर से तेजी से उत्पादन नहीं होता। आज दूसरे दिन भी सुबह की शिफ्ट के 36 मजदूर ड्युटी नहीं गये हैं और रात की शिफ्ट वाले स्ट्रैप विभाग के वरकर भी फैक्ट्री नहीं जायेंगे।

अगले महीने जे सी बी चौक पर मजदूर समाचार बाँटते समय स्ट्डस हैल्मेट फैक्ट्री के स्ट्रैप विभाग के मजदूरों ने बताया: तीन दिन दोनों शिफ्टों के वरकर फैक्ट्री नहीं गये तब ठेकेदार कम्पनी ने स्ट्रैप विभाग मजदूरों को रियायतें दी। और , फैक्ट्री गये तब प्रत्येक वरकर से लिखवाया : मुझे फलाँ-फलाँ आठ मजदूरों ने भड़काया था। यानी, हरेक ने हरेक को भड़काया था। स्ट्डस हैल्मेट फैक्ट्री के स्ट्रैप विभाग के वरकरों की इस बात ने अगस्त 2012 में मारुति सुजुकी मैनेजिंग डायरेक्टर के स्पीकिंग आर्डर्स की याद दिलाई जहाँ उन्होंने मानेसर फैक्ट्री के 546 मजदूरों में प्रत्येक को लिखा था: ''आपने हिंसा के लिये भड़काया और आपने हिंसा में भाग लिया।''

प्रत्येक द्वारा प्रत्येक को भड़काना बहुत व्यापक है।

दहशत में मैनेजर

कुछ बातें ***शाही एक्सपोर्ट*** (1 सैक्टर-28 तथा 15/1 मथुरा रोड़, फरीदाबाद) फैक्ट्रियों की। कम्पनी की इन फैक्ट्रियों में अस्सी प्रतिशत मजदूर महिला हैं। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। बोनस बीस प्रतिशत। इस वर्ष ढाई महीने की तनखा बोनस में : चौबीस-पच्चीस हजार रुपये।

इन दो-तीन वर्षों के दौरान :

— शाही कम्पनी का कॉरपोरेट क्वालिटी ऑडिटर पैक होने के बाद क्रॉस ऑडिट करता था। खोल कर देखता था। कुछ ज्यादा ही पीस फेल करता था। री-वर्क करो , ड्युटी के बाद रुको , बिना ओवर टाइम के। सैक्टर-28 मैट्रो मोड़ पर हमला। एक पैर टूटा — रॉड डालनी पड़ी। लँगड़ा कर चलता है। शान्त।

— स्टिचिंग में मास्टर ने महिला मजदूर के कन्धे पर हाथ रख कर कहा: ''जल्दी कर। टारगेट देना है। नहीं तो घर नहीं जायेगी।'' महिला वरकर: ''जरा जबान सम्भाल कर बात कर।'' मास्टर : ''मैडम तेरे से जितना बोला जा रहा है उतना कर। फालतु की बकवास मत किया कर।'' इस पर महिला मजदूर ने चप्पल

उतारी। मास्टर भागा। तब से मास्टर शान्त।

– नया-नया फिनिशिंग मैनेजर टारगेट के लिये परेशान करता था, ड्युटी के बाद बिना ओवर टाइम रोकता था। एक दिन प्लास्टर चढे हाथ के साथ मैनेजर छुट्टी लेने फैक्ट्री आया। मजदूर पूछने लगे : '' सर , आपके हाथ में प्लास्टर कैसे चढ गया ? क्या हो गया ?'' मैनेजर : ''एक्सीडेन्ट हो गया।'' वरकर आपस में : '' पिटा है और एक्सीडेन्ट कह रहा है।'' हाथ तोड़े जाने के बाद से मैनेजर कई बार तो मजदूरों की चमचागिरी तक करता है और टारगेट के लिये मीटिंग लेता है पर पीस पूरे करने के लिये बिना ओवर टाइम के रोकना बन्द कर दिया है।

– एक सुपरवाइजर ने एक हैल्पर से कहा : '' अरे जा पीस ले कर आ।'' हैल्पर को थोड़ा गुस्सा आया : ''अरे ला रहा हूँ अभी।'' इस पर सुपरवाइजर ने उसे धक्का दिया। तब हैल्पर ने सुपरवाइजर का कॉलर पकड़ लिया। सुपरवाइजर ने हिसाब करवाने की ध ामकी दी पर निकाला नहीं क्योंकि अन्य वरकर हैल्पर के साथ थे। रात साढे सात बजे छूटे तब शाही फैक्ट्री गेट पर ही कुछ लोगों ने सुपरवाइजर को पीटना शुरु कर दिया। कोई गार्ड नहीं आया। गार्डों ने गेट बन्द कर लिया। सुपरवाइजर का दोस्त क्वालिटी वाला बीच में आया। उसे भी दो-चार हाथ पड़े। पिटने के बाद दोनों फैक्ट्री में शान्त रहे। अब सुपरवाइजर इण्डिया फैशन फैक्ट्री में है और क्वालिटी वाला भिवाड़ी में किसी फैक्ट्री में है।

– स्टीचिंग क्वालिटी असिस्टेन्ट परेशान कर के टेलरों से रिजाइन लिखवाता था। रात 9½ बजे ड्युटी से छूट कर बाइक पर घर जा रहा था। रेलवे लाइन के पास एक हाथ और एक पैर तोड़ दिया। तब से वह तो शान्त है ही, अन्य क्वालिटी वाले भी शान्त हो गये हैं।

– फिनिशिंग सुपरवाइजर ज्यादा परेशान करता था। टारगेट पूरा नहीं होने पर ड्युटी के बाद बिना ओवर टाइम रोकता था। उस सुपरवाइजर को मेन मथुरा रोड़ पर मेवला महाराजपुर मोड़ से पीटना शुरू किया। शाही फैक्ट्री गेट तक पिटता हुआ भागा। सिर पर रॉड लगने से खून से लथपथ। गेट पर गार्डों से बताया – पीटने वाले गायब। तब से हाथ जोड़ कर टारगेट माँगता है।

कई बातें कईयों में बातचीतों में

★ ***पैरागॉन*** (बी-59 हौजरी कॉम्पलैक्स) में करीब 500 वरकर। सिलाई वाले 250 पीस रेट पर हैं। दिन के 12 घण्टे में 400-500 कमा कर महीने में 16,000 रुपये तक कमा लेते हैं। बाकी हैल्पर, धागा कटर वगैरा 8 घण्टे के 8000 रुपये प्रतिमाह की तनखा पर। ''दँगा करती हैं'' कह कर लक्ष्मी हाउस की दिहाड़ी पर काम कर रही महिला वरकरों को कुछ समय पहले गेट बाहर किया था। दरअसल तनखा महीने के बाद देते हैं, और कई बार टाइम से नहीं। किसी एक्सपोर्ट फैक्ट्री में 6-7 महिलाओं को इन्चार्ज ने कहा कि तुम काम नहीं करती हो, महीने की 25 तारीख को हिसाब ले जाना। '' काम नहीं करती तो यह उत्पादन कहाँ से होता है ? अभी हिसाब दो !'' हँगामा। पुलिस आई। पिछले दो महीने में तीन बार पुलिस आई है।

★ ***राजषि स्टीयरिंग*** (3 सैक्टर-27 सी, फरीदाबाद) फैक्ट्री में बोनस में 7000 रुपये देने की बात पर 10 अक्टूबर से मजदूरों ने ओवर टाइम बन्द कर दिया। ओवर टाइम से इनकार को एक महिना हो गया तब 8120 रुपये बोनस दिया। कारब्युरेटर उत्पादन वाली ***पैको इन्डस्ट्रीज*** (ओखला, दिल्ली) में 3 मार्च से लागू नये ग्रेड के लिये मजदूरों ने 7 सितम्बर से ओवर टाइम करना बन्द कर रखा है। ***चाँदीवाला अस्पताल*** (दिल्ली) के वरकर सितम्बर-अन्त में इकट्ठे हो कर नये ग्रेड के लिये मैनेजमेन्ट के पास गये तो फिर वही केस-तारीख की बातें, लेकिन 11 अक्टूबर को बैंक खातों में पहुँची तनखा नये ग्रेड अनुसार। ***जी 4 एस (ग्रुप फोर)*** गार्डों ने दिल्ली में नया ग्रेड ले लिया है, 3 मार्च से एरियर ले लिया है, बोनस नये ग्रेड अनुसार लिया है। ग्रुप फोर के जिन गार्डों की भर्ती दिल्ली में और ड्युटी गुड़गाँव में कर रहे हैं उन्होंने भी यह सब ले लिये हैं। उद्योग विहार गुड़गाँव तथा आई एम टी मानेसर स्थित ***ऋचा-गौरव*** समूह की फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्ट द्वारा सितम्बर 2015 से पी एफ में की जा रही हेराफेरी के खिलाफ मजदूरों के कदमों का असर सामने आया है। कम्पनी द्वारा 6100-6500 रुपये तनखा पर काटी जाती पी एफ राशि सितम्बर 2017 में 8819 रुपये तनखा पर काटी गई है। ***इन्टरफेस माइक्रोसिस्टम्स*** (उद्योग विहार गुड़गाँव) फैक्ट्री में परमानेन्ट मजदूरों को बोनस में 26,000 रुपये लेकिन टेम्परेरी को फिर बोनस नहीं के खिलाफ सब टेम्परेरी वरकरों ने कम्पनी को लिख कर दिया है। ***अजय कम्पोनेन्ट्स*** (5 सैक्टर-4, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते 200 मजदूर बुलाने पर रविवार, 15 अक्टूबर को ओवर टाइम पर गये लेकिन सितम्बर की तनखा नहीं दिये जाने पर एक भी वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गया, सब लौट गये। मजदूरों ने तय किया कि 16 को, सोमवार को फैक्ट्री पहुँचेंगे, पहले तनखा लेंगे, फिर काम शुरू करेंगे। ***कुमार प्रिन्टर्स*** (24 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में कम्पनी रोल पर वाले मजदूरों को पिछले वर्ष बोनस में 9000 की जगह इस बार 16,800 रुपये देने की कह रहे थे। अचानक 35 लाख का घाटा बता कर बोनस में 7000 रुपये। दिवाली से पहले दिन फैक्ट्री में .....

दिसम्बर 2017

एक ड्राइवर का वैश्विक दबाव

सुन , एक फिल्म में रोचक दृश्य मिला । जैसे कि खास तेरे लिये हो । जैसे तू बात करती है ।

ऐसा क्या ! तो फिर बता ।

1970 के दौर में जर्मनी में फैक्ट्री में काम करती एक महिला ने बहुत सुन्दर ढँग से मैनेजमेन्ट को पढा है ।

क्या रीड किया है ?

दो संकेत हैं । पहला है कि मैनेजमेन्ट हर वक्त हमारे आकस्मिक , चाणचक्क एक्शन की आशंका से त्रस्त रहती है । इस आशंका से हर समय लिपटी रहती है ।

हा-हा ! इसलिये लिहाफ की तलाश में रहती हैं ।

सही बात ! और दूसरा संकेत ये कि हम से मोलतोल करते हुये जब भी फँस जाती हैं तो अपने-आप को विश्व-व्यापी थप्पड़ों से घिरी हुई और विवश दिखाती हैं ।

चाणचक्क निर्वाण ।

यकायक अनुभूति ।

सहसा सार्वजनिक ।

झटपट वैश्विक ।

एकाएक साँझा ।

साधन भी और रिस्क भी ।

पूंजी की कुंजी कुछ इस तरह है । जब दबाव में हो तो बोलो वैश्विक संकट । मण्डी में उठा-पटक । असहाय । बेलगाम होड़ । कपूर की तरह फुर्र ।

एक-एक वरकर को बुला के दोषी , आलसी, सुस्त, और मशीन जितना काबिल न बनने का रोना-धोना, जो आरोपों की शक्ल में होता है , उससे मुक्ति मिल जाती है मैनेजमेन्ट को । लेकिन उनका कब्जा, पकड़, नियन्त्रण भी ढीला पड़ जाता है ।

आत्मविश्वास भी फुर्र ।

ये बहुत सुनने में आता है कि पता नहीं कम्पनी कब फुर्र हो जाये । और ये समझ भी काफी व्यापक है कि कम्पनी किसी की नहीं होती ।

मेरा एक दोस्त है जो उबर-ओला चलाता है । वो अपने कस्टमरों को बहुत समझाने की कोशिश करता है कि गाड़ी उसकी नहीं है , कस्टमर की नहीं है , और कम्पनी की भी नहीं है । गाड़ी उसके नाम पर है । बैंक में गिरवी है । किश्तें हैं । और , कमाई का एक हिस्सा उबर-ओला को जाता है । कम्पनी का आइडिया है और सॉफ्टवेयर है । वो सॉफ्टवेयर दूसरी कम्पनियों के आइडिया और सॉफ्टवेयरों से जुड़ा है । और जैसे हर कम्पनी में होता है, कई कम्पनियों ने इस कम्पनी में पैसा लगाया होगा । और पैसा लगाने वालों ने यह पैसा कर्ज ले कर भी लगाया होगा ।

आजकल चर्चायें सब जगह बैंकों और कम्पनियों के दिवालियेपन पर बहुत चल रही हैं ।

इसलिये मेरा दोस्त बोलता है कि वह स्वयं दबाव का एक बिन्दु है । कम्पनी का उतार-चढाव और सामाजिक उथल-पुथल, दोनों को महसूस करता है ।

उस पर दबाव पड़ रहा है या वह दबाव डालता है?

दोनों ही होगा । उथल-पुथल का दबाव उस पर पड़ता है । और उसका कहना है कि वह अपनी सवारियों को इस सब पर बातचीत में रखता है । उसका कहना है कि माहौल बनाओ तब जा कर दबाव बढता है । यह है दूसरा दबाव ।

हा-हा ! कहा जाता है कि क्रिकेट में विकेट लेने के लिये माहौल बनाना होता है ।

मुझे यह तो समझ आया है कि अपने जीवन से , अपने कार्यों से जो वैश्विक आकार उभरता है उसकी चर्चा में बहुत मजा आता है । दूसरे बहुत जल्दी पकड़ कर अपनी बातें जोड़ लेते हैं ।

यह बात तो सही है । हमारे जीवन का जो वैश्विक पहलू है वह कभी आश्चर्यचकित करता है , कभी जिज्ञासा उत्पन्न करता है । कभी चिन्तन से बाहर की बात लगती है । कभी घबराहट होती है । कभी साफ लगती है । और कभी उत्तेजना लाती है ।

सर्दियों में यहाँ पर पक्षियों का वैश्विक रूप मन मोह लेता है । तैयारी कर लो ।

जरूर ।

हमारा सिस्मोलोजिस्ट

शिकायतें। पी एफ अधिकारी 8 नवम्बर को जाँच के लिये हाई फैशन फैक्ट्री पहुँचे।

13 नवम्बर को फैक्ट्री में उत्पादन हो रहा था। साढे दस बजे पहुँची डायरेक्टर एक टेलर के पास पहुँची और बोली : ''मैं तुम्हारे साथ काम नहीं करना चाहती।''

टेलर : ''मैं तो काम करना चाहता हूँ।''

डायरेक्टर : ''तुम अपनी बकवास बन्द कर। अभी तेरा हिसाब करती हूँ।''

टेलर : ''कर दो।''

डायरेक्टर: ''नहीं, मेरे साथ ऑफिस चलो।''

टेलर : ''आप चलो। मैं आता हूँ।''

डायरेक्टर : ''नहीं। मेरे साथ चल।''

ऑफिस के अन्दर। डायरेक्टर : ''तुम घटिया हो। तुम बदतमीज हो। मुझे तुम से काम नहीं करवाना।''

टेलर : ''आप अपशब्द का प्रयोग क्यों कर रही हो ?''

डायरेक्टर : ''तुम अभी निकल जाओ मेरी कम्पनी से ! ''

टेलर : ''मेरा हिसाब।''

डायरेक्टर: ''पहले रिजाइन लिख कर दे।''

टेलर : ''मैं नौकरी नहीं छोड़ रहा। आप निकाल रही हैं। मैं इस्तीफा नहीं लिखूँगा। आप हिसाब दे दो।''

डायरेक्टर : ''जब तक रिजाइन नहीं दोगे, मैं हिसाब नहीं दूँगी। हिसाब में क्या लोगे ?''

टेलर : '' जो नियम-कानून अनुसार बनता हो। साढे चार साल का हिसाब।''

डायरेक्टर : ''जा नहीं दे रही। लेबर कोर्ट जायेगा ? केस करेगा ? कर दे। मैं तेरी औकात बताउँगी। पी एफ वाले आये थे। कल ई एस आई वाले आयेंगे। लेबर इन्सपैक्टर को बुला ले। तेरे में जो दम है लगा ले। मैं कुछ नहीं दूँगी। मेरे में जो दम है वह मैं लगाती हूँ।''

टेलर : ''मैडम मैं गलत नहीं कर रहा हूँ। आप निकाल रही हैं तो हिसाब माँग रहा हूँ।''

डायरेक्टर : ''फैक्ट्री से निकल जाओ।''

ड्युटी सुबह 9½ बजे से। निकाला गया टेलर साथी मजदूरों से मिलने फैक्ट्री गेट पर पहुँचने लगा। फैक्ट्री में प्रवेश करने से पहले वरकरों में खूब बातचीत। तीसरे दिन डायरेक्टर का पिता कम्पनी का चेयरमैन निकाले टेलर को देख कर : ''तुझे काम नहीं करना क्या ?''

टेलर : ''सर, मैं तो काम के लिये आया हूँ पर मैडम मुझे ड्युटी पर नहीं ले रही।''

फिर दलदल में

4 अक्टूबर को साँय 4 बजे मैनेजमेन्ट ने यूनियन लीडरों को मीटिंग के लिये क्लासिक होटल बुलाया। एजेन्डा : दो साल से पैन्डिंग लाँग टर्म सैटलमेन्ट पर समझौता वार्ता। फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने ओवर टाइम की बात चलाई। शिफ्ट समाप्ति के समय बोले कि आज नहीं, कल से ओवर टाइम होगा। एक शिफ्ट है सुबह 8½ से साँय 5 की। मजदूर चले गये तब फैक्ट्री गेट पर नोटिस : कारखाना की उत्पादन प्रणाली 04.10.2017 से पूर्ण रूप से बन्द कर, कानून अनुसार देय राशि प्रत्येक श्रमिक के बैंक खाते में ट्रान्सफर की जा रही है। फैक्ट्री की बगल से खबर एक मजदूर के पास पहुँची। उसने लीडरों को भेजी। होटल में नेताओं ने फैक्ट्री हैड से पूछा तो वह बोला : ऊपर से आदेश है।

यह बातें 753-754 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित ***नपीनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स*** फैक्ट्री मजदूरों की हैं। कम्पनी की आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 तथा सैक्टर-8, हरिद्वार, खुशखेड़ा, नीमराणा में फैक्ट्रियाँ हैं और शुरुआत 1997 में उद्योग विहार में इस फैक्ट्री से हुई थी।

2010 में भी टेम्परेरी और परमानेन्ट मजदूरों के तालमेलों ने सैक्टर-3 फैक्ट्री में नपीनो मैनेजमेन्ट की नाक में दम किया था। मारुति मानेसर फैक्ट्री मजदूरों की 2011-2012 की हलचलों से घबरा कर नपीनो ऑटो मैनेजमेन्ट ने आई एम टी सैक्टर-3 तथा उद्योग विहार फैक्ट्रियों में यूनियन का पंजीकरण करवाया। रजिस्ट्रेशन के साथ ही मैनेजमेन्ट-यूनियन गठजोड़ ने टेम्परेरी और परमानेन्ट मजदूरों के तालमेलों को तोड़ने के लिये पापड़ बेलने तेज कर दिये। स्त्री और पुरुष टेम्परेरी तथा परमानेन्ट वरकरों द्वारा 2014 में आई एम टी मानेसर सैक्टर-3 फैक्ट्री पर से नपीनो मैनेजमेन्ट का कब्जा हटाया। दो हफ्ते तक स्त्री और पुरुष मजदूर चौबीसों घण्टे फैक्ट्री में स्वतन्त्र रहे। तब यूनियन ने मजदूरों में फूट डालने वाला ऐसा समझौता किया था कि वरकरों से पिटने से बचने के लिये लीडर गाड़ी में भागे थे।

दिसम्बर 2015 में नपीनो ऑटो उद्योग विहार फैक्ट्री से सब पुराने टेम्परेरी वरकर, 80 लोग एक झटके में निकाल दिये गये। फिर आई एम टी सैक्टर-3 फैक्ट्री से मार्च 2016 में सब पुराने टेम्परेरी वरकर, 140 लोग एक झटके में निकाल दिये गये। और इधर 4 अक्टूबर को उद्योग विहार फैक्ट्री से नपीनो मैनेजमेन्ट ने सब परमानेन्ट मजदूर, 147 लोग एक झटके में निकाल दिये हैं।

5 अक्टूबर को ड्युटी समय पर सब मजदूर उद्योग विहार नपीनो फैक्ट्री गेट पर पहुँचे। दो की जगह 5 गार्ड थे और गेट के अन्दर से कुण्डी लगी थी।

कुछ मजदूर : ''अन्दर चलो ! अन्दर चलो !''

यूनियन लीडर : ''कानून अपने हाथ में नहीं लेना। जो कुछ करेंगे कानून के दायरे में करेंगे। हमारी यूनियन सब करेगी।''

5 अक्टूबर से रोज सुबह से साँय तक नपीनो ऑटो वरकर उद्योग विहार फैक्ट्री के गेट के बाहर बैठ रहे हैं। यूनियन ने ''गैरकानूनी तालाबन्दी'' के खिलाफ जगह-जगह पत्र भेजे हैं। गुड़गाँव में श्रम विभाग में तारीखें पड रही हैं। अखबारों में यूनियन के बड़े लीडरों का ब्यान छपवाया है। और, 27 नवम्बर को यूनियन नपीनो मजदूरों को उद्योग विहार से रैली के लिये आई एम टी मानेसर ले गई। रैली के बाद साँय 5 बजे तक नपीनो कम्पनी के हैड ऑफिस, सैक्टर-3 फैक्ट्री गेट पर बैठे। वहाँ लीडरों ने कहा कि 29 नवम्बर को डी सी के यहाँ कम्पनी चेयरमैन और यूनियन लीडरों की मीटिंग है। कम्पनी मान गई तो ठीक है, नहीं तो आन्दोलन तेज करेंगे। गुड़गाँव डी सी 29 नवम्बर को बीमार.....

नपीनो ऑटो मजदूर उद्योग विहार में ही ***ईस्टर्न मेडिकिट*** फैक्ट्रियों के 1100 परमानेन्ट वरकरों के अनुभव से सीख सकते हैं। अचानक 2012 में बाहर किये गये ईस्टर्न मेडिकिट फैक्ट्रियों के मजदूर कानून और यूनियन की दलदल में इतने धँस गये हैं कि अब दिखाई ही नहीं देते। एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामलों को एक हजार फैक्ट्रियों के मजदूरों के मामलों में बदलने की राहें दलदल से बचने और दलदल के पार जाने की राहें हैं।

ललित धुन व्यवहार की

दिल्ली में बी-134 ओखला फेज-1 स्थित ***वीयरवेल फैक्ट्री*** मजदूरों का मैनेजमेन्ट पर दबाव कम्पनी की नोएडा में बड़ी फैक्ट्री बनने के बाद से कम हो गया। दिल्ली सरकार के मन्त्री और श्रम विभाग के झाँसे में आने पर 2016-अन्त में वीयरवेल मजदूरों में से 60 की नौकरी गई और 400 को 16 दिन की तनखा का नुकसान हुआ। दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च 2017 से लागू नया ग्रेड लेने के लिये मजदूरों के कई कदम असफल रहे तब सितम्बर में उन्होंने फैक्ट्री में डायरेक्टर को घेरा। झाडू वाली पार्टी के विधायक ने बाउन्सर भेज कर डायरेक्टर को मुक्त करवाया था। इधर नवम्बर-मध्य में मास्टर ने प्रोडक्शन इन्चार्ज को बताया कि प्रोडक्शन टारगेट पूरा नहीं हो रहा।

वरकरों से इन्चार्ज : ''टारगेट क्यों नहीं निकल रहा ? हमें टारगेट चाहिये।''

मजदूर : ''जिस हिसाब से पैसे हैं उसी हिसाब से काम भी हो रहा है।''

इन्चार्ज : ''मामला कोर्ट में है।''

मजदूर : '' आप कोर्ट से लिखवा कर लाइये कि इतना टारगेट है।''

जो पीस 8 घण्टे में 500-600 निकलते थे वे 300-350 हो गये थे। नोएडा फैक्ट्री से मैनेजर नवम्बर समाप्त होने से पहले दो बार आ चुका है। और, मैनेजर के आने के बाद से 8 घण्टे में 150-200 पीस तैयार।

मैनेजर : ''हम आप से बात करना चाहते हैं।''

मजदूर : ''ठीक है। हमें नया ग्रेड चाहिये।''

मैनेजर : ''जिस दिन कोर्ट से आ जायेगा, हम एरियर के साथ सबसे पहले देंगे।''

मजदूर : '' कोर्ट का स्टे क्या आपकी फैक्ट्री के लिये ही है ? कई कम्पनियों में नया ग्रेड लागू होने का प्रूफ हम दे चुके हैं।''

मैनेजर : ''दो दिन काम करके दिखाओ। फिर हम सोचेंगे। और आपका ओवर टाइम भी हम पहले जैसा लगवायेंगे।''

मजदूर : ''हमें ओवर टाइम नहीं चाहिये। आपकी सिरदर्दी है, लगवाइये चाहे मत लगवाइये। वर्षों से काम कर रहे हैं। आपको अब तक दिखाई नहीं दिया ? अब दो दिन का प्रूफ माँग रहे हैं !''

मैनेजर : ''हम इसके लिये बात करेंगे।''

मजदूर : ''बात करना, नहीं करना आपका टैन्शन है।''

फैक्ट्री चार मंजिल में है। बातचीत के लिये हर फ्लोर से 30-40 वरकर जाते हैं। और, अगले राउण्ड में इन 30-40 को बदल देते हैं। वाशिंग, फिनिशिंग, टेलर, कटिंग : हर डिपार्ट से मजदूर बातचीत में शामिल होते हैं।

किरायेदार और मकान मालिक

बिजवासन में, कापसहेड़ा में मकान मालिकों ने हर कमरे में सब मीटर लगाये हैं। किरायेदारों से बिजली के 9 रुपये प्रति युनिट लेते हैं जबकि रेट 5 रुपये है। हर मकान में एक दुकान और उस पर मकान मालिक एक ठेकेदार रखते हैं। इस दुकान पर गैस 110 रुपये प्रति किलो भरते हैं जबकि बाहर रेट 70 रुपये है। इस दुकान पर चावल 45 रुपये प्रति किलो जबकि बाहर यही चावल 30 रुपये में मिलता है। ऐतराज पर मकान मालिक कमरा खाली करने को कहते हैं, यहाँ रहना है तो सामान यहीं से लेना होगा। हर कमरे की टूटी पर मीटर, महीने के 500 रुपये पानी के !

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

डाक पता :

मजदूर लाइब्रेरी,

ऑटोपिन झुग्गी,

एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

(यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच नाले की बगल में है।)

शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।

आदान–प्रदान बनाम शास्त्रार्थ

प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में होती है।

जो है उसके किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति का हर समय वास्ता रहता है।

जो हैं वे भौतिक रूपों में हो सकती हैं; कौशल स्वरूपों में हो सकती हैं; विचारों के, धारणाओं के रूपों में हो सकती हैं; अथवा इनके अनेक मिश्रणों में हो सकती हैं।

जो हैं उनकी गतियाँ भिन्न हैं। उनमें होते परिवर्तनों की अवधि और गति भिन्न हैं। जो हैं वो (और जो थी तथा जिनके होने की सम्भावनायें हैं वो भी) एक-दूसरे को हर समय प्रभावित करती हैं।

स्पष्ट लगता है कि हम सब का वास्ता अत्यन्त जटिल और प्रत्येक क्षण परिवर्तन की स्थिति में जो हैं उन से रहता है। इसलिये यह भी लगता है कि हर एक के लिये हर समय आंकलन में चूकने की सम्भावना बहुत अधिक रहती है। मेरा-तेरा गलती करना, गलत होना स्वाभाविक लगता है।

ऐसे में हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक लोगों के बीच बातचीतें, चर्चायें सर्वोपरि महत्व की लगती हैं। आज पृथ्वी पर फैले सात अरब मनुष्यों के बीच होते आदान-प्रदानों को बढाना प्रत्येक व्यक्ति के संगत रहने के लिये, अर्थपूर्ण जीवन के लिये एक प्राथमिक आवश्यकता लगती है।

जबकि शास्त्रार्थ में

हर व्यक्ति सामान्य तौर पर स्वयं को सही बताता है।

प्रत्येक अपने शास्त्र को सर्वोपरि कहती है।

शास्त्र की रचना ईश्वर-गॉड-अल्लाह ने की है कहने वाले हैं। अवतार, गॉड के पुत्र, नबी ने ईश्वरीय वाणी को शास्त्र-रूप में मानव प्रजाति को उसकी भलाई के लिये उपहार दिया है कहने वाले हैं।

शास्त्र की रचना महान मार्क्स ने, महान लेनिन ने, महान माओ ने, महान अम्बेडकर ने, महान..... ने की है कहने वाले हैं।

शास्त्रार्थ का सार : मैं-हम सही और तुम-वे गलत।

शास्त्रार्थ का परिणाम सामान्य तौर पर अनुयायी अथवा शत्रु होते हैं। मैं-हम-मेरे-हमारे-अपने-मित्र और वो-अन्य-दूसरे-पराये-शत्रु की रचना-पुष्टि शास्त्रार्थ का चाहा-अनचाहा परिणाम होता है। वर्तमान में आंकलनों पर होता शास्त्रार्थ ही बहुत अधिक कटुता लिये रहता है। विगत के शास्त्रों के आधार पर शास्त्रार्थ.....

शास्त्री बनना है, बने रहना है और शास्त्रार्थ करना है अथवा आदान-प्रदान बढाना है ? इनमें प्रत्येक चुन सकती है, हर एक चुन सकता है।